कुछ सामयिक, कुछ पारंपरिक

आलेख

कनक किशोर

कुछ सामयिक, कुछ पारंपरिक

आलेख

कनक किशोर

श्री नर्मदा प्रकाशन

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ सामयिक, कुछ पारंपरिक

(आलेख)

कनक किशोर

ISBN - 9789334282542
श्री नर्मदा प्रकाशन
प्लॉट नं. 11 त्रिवेणी नगर, लखनऊ (उ.प्र.)
चलभाष - 6391393776
© लेखकाधीन
संस्करण - प्रथम (2025)
मूल्य - रु. 250.00 मात्र
आवरण - गूगल से साभार

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य
पोषक
भाई, बंधु, पुरोधा।

लोक कलाकारन
संस्कृति
रीत, प्रीति पोषक।

गुरु, प्रेमी, निंदक
सादर
सप्रेम समर्पित।

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

एह संकलन में संकलित आलेखन में आजु के बदलत परिवेश में कुछ सामयिक आ कुछ लोक से जुड़ल पारंपरिक विषयन पर बतकही लोक पर नजर रखत कइल गइल बा। चयनित विषयन के भोजपुरिया संस्कृति के आईना से देखे-समझे के प्रयास कइल गइल बा। एगो यात्रा संस्मरण आ रम्य रचनो संकलित बा। संकलित गद्य आलेखन में विविध विषयन पर बतकही रउवा पसंद आई ई हमरा उम्मीद बा। श्री नर्मदा प्रकाशन परिवार, लखनऊ के विशेष आभार कि पुस्तक सुन्दर काया में ससमय हमनी बीच आ गइल।

पाठकीय प्रतिक्रिया के इंतजार रही।

राउरे

कनक किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रमणिका

क्रं.	शीर्षक	पृ.सं.
1.	लोक के राम, मंदिर छोड़ि बाजार में	07
2.	सावन मास पावन आ मनभावन	15
3.	पराई गइलऽ छोड़ि मोहन, दिहलऽ विसराई	21
4.	नैना भरि कजरा, लिलार भरि सेनुरा, मोरा लेखे पिया भइले निरमोहिया	25
5.	चोला में भोला मिलते, शिवमय भइल संसार	32
6.	घिसल कटोरा धान के, करज में मुए किसान	38
7.	इयाद में बसल : पेंच व्याघ्र आरक्ष्य	47
8.	गजबे सवाद नूं फुटेहरी के	53
9.	भोजपुरी साहित्य में देशज आधुनिकता	57
10.	फुसलावे के खेल में सभे अझुराइल	64
11.	हम एह तरह रहीं कि हमरा रहलो के अर्थ रहे	70
12.	किसान के किस्मत में दुख आ भूख	76
13.	खेत, खेती, खेतिहर आ खेतिहर परिवेश के कवितई	79
14.	जिनिगी के छंद में आनंद भरि आइल रामा, चइत महीनवा	84
15.	कवना अँटका में अँटकल बसंत	91

www.bhojpurisahityangan.com

लोक के राम, मंदिर छोड़ि बाजार में

लोग कहेला हरि इच्छा प्रबल। इहो कहेला लोगिन कि सबहीं नचावत राम गोसाई, होइहें वोही जो राम रची राखा। बाकिर जब राम के लोग नचाईं, राम के बाजार ले बइठाई, वोट बैंक बनाई, राम के नाम पर जहर फैलाई, एगो नया बाजार गॉड मार्केट (आगे राम बाजार कहल गइल बा गॉड बाजार के एह आलेख में) बसाई त इहे नू कहाई कि मनई पर से राम के नियंत्रण हट गइल बा आ अब मनई राम के नचाई। रउवा कहब त कहीं कि घोर कलजुग आ गइल बा बाकिर हम ना कहब।हम कहब बाजार जुग आइल बा जहाँ राम के नचावे, सीता के हरण खातिर बाजारवाद रावण के रूप में उपस्थित बा। काल्हु लोक के राम रहन, आजुवो लोक के बाड़ें बाकिर बाजार के धौंस में सत्तो राम के बाजार में खाड़ करे पर आमदा बा त एह समस्या के एगो विस्तृत फलक पर विचार कइल जरूरी बा। एकरा के लोक के सांस्कृतिक सामर्थ्य आ चेतना पर कुठाराघात कइल कहे त कवनो उज्र ना होखे के चाहीं।ई जरूर नजर आवत बा कि देश के बहुसंख्यक वर्ग राम बाजार में झूम रहल बा। जरूरी नइखे कि कवनो विवाद के प्रभाव एक तरह के सब पर होखे। ई जानल बा कि चुभन के एहसास सबके एक जइसन ना होला। संवेदन के स्तर अलग-अलग हो सकेला, एही से चुभन के अभिव्यक्तियों अलग-अलग हो सकेला। बाकिर भारत जइसन सेकुलर आ विविध सांस्कृतिक पोषक देश में कवनो संवेदनशील मामला के चुभन के अनुभूति अलग-अलग होइयो के सामुहिक अभिव्यक्ति खातिर एगो साझा जगह रखे के जरूरत पड़ेला, ऊ साझा जगह बाजारवाद के आँगन में सत्ता के मदद से खड़ा कइल जा रहल राम बाजार में नइखे लउकत। एकरा के गंगा जमुनी संस्कृति आ पहिले से चलल आ रहल मजबूत आ बहुप्रचलित सामाजिक संरचना के तहस-नहस करे के बरियार प्रयास कहल जाई त कुछ गलत ना होखी। हमनी का देश में राजनीति के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति के नाम पर कुछ बोझ ढोवल राष्ट्रीय

www.bhojpurisahityangan.com

कर्तव्य बनल जा रहल बा। संस्कृति आ सभ्यता के नाम पर कुछ रूढ़ियन के बोझ समाज ढ़ोइयो रहल बा। बाकिर राजनीति आ बाजारवाद संस्कृति के कुचलत बोझ सम्हाले के अइसन दायित्व जनता पर संउप देवे अपना राजनीतिक आ व्यापारिक लाभ खातिर त देश बिखर जाई। सामाज में ऊ खाई दू वर्ग आ सामुदाय के बीच आ जाई जे पटले ना पटाई।

बाजार हमनी किहां कवनो नया चीज नइखे। पुराना समय से बाजार के आस्तित्व भारतीय संस्कृति में मौजूद रहल बा। बौद्ध ग्रंथन में एकर जीक्र भरपूर मिलेला। हड़प्पा-मोहनजोदड़ो के खुदाई में एकर प्रमाण मिलेला। बाकिर ओकर स्वरूप पूंजीवाद के बाजार से अलग रहे। बाजार कवनो युरोपीय अविष्कार ना ह। पहिले बाजार के आधार विनिमय रहे, भूमि, श्रम शक्ति, ईश्वर बाजार के अंग ना रहे। आज के पूंजीवाद बाजार के प्रकृति बदल देलस। ओकरा नजर में मनई, श्रम आ ईश्वरो वस्तु बन गइल बा। मुनाफा आ निजी हित छोड़ि ऊ कुछ नइखे देखत। विज्ञापन के बल मनई के भावना के खरीद-विक्री चल रहल बा। सब मूर्त-अमूर्त चीज, धरम आ ब्रम्ह धड़ले से खरीदे-बिकाये लागल। बाजार सत्ता के मुट्ठी में रखले बिया। प्रेम पोषित हमनीं का संस्कृति 'जोग ठगौरी ब्रज ना बिकै हैं' रहे जे आज बाजार के चकाचौंध में भुलात जा रहल बा। गिरीश मिश्र के कहल ह कि 'पहिले जहां अर्थ व्यवस्था समाज में सन्निहित रहे, उहे समाजिक संबंध अर्थ व्यवस्था के अनुचर हो गइल बा। बाजारवाद समाज, धरम आ बाजार के संरचना बदल के रख देले बा'। सामाज में बाजारवाद के बढ़त वर्चस्व देखि के राजेन्द्र यादव आजु से दू दसक पहिले कहलें कि 'बाजार खाली खरीदे-बेचे के जगह ना होके संस्कृति, साम्राज्य, राष्ट्र बनावे तुड़े के विचारधारा आ व्यवस्थो ह जे मनई के उपभोक्ता में बदल के रख देता'। आजु के हाल देख परसाई जी के कहलको इयाद पड़त बा कि 'पूंजीवादी लोकतंत्र और विकास-मार्ग को अपनाने का नतीजा यह होगा कि सारे मूल्यों का विघटन और नाश हो जाएगा और सिर्फ एक जीवन मूल्य हर क्षेत्र में रह जाएगा- धन प्राप्ति'। प्रतिफल एह व्यवस्था के सामने बा - सिद्धांत, नैतिकता, मूल्य,ईमान सब तेजी से गायब हो रहल बा। ई कुल्ही ओहि पूंजीवादी व्यवस्था के देन ह जे देश के राजनीति के गर्दन दबवले स्वतंत्रता के माथ पर आपन फन नागिन जस फैलवले बइठल बा

www.bhojpurisahityangan.com

आ कह रहल बा हिलले त गेले बेटा। बच्चन जी नेहरू के समक्ष एक बेर एगो कविता पढ़ले रहन -

चरित्र-रिक्त शासक/
और संक्रामक सेठों की सड़ांध से भरी/
इस नगरी में मैं जी रहा हूँ/
जी रहा हूं जीवन की व्याकृति/
झूठे नारों और खुशहाल सपनों से लदी/
बैलगाड़ियां वर्षों से/
'जनपथ' पर आ-जा रही हैं...
सिल की तरह गिरी स्वतंत्रता पिचक गया है पूरा देश
आजु ओकरो से भयावह स्थिति हमनी के माथे बा।

बाजारवादी संस्कृति आ हमनी के धार्मिक जड़ता आज राम के बाजार ले आके बइठा देलस। पहिले लाल-पीयर कपड़ा में रामायण, गीता के भगवान के बेचलस बाद में बाजार आ राजनीति के हथियार राम के बना राम संस्कृति पर प्रहार कइलस। बाजार ई नइखे देखत आ ना एकरा से मतलब बा कि देश आ ओकर संस्कृति केने जा रहल बा। ओकरा खाली अपना मुनाफा से मतलब बा। ओकरा का मतलब समाज आ मनई से।जवन समाज 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' वाला रहे ऊ आजु 'स्वहित सरिस धर्म नहिं भाई' में बदलल जा रहल बा। मानवीय संवेदना के तनिको कद्र नइखे रह गइल। राम, कृष्ण, शिव के नाम लोक कल्याण आ मोक्ष खातिर उपयोग कइल जात रहे आजु ऊ वोट बैंक बढ़ावे आ सामग्री के बेचे खातिर उपयोग हो रहल बा। 'बुद्धं शरणं गच्छामि' के स्थान 'अर्थं शरणं गच्छामि' ले लेले बा। राम के नाम पर राम राज्य के सपना कुचले के प्रयास के रूप में राम बाजार बाजारवाद के गोद में बइठि आपन विस्तार तेजी से कर रहल बा देश में। तुझमें राम मुझमें राम के आस्था आ भावना के जगह मुझमें राम, तुझमें अल्लाह, उनमें नानक, ईशा जगह बना रहल बा। 'हम' के संस्कृति वाला देश के 'मैं' के संस्कृति में बाजार बदल रहल बा। नैतिक-अनैतिक के पहचान भुला देलस बाजार। बाजार आ सत्ता धरम, जाति आ संप्रदाय के जाल में मनई के उलझा, मतभेद पैदा कके

www.bhojpurisahityangan.com

आपन रोटी सेंक रहल बा। बाजारवाद के आंगन में पैदा भइल राम बाजार धरम के जामा पहिरा एगो उन्माद पैदा कके परम्परागत मूल्यन के झकझोर के लोक में बइठल राम के छवि के जगह बाजार में बइठल राम से जोड़े के हर संभव प्रयास कर रहल बा। मंदिर मॉल आ सिनेमा हहल हो गइल बा जहां राम के दर्शन पइसा से हो रहल बा।ई व्यवस्था अनेक श्रेणी में लोग के बांट देले बा भगवान के दरबारो में। संत लोगिन सत्ता आ सेठ के पिछलग्गू हो गइल बा। धरम के आड़ में मठ आ बाजार खोलि बाजारवाद के धरम के निर्वहन कर रहल बा संत लोगिन। हाल में एगो बड़ सेठ के घर शादी में सत्ता आ धरम के ठेकेदार के ठुमुकत देखि बाजारवाद के ताकत आ राम बाजार से तालमेल के बूझे खातिर कवनो दोसर प्रमाण के जरूरत ना रह गइल। राम सामाजिक जुड़ाव के प्रतीक हवें ओकरा जगह राम के दुराव के प्रतीक बनावे पर तुलल बा राम बाजार। 'जहां राम कैद बाड़न' ऊ बाजार ह राम बाजार। लोक के परेशानी ना देखि के, लोक संस्कृति में बिखराव ना देखि के बाजारवाद के प्रभाव में लोग राम बाजार में गावत झूमि रहल बा कि 'राजा जी एकरे त रहल ह जरूरत।'

देश में राम बाजार का अभ्युदय देश के आत्मा के मर गइल ह, तेज रोशनी के अन्हार में डूब गइल ह। राम मनई के आंतरिक संसार में बसले, उनुका बाजार के भीड़भाड़ ना भावे। बाकिर आज त बाजार प्रेम, स्वतंत्रता, एकांतो के बाजार के वस्तु बना देलस। राम कथा बेचे में संत-साहित्यकार के होड़ लागल बा। मनुष्य के आंतरिक संसार पर बाहरी चीज, चिन्ह आ बाजार के अइसन कब्जा कबहूं ना रहे। एकरा के लोक के छिन्न-भिन्न कइल, वर्तमान के लूटल आ भविष्य के धूमिल नू कइल कहल जाई। चारों ओरि भौतिक समृद्धि-बौद्धिक खालीपन जुगलबंदी करत बा। बाजारवाद मनई के सहमति-असहमति के विवेक पर पहरा बइठा देले बा। ज्ञान के आसन पर अज्ञान के बइठा देले बा। मनई आ मशीन में अंतर नइखे रह गइल।विवेक शून्यता के स्थिति में कृत्रिम इंटेलिजेंस के इशारा पर मनई नाच रहल बा। शेयर बाजार के उठत-गिरत भाव में फंसिके आपन संस्कृति के पौधा के पानी दिहल भूल गइल बा। सत्ता भीड़मोहनी बात आ लोकप्रियतावाद में वहिके ताली बजाऊ गीता खातिर जुमला गढ़े में लागल बा राम के नाम पर। राम बाजार में मानवीय भूमि पर अर्थ के पेड़ रोपल

www.bhojpurisahityangan.com

जा रहल बा। भारतीय ज्ञान परंपरा के साथे भारतीय संवेदना परंपरा के लमहर इतिहास रहल बा बाकिर बाजारवाद के कारखाना से उड़त धूल-धुआं ओकरा के ढकत जा रहल बा। अंग्रेजी-शिक्षा भारतीय लोकमानस में मनई के सहज पहचान के धुंधला बना देले बा। एही कारण हमनीं के अपना प्रति हीनता-बोध से भर गइल बानीं जा। इहे हाल पछिम से आइल बाजारवाद आर्थिक गुलामी के वेड़ी हमनी के पैर में डाल आपन पहचान भुलावे के ओरि तेजी से ले जा रहल बा। इहे कारण बा कि हमनी का आपन उपलब्धियन के अपने कमजोर समझे लागल बानीं जा जबकि उहे मनुष्यता के असली पहचान ह। डह कमलेश राय के एह सब स्थिति के देख कहलका सटीक बुझाता।

सत्ता खातिर हो रही राजनीति है आज
जाएगा सत्ता जनतंत्र का जाने कहां जहाज ।

राम बाजार के स्थापित करे में लोकतंत्र के चउथा स्तम्भ मीडिया बड़ी मजबूती से बाजारवाद के साथ देले बा।काल्हु तक मीडिया कारपोरेट के साथ रहिके जे सामने रखत रहे ऊ इतिहास के रेकार्ड के रूप में विश्वसनीय दस्तावेज होत रहे। प्रतिरोध के आवाज होत रहे। उहे मीडिया आजु झूठ के आतिशबाजी करत नजर आवत बा। ऊ बिका गइल बा सत्ता आ सेठ के हाथे। मीडिया के लोकरंजक विविधता समाप्त हो गइल बा। लोकगंधी प्राकृतिक खूशबू के जगह लेले बा बाजार के पैदा कइल कृत्रिम रंग जेकरा से राजनीति के पैदा कइल सड़ांध बू मार रहल बा। मीडिया के छल के भाषा दिग्विजयी बा, ओकर आंधी बा जे राम बाजार के मजबूत कर रहल बा। बुझाता छले सत्ता अउर हर व्यवसाय के गंगोत्री हो गइल बा। हमनी के लइकाई से सुनत आवत बानी जा लकड़सुंघवा के बारे में। ऊ कबो-कबो लउकत रहे।अब त ऊ एगो विराट संगठन के रूप ले लेले बा। राहुल बाबा के तीन तरह के जोंक के प्रजाति लउकल बाकिर जब चारू ओरि जैवविविधता खत्म हो रहल बा त गजबे नूं बढ़ल जोंकवन के प्रजाति। मीडिया आ सत्ता आपन असली चेहरा नइखे देखावल चाहत। एही खातिर ऊ झूठ के छल के भाषा के सहारा ले ढके खातिर बाजारवाद आ धरम के आवरण के उपयोग कके झूठ के आभासी सांच में बदल रहल बा। छल के

www.bhojpurisahityangan.com

भाषा बनावे खातिर जोर लगा के झूठ बोले के पड़ेला। जुमला आ सब्जबाग में मनई अइसन भुला गइल बा जइसे मेला में लइका। सबसे भयावह एकर रूप आजु सामने बा कि लोक के ओह सच्चाई से दूर कर देल जात बा जे ऊ भोग रहल। आँखि प्रचारे के सच्चाई माने लागल बा। आपन सांस्कृतिक परम्परा आ मानवीय मूल्यन से दूर कर दे जा रहल बा मनई। एक देने हाथ धरम के नाम बान्हि दिआइल बा आ दूसर देने आर्थिक जंजीर। इहे ह बाजारवाद के पैदा कइल राम बाजार के असली प्रतिफल।इहे बाजारवाद के प्रभाव आ राम बाजार के स्थिति देख कहे के पड़त बा कि

घर-बाहर चहुंओर है, बैठा एक बाजार।
मोल-भाव सब कर रहे, आपस में ही यार॥

मंदिर में टोकन लगे, दर्शन का भी दाम।
बोझ बना अब धर्म है, नाम दान का दाम॥

विकास खड़ा द्वार पर, दीन कहे रह दूर।
खाने को लाले पड़े, तू तो देख हुजूर॥

वन्दे भारत चल पड़ा, बुलेट है तैयार।
ना मेरे यह काम का, है माथे का भार॥

नई-नई कर बोझ से, कमर हमारी टेढ़।
तू घूमते विदेश में, कर बढ़ता नित डेढ़॥

हम किसान के आस को, तोड़ दिया सरकार।
खेत आज धुआं उगले, पेट माथ की भार॥

देख तमाशा समय का, रोता बैठ किशोर।
ना हाथों को काम है, आँखों में है लोर॥

www.bhojpurisahityangan.com

एह के स्वीकारे में तनिको भरम के स्थिति नइखे कि देश जदी 'आधुनिक' आ 'समसामयिक' स्वरूप ना गढ़ित आ ग्रहण करित त देश इक्किसवीं शताब्दी यात्रा में दउड़े के कोशिश ना कर पाइत। बाकिर धर्मनिरपेक्षता के पोषक भारत में राजनीतिक आ व्यवसायिक लाभ खातिर लोक आस्था के प्रतिक राम के बाजार बइठाई के लोकवाद पर प्रहार, संस्कृति आ सभ्यता के नंगा करे के खेल खुलेआम खेलल जाई त ई जन चेतना पर प्रहार कहाई। हमनी का खरहा आ कछुआ चाल में कछुआ चाल के चुने वाला हईं जा, खरहा अइसन दउड़ लगाके हार के गला लगावे वाला ना भाई, लक्ष्य जीत के राख जीत के गला लगावे वाला हईं जा। हमनी के राम मंदिर आ मन मंदिर में भावेलन बाजार में ना। बाजारू संस्कृति के इहंवा जगह बनावे में बड़ी मशक्कत करे के पड़ेला बाकिर जब सत्ता बाजारवाद के गोद बइठ जाई, राजा बाजार के बोल बोली त लोकवाद कराह उठी एह में कहां दू मत बा। अइसना स्थिति में पछिम आ बाजारवाद से आइल अवधारणा आ भारतीय परंपरा से मिलल दार्शनिक अउर सांस्कृतिक परिसंपत्तियन के जांच परख करत ई तय करे के ओरि बढ़े के होखी कि कहाँ से का प्रभाव आ प्रेरणा आ रहल बा? का हमनी का हित में बा आ का बोझ के रूप में? लोक आज बाजार से मुँह मोड़ के ना चल सके बाकिर एकरा खातिर जरूरी बा कि पछिम के बाजारवाद आ पूरब के संस्कृति के औपनिवेशिक संरचना के उघारि के देश आ काल दूनों स्तर पर पुनर्संयोजित करि के एगो नया संस्कृति पोषक संरचना अपनावल देश हित में होखित ना कि लोक आस्था राम के बाजार में घसीटल। नितांत समसामयिकतो खातिर कुछ नैतिक दायित्व होला। बिना ओह दायित्व निर्वहन कइले आधुनिकता के पटरी पर दउड़ल दुर्घटना के कारण हो जाला।एह बात के समझि के बाजारवाद के ओरि डेग बढ़ावल उचित होला ना त 'ना खुदा मिलल, ना विसालेसनम' वाला हाल हो जाला। स्थिति 'ना घर के,ना घाट के' वाला हो जाला। हमनी के पहचान धोती, पगड़ी आ राम ह भाई। धोती उतर चुकल बा, राम बजारे बइठ जइहन त पगड़ी बिना उछलले उछल जाई। राम बाजार लोक बाजार ना ह, राम बाजार आ वोट के वस्तु ना हवें, पछेया धाह मारेला, पुरवे भावेला हमनीं का। बटोहिया के बोलावत रहीं जा जवन देश के देखावे खातिर ओह देश के खोंखड़ कर

www.bhojpurisahityangan.com

रहल बा बाजारवाद आ नवका राम बाजार। समय रहते बाजारवाद के गति रोकि, राजनीति के चाल समझि देश के स्टेयरिंग लोकवाद के ओरि मोड़ के ना ले चलल जाई त राम बाजार में घरी घंट डोलावे आ झाल बजावे के अलावा कवनो काम ना बांची।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

सावन मास पावन आ मनभावन

सावन शिव के मास ह। पूरा लोक शिवमय हो जाला सावन में। चहुंओर बोल-बम, हर-हर महादेव के गूंज वातावरण में गूंजत रहेला। प्रकृति पार्थिव शिव पर जलाभिषेक करे खातिर बारिश के रूप में बरिसत रहेला। सावन चढ़ते हवा आपन रूख बदल देला। धूप आपन ताप प्रभाव कम कर देला। वातावरण में धूल उड़ल बंद हो जाला। सूखल जलाशय पनिया-पनिया हो जाला। धरती के पियास बुझा जाला। चहुंओर हरियरी दिखाई पड़े लागेला। जंगल मनोहारी हो जाला। मोर नाचे लागेला। मनई के मन ई देख कइसे नियंत्रित रहित। सावन आवते झूम उठेला। कहीं कजरी सुनाला त कहीं श्रम गीत रोपनी गीत सुनाला। सावन मनभावन होला किसान के, प्रेमी युगल के भावेला, रचनाकार के भावेला, भगवानो के भावेला तब त निफिकिर हो सावन चढ़ते चिरनिंद्रा में चल जालन। बाकिर सबके ना भावे सावन, कुछ लोगिन के डाहेला। तब त विरहिणी सावन के बैरी सावन कह कोसेलीं सं। गरीबों के ना भावे जब पलानी से चूअत पानी राति में एगो कोनो बाकी ना रखे माथ छुपावे खातिर। एहनिये के दुख देखि महेंद्र शास्त्री जी के लिखकला का इयाद पड़ जाला -

दिन रात टिप-टिप चूए पलानी
घर भर रोगी लागल बा पानी।

अइसना में सावन केहू के कइसे भाई। ओकरो ना भावे जेकर गांव-घर बाढ़ में डूबे के अंदेशा रहेला, दरकत पहाड़ के माथ पर आ बइठे के डर होखेला। दुख-सुख, मिलन-विरह साथे चलेला ई प्रकृति के नियम ह। फेर सावन एकरा से कइसे अलग रहित बाकिर कुल मिलाके सावन मनभावन ह, पावन त हइये ह। जइसे चइत के झकोर केहू ना देल चाहे ओसहीं सावन के फुहार के आनंद केहू ना देल चाहे। सावन के इहे आनंद, कजरी, झूला देख विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' जी के कहे के पड़ल 'झूला झूलत रहीं बुनिया फुहार में, सावन के बहार में ना...'।

www.bhojpurisahityangan.com

कृषि पोषित संस्कृति ह भोजपुरिया समाज :

भोजपुरिया संस्कृति कृषि पोषित संस्कृति ह। खेत, बधार, बाग, बगइचा, ताल-तलैया, पशुधन के अलग कर देला पर भोजपुरी संस्कृति में कुछ ना बांची। ओसहीं सावन के ना रहला पर खेत, बधार... पशुधन कुछ ना बांची। कृषि विधान आ किसान के जान ह सावन। सावन मुरझाइल त कृषि आ किसान मुरझाइल। बरसा ऋतु के शुरुआत सावन में होला। बरसा ऋतु किसान खातिर वरदान ह। किसान के पत्नी पति से कवनो जिद करेले त पति ओकरा के खेतिये के बल पर पूरा करे के बात करेला। 'हमके सावन में झुलनी गढ़ा द पिया ना' के जवाब मिलेला 'धीरज तनी धर ए मोर धनिया अगहन में गढ़ाइब'। अगहन के आस सावन पर टिकल रहेला। महेंद्र शास्त्री जी के एगो कविता में देखीं एह स्थिति के -

खेत कटाता
रास लागी रहे आस, धोखा दे दिहलस अकास
गाछी पर से गीरल मन, एह साल ना भइल अन
धान नइखे करम कुटाता।

किसान एगो संस्कृति के नांव ह। किसान व्यष्टि के ना समिष्ट के नांव ह। लोक आ देश के प्राण ह किसान। सावन चहकेला त किसान महकेला। अगहन के आस जागेला, धरती के पियास बुझाला, देश के भाग जागेला। सावन के खेतन में पसरल हरियरी अगहन में बधार के स्वर्णिम बना देला तब जाके किसान के खरिहाने सोना आवेला। किसान खुशहाल त देश खुशहाल, सभकर तरक्की। किसान 'हम' पढ़ले बा 'मैं' ना, प्रेम पढ़ले बा धृणा ना। भारत किसान के देश ह तब त स्यंदन सुमन के कहनाम बा कि 'खतिये में देशवा के जान बा'। इहो कहाई त कुछ गलत ना होई कि सावन खेती के मुस्कान ह। खेती-किसानी मुस्काई तबे देश मुसकाई। 'जय जवान जय किसान' के देश के किसान के सावन से अलग ना कइल जा सके। एगो नायिका खातिर सावन लखटकिया होला त किसान खातिर अनमोल।

किसान संस्कृति श्रम के पूजा करे वाला ह। सावन के किसान करम में रोपनी-सोहनी के विशेष महत्व होला। सावन में चहुंओर रोपनी

www.bhojpurisahityangan.com

गीत गावत नजर आवेलीं से। रोपनी-सोहनी के गीत खेतिहर मजदूर स्त्रियन के श्रम गीत ह। रोपनी-सोहनी करत घरी ओहनी के सामूहिक रूप से ई गीत गावेलीं स। एह गीतन में पारिवारिक नोंक-झोंक के वड़ा वढ़िया चित्रण देखे के मिलेला। किसान कवि बलभद्र के एगो कविता में एकर बड़ी बढ़िया रूप मरद मेहरारू के बीच नोंक के रूप में रखल गइल बा। ओह कविता में रामकिसुन आ रामकिसुन ब के रोपत घरी के संवाद आ करनी से बढ़िया परितोख नोंक-झोक के कहाँ भेंटाई? - अँटिया बन्हले बाड़ऽ / कि अपना बहिनिया के जूड़ा-सुनते रामकिसुन के अपना मेहरारू देने घुमाके के छपाक दे बिचड़ा के आँटी फेंक छिटिका उछालल उन्हिन के प्रेम के साथे मजूरन के जिनिगी जिये के आ आपन दुख भुलाये के तरीका बता रहल बा हँसी-मजाक के बहाने।

एह श्रम गीतन में प्रिय से बिछुड़ला के पीड़ा देखल जाए - 'ननदी झगरवा कइली, पिया परदेश गइले। किया हो रामा, भउजी रोवेली छतिया फाटेला हो राम।' पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण के बात एह गीतन में खूव आवेला - कहीं बाबा के बाग लगावे के त कहीं राजा के पोखरा खोनावे के। प्रकाश उदय के एगो प्रेम गीत के बेजोड़ नमूना बा - 'आहो आहो, रोपनी के रऊँदल देहिया...', जेकरा में एगो रोपनी कर थाकल आ पारिवारिक बोझ तले दबल मरद- मेहरारू के एक दूसरा से निहोरा करत प्रेम के सुंदर प्रदर्शन कइल गइल बा।

सावन, झुलुआ आ कजरी :

अइसे त सावन के मनभावन महीना में पूरा भारत देशे धूप, बारिश आ बादल के आंख मिचौली के बीच हर तरफ बिखरल हरियाली के आनंद लेला बाकिर भोजपुरिया क्षेत्र में एकर एगो अलगे रंग आ रूप दिखाई पड़ेला। कजरी, श्रम गीत के साथे दूसरो लोकगीतन के गूंज सावन में एगो अलगे मनभावन रूप बनावे में सहायक होला। पूरा महीना एगो त्यौहार के रूप ले लेला। प्रकृति में आ मनई के मन में एगो अलगे उल्लास दिखाई पड़ेला। लइकिन आ नवविवाहिता के पेड़ पर लटकत झूला झुलत कजरी के बोल के साथे आकाश छुए खातिर ऊंच उड़ान लेत दिखाई पड़ेला। सावन के कजरी आ श्रम गीतन में मिलन आ विरह रस के गीतन

www.bhojpurisahityangan.com

के भरमार रहेला। सावन में सुहागिन अपना साजन के साहचर्य चाहेलीं से। सावन का महीना ओहनी के अपना प्रिय के विना अच्छा ना लागे, मन कुहकेला, सेज काटे दउरेला तब त मुंह से फुटेला... 'हमके ना भावे हो सावन विना सजनवा हो ननदी', 'घीरि घीरि आइल बदरिया कारी कारी सखी'। सावन में कजरी के स्वर लहरी गांव में घुसते कान में आपन मधुर उपस्थिति दर्ज कर देला। इयाद पड़ेला सावन में झींसी शुरू होते केकरो कोठा पर, केकरो दलान में, केकरो ओसारा में नारी स्वर में कजरी के मधुर स्वर लहरी गूंज जात रहे। कजरी में वर्णित नारी के प्रेम आ बिरह के गहराई नापे के प्रयास कइल जाला बाकिर ऊ कहाँ संभव हो पावेला। साँच पूछीं त नारी हृदय के रसवंती प्रीत के शाश्वत संवाहिका कजरी ह। छंद आ लय के मिश्रण से सृजित कजरी में बड़ा सम्मोहित करे वाला गेयता रहेला, ऊ जब नारी के कंठ से फुटेला त वातावरण में प्रेममय बिरह उछाल मारे लागेला। झूला गीत, बिरहा, सोहर, ज्यौनार के गीत कजरी के रूप में गावल जाला। कजरी में आज खाली प्रेम आ बिरह नइखे रह गइल, वीर रस, राष्ट्र जागरण के ललकार, जीवन के आंतरिक संघर्ष के कथा, प्राकृतिक वर्णन, बधाई गीत, भजन सब अपना में समाहित कइले बा।सावन आ कजरी के संवंध पर आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी कहत बानीं कि 'जब सावन मक्खन अस चीक्कन, गोर हाथन्ह से इयाद के डाकिया अइसन कजरी के चिट्ठी लेके आवेला आ पतई-पतई के नेह से सहलावे-नहलावे लागेला आ जब फुनुगी-फुनुगी मुसुकाये लागेली सँ तब प्राण के छंद में कजरी उतरि जाले-माटी के सोन्हाई आ लता,बेलि फूलन्ह के गरमाहट लेके। कजरी प्रकृति के हाव हऽश। उहां के एगो कजरी एकर प्रमाण वा।

परे लागल झींसी पचीसी ना भावे सेजरिया के मीत आइल ना।।
उमर उनीसी परल जाले फीसी सेजरिया के मीत आइल ना।
हँसि-हँसि बदरा फुहार गिरावे,
सन्-सन् पवन चले पुलकावे,
भींजल अँखिया जगावे पिरीतिया सेजरिया के मीत आइल ना।।
हरियर पतिया सुमन खिले लाख-लाख
घर विहि चिठिया लिखींले श्रीं ताख-ताख
कँटवा गुलाब के करेजवा के बीन्हें सेजरिया के मीत आइल ना।

www.bhojpurisahityangan.com

आज के भागदौड़ आ बदलत समय में एकर लोप हो रहल बा बाकिर भोजपुरिया क्षेत्र के गाँवन में आजुवो कुछ हद तक ई परंपरा जिंदा लउकत बा।

जीव के शिव बनावे के पावन मास :

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी के कहल ह कि भोजपुरी समाज के आँगन के मन ना जंगल में भटकेला आ ना रेगिस्तान के सपाटा करेला। ओकरा अंदरुनी निसछल भाव के वेग-आवेग आ जिनिगी के हुलास अपना गाँव में, अपना आँगन में व्रतन के गमकउवा तुलसी के विरवा रोपेलाश। चतुर्मास के शुरुआत सावन से होला। चतुर्मास में व्रत के क्रम ना टूटे बाकिर सावन आ कार्तिक महीना ओह में आपन विशेष महत्व खाखेला। सावन में धरती के कण-कण शिव मय हो जाला, मनई के मन शिवे जस बउरा जाला। हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के अनुसार भोजपुरिया क्षेत्र के भौगोलिक चौहद्दी के चहुंओर शिव किरपा के अंजोर आलोकित होत बा। उत्तर में पशुपतिनाथ, दखिन में गुप्तेश्वरनाथ, पूरब में वैद्यनाथ आ पछिम में विश्वनाथ। एहिजा के लोगिन के बेपरवाही आ आध्यात्मिक ऊर्जा शिवे पूजा में मिलेला आ ज्ञान-पिपासा शिवे सानिध्य में मिटेला। दू चार गो बेल-पत्र आ एक लोटा जल से खुश होखे वाला भगवान दोसर के भेंटाई। कर्मयोगी भोजपुरिया के फुरसत कहाँ बा तप करके इष्ट के मनावे के एही से ऊ जीव के शिव बनावे के डोरी बसहा सवार बउरहे के सौंपि देलस आपन आत्म काल्याण खातिर आ भर पावन मास आपन करम करत जीव के शिव बनावे के जुगाड़ में शिव-शिव करत शिवमय हो जाला।

सावन, कजरी का होला बाबूजी ?

आज के पीढ़ी ई सवाल पूछ रहल बा। काहे? ई विचारणीय बा। दोषी अकेले ई पीढ़ी नइखे। दोषी हमनी के बानीं जा कि आज के पीढ़ी के आपन संस्कृति से दूर रखनीं जा। आपन संस्कार ना दे पवनीं जा। लोक से दूर होत बानीं जा। ई हाल रही त सावन ना लोप होखी तबो सावन के संस्कृति लोप हो जाई। सावन अनमोल ह। मनमोहक सावन के मोल एह से समझीं कि –

www.bhojpurisahityangan.com

एगो नायिका कहरहल विया कि -
सावन ना लखटकिया ए सखी, सावन बड़ी अनमोल
हमरा के मंगबू अपना के दिहब, सावन ना सखी देब।

एगो किसान कहत बा कि -
सावन ह अगहन के आस, मन के मिठास
सावन त हवे मधुमास आ सांस के सुहास।

एगो शिव भक्त कहत वा कि -
पावन मास सुहावन बड़ी मनभावन हो शिव
जीव के बनाइब शिव, तोहरे शरणिया हो शिव।

देश के संस्कृति में रचल-बसल बा पावन अउर मनभावन सावन आ जिंदा रखे के वा सावन संस्कृति के लोक में हमनी के।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

पराई गइलऽ छोड़ि मोहन, दिहलऽ बिसराई

लोग प्रेम पावे खातिर पलायन कर जाला ई त सुनले बा आदमी बाकिर पहिले के समय में प्रेम के बीचे राहि में अकेले छोड़ि पराइल प्रेमी के उदाहरण कम दिखाई पड़ेला। आज के जमाना ना रहे कि ब्रेकअप एगो फैसन बन गइल बा। ऊ समय रहे 'प्रेम गली अति सांकरी जामे दो ना समाय।' पलायन दुखद होला चाहे ऊ प्रेमी-प्रेमिका से होखे भा माटी, महतारी आ गांव से होखे। पलायन-विस्थापन के टीस उहे महसूस करेला जे ओकरा के देखले बा। आँखि से लोर आ मन में मरोर ओह मनई के साथ ना छोड़े जे पलायन के मजबूरी में अंकवार लगवले बा कारण चाहे जवन होखे। सब समाज, देश, परदेश एकर शिकार रहल बा। जुग कवनो होखे रूप बदलि के पलायन रहल बा हर जुग में। खानाबदोश जिनिगी, ऋषि मुनि लोगिन के असुर के डरे आश्रम तेयागल, मथुरा-वृंदावन छोड़ि मुरलीधर के द्वारिका गमन, गिरमिटियन के देश छोड़ल, आजुओ रोजी-रोटी के चक्कर में मुंबई, दिल्ली सूरत, काठमांडू गइल का ह पलायने नूं ह। धर्म-अधर्म के जंग, प्राकृतिक आपदा अउर वैराग्य भाव आ दूसरो कारण से अनेक लोगिन आ समाज के आपन गांव आ देश छोड़के कवनो दूसर देश भा जगह जाये पड़ल बा। भगवान श्रीकृष्ण के द्वारिका गमन एही तरह के पलायन रहे। पलायन से जहाँ एक देने मानव दर-ब-दर होला त दूसरा ओरि मनई के एगो नया रास्ता, नया लोग, नया देश आ नया भूमि मिल जाला, नया संस्कृति से जुड़ाव हो जाला।

श्री कृष्ण के पलायन के पौराणिक कथा यदु के पलायन से जुड़ल बा। ययाति के पांच पुत्र रहन-पुरु, यदु, तुर्वस, अनु अउर द्रुहु। ययाति यदु से खिसिया के शाप दे देलन कि तोहरा आ तोहार वंशज के कबो राजपद ना मिली। यदु आ उनुकर वंशज ओह शाप के कारण कबो एक जगह ना

www.bhojpurisahityangan.com

टिकले। ओह लोगिन के पलायन नियति बन गइल आ ओकरा से कवो पिछा ना छुटल। ऊ लोग जहाँ गइले नया नगर बसइले आ अंत में उहो छोड़े के परल। कंस वध के वाद उनुकर ससुर मगधपति जरासंध कृष्ण अउर यदु वंश के नामोनिशान मिटा देवे के ठान लेलन त श्रीकृष्ण मथुरा छोड़ि के अपना खानदान के अठारह कुल के साथ द्वारिका चल गइलन। कहला लोग कि ई दुनिया के पहिला अतना बड़ पलायन रहे। मथुरा छोड़ला के बाद श्री कृष्ण कुछ समय वृंदावन में बितवले गोपियन संग प्रेम आ रासलीला में बाकिर कुल के सुरक्षा खातिर अंत में द्वारिका जा बसले।

श्री कृष्ण के मथुरा-वृंदावन से द्वारिका के पलायन एगो प्रमुख घटना ह जे हिंदू धर्म के पौराणिक कथा में विस्तार से वर्णित बा। ई घटना कृष्ण के जीवन के एगो महत्वपूर्ण मोड़ ह, जहाँ ऊ अपना जन्मभूमि मथुरा आ प्रेमभूमि वृंदावन के छोड़के द्वारिका में जीवन के एगो नया अध्याय के शुरुआत कइले बाड़ें। भगवान कृष्ण के मथुरा-वृंदावन से द्वारिका के पलायन उनुकर जीवन के एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के देखावत बा, जहाँ ऊ अपना कर्तव्य अउर जिम्मेदारी के पूरा करे खातिर अपना प्रेम आ सुख के त्याग देले बाड़न।

प्रेम योग ह तुड़ला से ना टूटे, दूर गइला से कम ना होखे। प्रेमी युगल बीच विछोह के स्थिति में प्रेम आ तड़प अउर बढ़ जाला, मिलन के चाह के अलावा ओकरा बुद्धि में अउर कुछ ना घुसे। गोपियन के कृष्ण से प्रेम नैसर्गिक प्रेम रहे।गोपियन के तड़प देखि के वृंदावन के गाछि-वृक्ष, ताल-तैलया, जमुने ना कण-कण विलखत रहे।उधो के ज्ञान के विस्तार गोपियन के प्रेम गहराई के सामने ठेहुना टेक देलस। कृष्ण के पलायन कवना कारण से भइल से गोपियन के ना रहे कुछ लेवे-देवे के। मिलन के आस के सपना देखावल, ढांढस बन्हवावल गोपियन के तनिको ना भावत रहे। ओहनी के कृष्ण के प्रेम के भुखल रही स, उनुका प्रेम में पागल रही स आ ओहनी के हिया के एके मांग आ कहनाम रहे -

हरि जी! तन सुने ना बात,
मन रंगल बा रउवे रंग में, जग लागे जंजाल
दहकत हिया प्रेम अग्नि से, कइसन हऽ ई जाल
कतनो धीरज मनवा धरावे, तन सुने ना बात
आईं लौटके वृंदावन हरि, रहे न तनिक मलाल।

www.bhojpurisahityangan.com

कृष्ण प्रेम में दहकत गोपियन के हृदय निर्मोही कृष्ण से आपन स्थिति के खोल के निवेदन करत बा -

हरि जी! अब त सुनीं पुकार
आस-पास, लुका-छुपी, कबले चली सरकार
मिलन के तड़पत जीव के, अब त सुनीं पुकार
हे माधव आवऽ वृंदावन, धीरज ना हमरे पास
आईं मिलीं पुराईं आस अब सपना करीं सकार।

प्रेम रोग में मातल गोपियन के के दरद ओहनी के शव्द में देखीं -

हरि जी ! रउवा अब समझाईं,
नयन प्रेम में मातल रउवा, देख राउर सुघराई
मन बेचैन सुध-बुध भुलइनीं, खुद गइनीं बिसराई
लागल आगि बढ़त बा जाते, जतने चाहीं दबावल
ना संभली ई प्रेम रोग ह, रउवा अब समझाईं।

विरह में जरत गोपियन के उधो जी समझावे के कोशिश कइले त उल्टे उन्हुके के समझावत गोपी कहलीं स -

उधो जी! देखीं आँखि उठा के,
मन के कोना-कोना तरसे, तरसे नयन हमार
गतर-गतर बेचौन हरि बिनु, उन्हुके बा इंतजार
सांस के डोर हरि हाथे बा, ना मोरा कुछ हाथ
देखीं आँखि उठा के हमके, सून पड़ल संसार।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के 'गोपी गीत' में गोपियन के विरह आ प्रेम के बड़ी सुंदर आ विस्तार से वर्णन बा। डह हरेराम पाठक 'गोपी गीत' के भोजपुरी के भ्रमर गीत के संज्ञा देले बाड़े। गोपी गीत में वर्णित कुछ गीत के बानगी देखीं -

उद्धव से उलाहना देत गोपियन कहत बाड़ी स -

www.bhojpurisahityangan.com

ऊधो ! ई कइसन बुद्धिमानी ?
अंग-अंग बिनु श्याम अपाहिज , ना तनिको उत्साहे
आसमान तजि घेरा अंदर , चिरई रहल ना चाहे
जे ना नाचल मोहन साथे , का मोहन के जानी॥

एहिजा 'मोहन'शब्द में व्याप्त व्यंजना के समझल जा सकत बा। जे मन के मोह लेले होखे ऊ मोहन के गोपियन से अधिका भला के जान सकेला?

गोपियन के प्रेम देखीं जे समुंदर के अतल गहराई से कृष्ण के खोज निकाले के संकल्प आ दम-खम रखत बाड़ी स -

अतल समुंदर से निकाल के , ऊपर मोहन लाइब
भइल भयावह वृंदावन के मनहर रूप बनाईब॥

कृष्ण के द्वारिका गमन के बाद गोपियन के मिलन के चाह पूरा ना भइल। गोपियन के कृष्ण के वियोग के गहिरा दुख भइल तवहूं कृष्ण के इयाद में जिनिगी काट देलीं स आ अपना प्रेम के अमर कर गइली स। अपना अमर प्रेम खातिर कह देलीं स -

पराई गइलऽ छोड़ि मोहन , दिहल हमके बिसराई
इयाद तोहार बसाई हृदय में , प्रेम के दियरी जराइब।

वृंदावन के गलियन, निधि वन में आजुओ मुरलीधर मोहन के बांसुरी के धुन आ नृत्य करत गोपियन के पायल के गूंज गोपी-कृष्ण के अमर प्रेम के साक्षी बा।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

नैना भरि कजरा, लिलार भरि सेनुरा, मोरा लेखे पिया भइले निरमोहिया

सब सिंगार पिया पर होला आ सब सिंगार पिया खातिर होला। सुहागिन खातिर पिया के मुंह फेरलका मउअत से बढ़के होला। देहिया के सिंगार पिया के लुभावे खातिर होला।काजर, सेनुर, लाली, टिकुली पिया के भावेला बाकिर सुहाग अमर ना रह पावे, निरमोहिया भाग पराला बीच मझधार में छोड़ि। काजरो आ सेनुर लेले जाला, आँखिन में लोर छोड़ि जाला, सात जन्म के बतिया भुला जाला। गुरुजी ठीके कहींना 'देहिया के नेहिया धरल रह जाई/ बनिहऽ बियाहुत तूहूं राम रघुराई/ माटी के देहिया माटी में मिल जाई/राम सुनर दुल्हा संग कबो ना छोड़ाई।' बाकिर देह के नेह में फंसल मनई के गुरुजी के बात ऐतना आसानी से कहां बुझाई। काजर, सेनुर आ गदराइल देहिये में, माया में अझुराइल मन चाम में चान देखे में, जगत के अमर बनावे में बाझल रहेला। सुनरी-मुनरी के खेल में उझराइल रहत मन गुरुजी के बाति एक कान से सुन दूसरा से निकाल देला। गुरुजी कहां माने वाला रहन। ऊ जानत रहन कि लइका ना माने त डेरावल जाला, पुचकारल जाला। एगो कथा सुनावत बीच में कहले -

काजर लाली अमर होई जाई रे भाई राम संगे करते सगाई
प्रेम तोहार अमर होई जाई जब तोर दुल्हा बनिहें कन्हाई
देह में भुलइबऽ ससुरो नसाई, नइहर माया जाल बिछवाई
बनबऽ विदेह हरि से बियहते, आन जान चउरासी छूट जाई।

ई कथा-उपदेश पधेया जी के बड़का दुआर पर चलत रहे। ओह घरी आजु लेखा कथा बैपार ना बनल रहे। कथावाचक ताम-झाम से दूर सदाचरण आ संत के प्रतिरूप रहत रहे। आज के कथावाचक माया से दूर रहे के ज्ञान बांट रहल बाड़े आ खुद विशाल मायानगरी खड़ा कर रहल बाड़े। राम नामी चादर के भीतर राम नाम छोड़ सब रहते बा। गुरुजी हर

www.bhojpurisahityangan.com

साल एक वेर गांव में चल आवत रहन। रोज सांझि के सत्संग आरती के नियम रहे। गुरुजी कवीर पंथी रहीं, निरगुन राम के दास गरीब दास। गांव आवे के उदेस दूइये गो रहत रहे – ज्ञान बांटल आ मठ खातिर वार्षिक अनाज आ कुछ राशि ले गइल। मठ के चलावे के इहे दक्षिणा सहारा रहे। व्यक्तिगत संपत्ति के नाम पर कमंडल, खड़ाऊं, गमछा आ एक जोड़ी धोती। सत्संग खातिर तीने गो जगह रहे केकरो बड़ दुआर, कवनो बड़-पीपर के छांव भा मठिया के आँगन। संत बाहरी आडंबर से दूर अन्दर से जागल रहेला, गुरु आ ईश्वर में भेद ना करे, देल जानेला लेल ना। गरीव दास एह सव गुण से भरल रहीं। एक दिन सत्संग में चरचा करत कहले कि संत लोगिन के भगवत प्रेम के सवसे प्यारा प्रतीक दाम्पत्य भाव के प्रेम जान पड़ेला। मीरा बाई के भक्ति ओही कोटि के रहे। दाम्पत्य भाव के प्रति संतन के दृष्टिकोण बहुत हद तक सूफियन के जइसन रहे आ सूफी लोग अपना प्रेम के 'इश्क हकीकी' के नाम देले रहे। संत लोग के दृष्टि में एक मात्र पुरुष परमात्मा रहले। दादू दयाल कहले बाड़ें कि –

पुरिष हमारा एक है, हम नारी बहु अंग।
जे के जैसी ताहियों, षेलै तिसही रंग॥

एह संबंध में कवीर साहब के कथन बा –

दुलहिनी गावहु मंगलचार,
हम घरि आये हो राजाराम भरतार।
तन रत करि मैं मन रत करिहूं पंच तत्व बराती।
रामदेव मोरै पाहुने आये, मैं जीवन मैं माती॥
सरीर सरोवर वेदी करिहूं, ब्रम्ह वेद उच्चार।
रामदेव संगि भांवरि लैहूं, धनि-धनि भाग हमार॥
सुर तेतीसूं कौतिग आये, मुनिवर सहस अठयासी।
कहै कबीर हम व्याहि चले हैं, पुरिष एक अविनाशी॥

गुरु जी कहनीं कवीर अतने पर ना रूकले ऊ हरि जोरे सेज सजावे के लालसो रखलें –

www.bhojpurisahityangan.com

'हरि मोरा पीव मैं हरि की बहुरिया।'
भा
'ये अखिया अलसानी हो, पिये सेज चलो'

आगे कहले रूपकला जी अपना बलमुआँ से अरज सुनवात कहले बानीं -

सब जग आस तजि आयहूँ सरन बीच,
सरस सुभाव सुनि तोर रे बलमुआँ।
मोहि लगि कहवाँ भुलाय दीन्हों ताहि कहँ,
करि लीन्हों हियरा कठोर रे बलमुआँ॥
तलफत रहत नयन छवि देखे बिनु,
अँसुवाँ झरत अति जोर रे बलमुआँ॥
विरह वेयाधि बस तन जरजर भयो,
चैन न परत कभूँ थोर रे बलमुआँ॥
तदपि न रँचहुँ आवत हिय दया तोहि,
अचरज लागत अथोर रे बलमुआँ॥

चरचा के आगे बढ़ावत कहले कि सारण जिला में अमनौर-स्थित सखी सम्प्रदाय के दूगो भोजपुरिया संत कवि कामता सखी आ लक्ष्मी सखी त अपना के औरत आ ईश्वर के पति मानके अपना रचनन में ब्रह्म से संभोग तक के कल्पना कइले बाड़न। रामाजी के मधुरोपासना एही परम्परा में बडुए। एगो सोहर में उहाँ के लिखने बानी-

सूतल रहनी पलंगिया सपन एक देखीले ए ललना।
हरियर पान के टुंडर अंगन कोई लावेला।
सूतल रहनी पलगिया सपन एक देखीले ए तलना।
हरियर बांस के कोंपड़ अंगन कोई लावेला।
सूतल रहनी पलंगिया सपन एक देखीले ए ललना।
कोरी नदिया में दहियवा जोरन कोई लावेला।

www.bhojpurisahityangan.com

गुरु जी कहनीं संत के काम ह राह देखावल चले के ओह राहि पर तोहरे लोगिन के बा।हम आपन बात नइखीं करत बाकिर संत परंपरा के बात आ ज्ञान तोहरा लोगिन के सामने रखनीं ह। हम चाहब कि तू लोग देह प्रेम में पड़ी चउरासी के चक्कर छोड़ि अपना प्रेम के जालि में हरि के फंसावऽ। पति-पत्नी दू बदन होतो एक होला। नश्वर के प्रेम छोड़ि अनश्वर ईश्वर के बनि ईश्वर से एकाकार हो जा। नन्दू चा के मन कुलबुलात रहे, गुरुजी के कहते केकरो मन में कवनो सवाल होखे त पूछ ल लोग, कहले बात त सही बा गुरुजी बाकिर मीरा, तुलसी बाई, कमला, अक्का महादेवी, अन्दल, पद्मावती के ईश्वर प्रेम में मिलल सामाजिक प्रताड़ना पर का कहब। गुरुजी कहले कि कुछ पावे खातिर कुछ खोवे के पड़ेला ई प्रकृति के नियम ह बाकिर ऊ लोग के ईश्वर प्रेम में का मिलल ऊ तूहूं जानेलऽ, जेकरा पावे के बाद कुछ पावे के ना रह जाला ऊ मिलल ओह लोगिन के। नन्दू चा इलाका के नामी रामायणिया रहन। राम के कथा जानत-गावत रहन बाकिर राम नाम के महीमा आ मरम ना बूझत रहन। कहले ई बताईं गुरुजी राम के पावे के त दस गो उपाय बा रउवा प्रेम पाठ पढ़ावे पर काहे पड़ल बानीं। गुरुजी कहले जइसन देवता ओइसन चढ़ावा, जइसन चेला ओइसन मंत्र, जिनिगी देह के नेह में भुलाइल रहलऽ लोगिन, प्रेम सबके भावेला, देहे से जुड़ि के प्रेम के अनुभव तोहरा लोगिन के बा खाली नश्वर प्रेमी के जगह अनश्वर प्रेमी के रखे में ढेर मेहनत ना करे के पड़ी। ऊ स्वामी तोहरा काजर, लाली, गजरा, छप्पन भोग पर ना मोहित होखस खाली भाव के भूखा हवें। हरे लागे ना फिटकरी आ प्रेम रंग चोखा। भोजपुरिया हवऽ सुनले बाड़ नू 'भल होइहें पिया त लुगरियो पर लोभइहें।' भगवान से भल तोहरा कहां भेंटाई।

नन्दू चा कहले मन के मइल छंटत बा तबहूं अभी कुछ संशय मूढ़ मनई में रह गइल बा एगो-दूगो अउर सवाल मन मथत बा गुरुजी। गुरुजी जिनिगी भर रामायण गइनीं राम ना भेंटइले। हमरा गांवे एगो बरियार कवि जी बाड़े उहो राम जोरे कोहवर रचावल चाहत बाड़े अगवा रउरे भीरी बइठल बाड़े चौधरी जी। देखीं उनुको चाह -

राम विराजत हिया में मोरा
हम त सिया सुकुवारी
हाथ में लेके हम वरमाला

www.bhojpurisahityangan.com

राम-राम पुकारी
मिलन के राति
आँखिन बा खोजत
शुभ कोहबर।

तरसत नयन मिलन के सखी
रचिके मेंहदी हाथे
नीक न लागे जग के ठिठोली
ना जग जाई साथे
ठिठकीं जनि अब
आईं राम दुलारे
शुभ कोहबर।

सेज सजाई बइठल सेज पर
सुनर सिया सुकुवारी
आईं हटाईं घूंघट सिया के
पकड़ीं भरि अँकवारी
महकी प्रेम रस
सिया उर अँगना
शुभ कोहबर।

सिया राम मिली एक हो जाई
भागि पराई जुदाई
कनक भवन गुलजार होई
हिया में बसी खुदाई
जग जरि जाई
देखि मिलन के
शुभ कोहबर।

(कनक किशोर)

सुनले बाड़ऽ नू कबीर बानी -

www.bhojpurisahityangan.com

राम नाम सब कोई बखानै।
राम नाम का मरम न जानै॥

❖ ❖ ❖

कबीर हरि सबकूं भजै, हरि कूं भजै न कोई।
जब लग आस सरीर की, तब लग दास न होई॥

रामायण गावऽ भा शुभ कोहबर जगावे के सोचऽ जबले राम नाम के मरम ना बूझबऽ आ देह से नेह ना छोड़बऽ राम पिया संबन्ध ना जोड़िहें। बहुत कहनीं अब अपना में डूबि के विचारऽ। अंत में तबहूं कहब कि -

बाबा के चाहत राम जस दुल्हा
धिया तूहूँ सिया सुकुवार
माई कहे बेटी रखिह इज्जतिया
दूनो कुल दिह तूहूँ तार
बाति के मरम बूझि
ससुरे तोहार घर
नईहर के दिन चार।

नईहर छूटी जानल बा बतिया
राम बनिहें दुल्हा तोहार
रोअल धोअल काम ना आई
दुअरा प आइल कहार
जग ई नईहर
ससुरा हरि घर
नईहर के दिन चार।

www.bhojpurisahityangan.com

जनि बटोर अन्न धन सोनवा
माहुर ई संसार
राम संग नाता जोड़ि धिया तू
हो जाई बेड़ा पार
सांचहूँ धिया मोरि
राम तोहार बर
नईहर के दिन चार।

(कनक किशोर)

राउर बाति सुनके ज्ञान चक्षु खुल गइल बाबा बाकिर राम संगे गंठजोड़ के कराई? हमनीं के बस में रहित त अवले अइसे भटकतीं जा कवि आ रामायणी बनिके। रउवे उपाय राम गंठजोड़ के बताईं। गुरुजी कहनी हम ना भिनक बाबा के बतिया सुनिके समझऽ –

आगि लागे बनवा, जरे परबतवा,
मोरे लेखे हो साजन जरे नइहरवा।
आवऽ आवऽ बभना, बइठु मोरा अँगना,
साचि देहु ना मोरे गुरु के आवनवा।
जिन्हि सोचिहें मोरा गुरु के अवनवा,
तिन्हें देबों ना साजन ग्यान के जतनवा।
नैना भरि कजरा, लिलार भरि सेनुरा,
मोरा लेखे सतगुरु भइले निरमोहिया।
सिरी भिनक राम स्वामी गावले निरगुनवा,
धाई धरबों हो साधु लोग के सरनवा।

नन्दू चा आ चौधरी जी गुरुजी के पांव ध लेले आ कहले कि हमनीं के कहां पाइब जा संत रउवे नाम दान दे राम पिया से गठजोड़ कराईं कि 'नैना भरी कजरा, लिलार भरी सेनुरा, निरमोही पिया के लुभाई सुहाग रतिया।' गुरुजी कान्हि लगा कान में कुछ कहले। हम ऊ ना बताइब आपन मरद के नाम ना लेल जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

चोला में भोला मिलते, शिवमय भइल संसार

केहू सावन में त केहू शिरात में, केहू देवघर में त केहू काशी में, केहू भांगि-गांजा में त केहू वेलि के पात में, केहू भजन-आरती में त केहू उपवास में, केहू भोला के बरात में त केहू अपने जिरात में, केहू सावन में त केहू बारहो मास सोझ भोला के खोजे में अझुराइल बा। आपन शिव मंदिर बा गांव में बाकिर बाबा के आजुले शिवाला पर जात ना देखनीं। अइसन ना कि उहां के नास्तिक रहीं। रोज नहा के अंगना में माटी के शिवजी पर एक लोटा जल देल उहां के नियम रहे। शिवजी के केतना नजदीक रहीं कि दूर एकर ज्ञान ओह घरी ना रहे हमरा। बाकिर उनकर भोरहरिया गावल भजनिया हमरा आजुवो इयाद आवेला आ अब जाके ओकर मरम बुझाइल ह। भजनिया कुछ अइसे रहे –

हम ना जाइब बनारस काशी, ना करब उपवासि
ना जानीं हम धरम-करम, ना जाइब हम कैलाशि
आवे के पड़ी तोहरे शिवजी हम भक्तन के पास

मनई के मन में बिसवास होखी त शिव के त आवहीं के पड़ी। भोला भाव के भूखल हवें। जहाँ भाव लउकेला ओहिजा हाजिर। जइसे हमनीं का भोला के खोज में मारल फिरिला जा ओसहीं भोलो कैलाश छोड़ि भाव के खोज में घूमत रहींला। ई त हमनीं के अज्ञानता ह कि कुछ दे के भोला के मनावें के फेर में रहींला जा। अपने ना बुझाय त दोसरो से पूछ लिना जा कि 'का देके शिव के मनाई हो शिव मानत नाही।' अरे भाई तोहार बा का कि तू शिव के देबऽ? जे खुद अन्हार घर में राह खोजत बा ऊ का तोहरा के अन्हार घर से निकले के राह देखाई। सब शिवे के ह भाई जेकरा के तू जीव के वना देलऽ। देवे के अधिकार अपना चीज पर होला। ई हाल रही त जिनिगी भर लोले बनल रहबऽ भोला ना भेटइहें। गुरु गीता

www.bhojpurisahityangan.com

पढ़ऽ भोला से मिले के होखे त ई एह से कहत बानीं कि भोला ओह में राह देखवले बाड़ें अन्हार घर से निकले के, प्रकाशमय होखे के। संत आ शिव में अंतर ना होखे। संत शिव के रूप ह। संतो लोगिन उहे उपाय भोला से मिले के बतावले जे भोला खुद अपना मुंह से बतवले बाड़ें। सत्य शिव होला, शिव सुंदर होला। सत्य पथ के पथिक बनला पर मन सुंदर हो जाला तब जाके शिव के वास मन में हो जाला, आंतरिक शिव जागृत हो जाले, देहिया शिवाला हो जाला। शिव के अस्मसान भावेला, भभूत भावेला,जगत ना भावे। मन में शिव बस जाले त देहिया अस्मसान बनि जाला, देह आ जगत जरि भभूत हो जाला आ संसार शिवमय हो जाला। तन आ जगत के कण-कण में शिव-शिव गूंजत रहेला।

बाबा के निर्गुनिया भाव, गुरु गीता के ज्ञान आ संत के सत्संग के असर रहे हमरो पर। लोला जरूर रही बाकिर भोला से मिले के मन में आसरा लागल रहे। भौतिक ज्ञान के पंडित भीतर से कहलस अपना बल पर शिव के पाले बबुओ। जग में भुलाइल हमहूं भोला से कह बइठनीं -

भोला खोलऽ ना केवड़िया
बहरे खाड़ि बानीं हम
बाहर पसरल घोर अन्हरिया
कदम-कदम पर चोर
जग में फैलल माया मोह बा
उठत बा सगरी शोर
शिवजी सुनीं ना विनितिया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

सावन-भादो हम ना जानीं
सुनलऽ औघड़ दानी
मन मंदिर हमोर शिवाला
अतना हमहूं जानीं
हम ना जाइब कैलाशे खोजे
छोड़ीं अब मनमानी
शंकर फेरीं जनि नजरिया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

www.bhojpurisahityangan.com

दीन हीन हम धन से बानीं
मन के दौलतमंद
भाव भरल संग लोटा पानी
दुअरा खाड़ि अकलमंद
बाहर घूमनीं आजु ले झूठे
गुरु कहस मतिमंद
शम्भू राखीं ना शरनिया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

ना मानब त प्राण तेयागब
आजु राउर दुअरिआ
ना घूमब हम जगह जगह
बसब राउर नगरिया
रउरे संग दिन रात गुजारब
गाइब रउरे गीतिया
भोला खोलऽ ना केवड़िया
बहरे खाड़ि बानीं हम।

भोला का केवाड़ी खोलिहें बसहो मुड़ी ना डोलवलस। थाकि-हारि के मंदिर के घंटी डोला के लौट गइनीं। भोला शब्द के ना भाव के भूखा हवें। सपना देखल आ सपना पूरा होखे में बहुत अंतर होला। सपना पूरा होला कवनो सही मार्गदर्शक के देखरेख में करम कइला आ मेहनत कइला से। हमनीं के मनई त मुंगेरीलाल के भाई हईं जा दिनों में के कहे हर घरी सपने देखत रहनीं जा। सपना देखे में कवनो पइसा लागेला? सोना बने के शौक रखींना जा, सोना जस चमके के मन करेला बाकिर पारस के संसर्ग से दूर रहके, बिना आंवा में तपले। ओकरे नतीजा ह बबुओ की भोला दूर रह जालन आ लोला बन जिनिगी भर झोला ढोवत फिरेला आदमी तबहूं झोला ना भरे। हँ ओह झोला में कर्म के गठरिया के रखी चउरासी के चक्कर के यात्रा में आगे वढ़ि जाला मनई।

जमशेदपुर में सत्संग रहे। व्यासपीठ पर संत विराजमान आ सत्संग चलत रहे। जीव के शिव बनावे, सोहम् भाव जगावे, गुरु गीता के

www.bhojpurisahityangan.com

पाठ पढ़े-समझे के बात चलत रहे। सत्य के पावे खातिर सत्संग आ गुरु के महीमा के बखान होत रहे। सब कथा सुनावत महाराज जी कहनी तुलसी बाबा के कहलका इयाद नइखे पड़त 'गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई, जौ बिरंची शंकर सम होई।' सुनि के हमरा दिमाग में भिनक बावा के बतिया कौंध गइल -

आगि लागे बनवा, जरे परबतवा,
मोरे लेखे हो साजन जरे नइहरवा।
आवऽ आवऽ बभना,
बइठु मोरा अँगना, साचि देहु ना मोरे गुरु के आवनवा।
जिन्हि सोचिहें मोरा गुरु के अवनवा,
तिन्हें देबों ना साजन ग्यान के जतनवा।
नैना भरि कजरा, लिलार भरि सेनुरा,
मोरा लेखे सतगुरु भइले निरमोहिया।
सिरी भिनक राम स्वामी गावले निरगुनवा,
धाई धरबों हो साधु लोग के सरनवा।

सत्य, शिव, सद्‌गुरु में भुलाइल मन जगत बिसारे के तइयारे ना होत रहे। सत्संग में बगले में तिवारी बाबा बइठल रहले हमरा के दुविधा में पड़ल देखि के कहले जगत बैवहार जनि छोड़ब बाकिर सद्‌गुरु के शरण जाईं बड़ी भाग से एह दरबार में आइल बानीं। संत आ सरकार के दर्शन भाग से होला। तिवारी जी पुरान सत्संगी हईं सत्य आ जगत के मरम बूझींला एगो भिनक बाबा के भजन सुना देले सांझी खा जगत के सार समझावे खातिर-

केऊ ना जाई संग साथी बन्दे! केऊ॥
जइसे सती हँसकर बन्दे, ऊ काया जल जाती
दिन चार राम केऊ भजिले, बान्ह का ले जइबऽ गाँठी
भाई-भतीजा हिलमिल के बइठे, ओही बेटा ओही नाती
अंतकाल के काम ना अइहें, समुझि समुझि फाटी छाती
जम्हु राजा के पेआदा जब अइले आइ रोके घँट छाती
प्राण निकल बाहर हो गइले, तन मिल गइले माँटी,
खाइल पीअल भोग-बिलासल, ई न जात संग साथी,
सिरी भिनक राम दया सतगुरु के, सतगुरु कइले साँची॥

www.bhojpurisahityangan.com

दिमाग के घड़ी उल्टा घूमे लागल। बावा के बतिया इयाद आवे लागल कहत रहन देह मिलल बा त जगत कर्म करे के बा ओहि में फंसे के नइखे। जगत एहिजे रह जाला, सत्य शिव ह साथ ना छोड़े, उहे साथे जाला,ओकरे बनि के रहे के बा। शिवे सत्य ह ओकरे बनिके रहिहऽ। मेहरारू शिव समर्पित व्यक्तित्व हई। हम जगत आ शिव के बीच फंसल मनई रहीं। पारिवारिक संस्कार आ सत्संग भीतर से शिव से जुड़े खातिर जोर मारत रहे। कल्याण खातिर कवनो दोसर राह ना मिलत दिखाई पड़ल सवरे नाम दान महाराज जी से ले लेनीं। शिव के बन गइनीं। सोहम् के गूंज भीतर गूंजत रहत रहे। विना प्रयास समाधी के सुख महसूस होखे लागत।जगत शिवमय बुझाये लागल। बुझा गइल कि -

गुरु समान दाता नहीं, याचक शीष समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्ही दान॥

सांच से जुड़ कांच पकठा हो जाला। सदगुरु से जुड़ शिष्य शिव से जुड़ जाला। सब भरम मिट जाला।दरिया साहब के अनुभव आपन अनुभव बन जाला। मन मलीन होखे के डर भाग जाला -

पहिले सांच तब होय उजियारा।
सांचे शब्द जरे जग सारा॥
सांच समुद्र सदा भरिपूरा।
ऐसो सांच संत होय शूरा॥
कहे 'दरिया' होय सांच सफाई।
कवन मलीन करे तोहे भाई॥

जगत जरते शिव बांच जाला आ संसार शिवमय हो जाला। लोला भोला हो जाला। कवनो केवाड़ी खोलवावे के जरूरत ना रह जाला। आजुले एह जगत में त सतभतरी बनल एने-ओने मारल फिरत जिनिगी कटत रहे, अब जब गुरु जी मन के पगहा एगो के हाथे धरा देलन तब ओहि शिव के अलावा सपनो में दोसरा के देखल पाप ह।दरियो साहब कहले बाड़ें -

ई जग वेश्या बहुत भतारी।
एक भक्ति करूं तन मन वारी॥

www.bhojpurisahityangan.com

जब तन मन शिव में रम जाला। प्रेम के दीपक से ज्ञान प्रकाशित हो जाला। कहल बा 'ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणो'। सब कर्म फल ज्ञान के आगि में जरि के नष्ट हो जाता। आत्म प्रकाश पसरि जाला।दरियो साहब कहले बाड़ें -

एके ब्रम्ह सकल घट वासी।
वेद कितेव आ ज्ञान प्रकाशी॥
धेनु अनेक रंग जग जानी।
क्षीर सेतु एक रंग बखानी॥
जो कोई सुने अचम्भो करई।
बून्द एक सभ में वा फरई॥

सदगुरु के सानिध्ये में शिव भेंटइहें, मन एक रंगा हो जाई, जगत शिवमय हो जाई। जगत में भुलाइल रहला पर त जिनिगी भर दरिया साहब के गीत गावत रहे के पड़ी रे भाई -

सोना लावन हे सखी, पिया गए परदेश।
सोना मिला न पिउ मिले, रूपा हो गए केश।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

घिसल कटोरा धान के,
करज में मुए किसान

आज जब देश के परिदृश्य तेजी से बदल रहल बा, गाँव पछेया बयार, बाजारवाद आ भूमंडलीकरण के चपेट में ग्लोबल गाँव के रूप ले रहल बा तब सवाल उठत बा कि किसान आ किसानी पर बतकही के का उपयोगिता हो सकेला? सांच पूछल जाय त किसान आ किसानी हमनी के भोजपुरिया संस्कृति के जातीय स्मृति के थाती ह। किसान आ किसानी हमनी के जीवन आ जगत के वास्तविक समस्यन के आसान समाधान के साथे आज के हाहाकारी समय में मनुष्यता के वास्तविक स्वरूप के समझे वूझे के, पहचाने के, विपरीत समय में धैर्य धारण करे के सीख देला।हमनीं के संस्कृति, नीति, संस्कार आ आम चेतना मुख्य रूप से कृषि-समाज के देन ह। किसान सामाजिक यथार्थ के आइना ह एही से किसान कवनो ना कवनो रूप में परिवेश में उपस्थित रहेला।एह तरह से हमनीं के कह सकींला जा कि किसान संस्कृति आ समाज के अलग करि भोजपुरिया संस्कृति आ समाज के जिंदा रखल संभव नइखे। भोजपुर के मरद आ बरध के सांस लेवे के फुरसत ना भेंटाय ई किसान जिनिगी के सांच ह।खेत, खेती आ खेतिहर के ठांव ह गाँव। गाँव के आपन खूबसूरती होला, जे आजुवो कुछ ना कुछ बांचल बा। गाँव के ई खूबसूरती खेत, खेती आ खेतिहर के चलते रहे। भोजपुरी संस्कृति कृषक संस्कृति के पोषक ह। दूनों के हिंगरा के ना देखल जा सके। किसान गंवई संस्कृति के प्राण ह। ओकरे से जुड़ल पारंपरिक जीवन शैली में संस्कृति के रास-रंग, राग-सुहाग, लय-ताल वसेला, ओहि से गंवई गंध गमकेला। किसान श्रम के प्रयाय ह, देश के प्रयाय ह, माटी के प्रयाय ह, लोक के प्रयाय ह, प्रेम के प्रयाय ह। माटी के पूत किसान के जदी भोजपुरिया संस्कृति से निकल दिआई त कुछुवो ना वांची ओह में। भोजपुरिया किसानी के पाट बहुते चौड़ा बा अउर लोक आ

www.bhojpurisahityangan.com

जमीन से जुड़ल बा।धनंजय चोपड़ा के लिखल ह कि 'खेती किसानी लोकजीवन का मूल आधार है। दरअसल पूरा लोक जीवन उस धरती से जुड़ा हुआ है जो जीवन के पर्याय है। सीधे-सीधे कहा जाए तो लोक-जीवन में खेती के बिना लोकजीवन अधूरा है। सामाजिक नैतिकताएं, सामाजिक संगठन शक्ति, सामाजिक नातेदारी, सामाजिक साहचार्यता और सामाजिक मूल्य पाठशालाएं खेती-किसानी के रास्ते लोक जीवन का हिस्सा बनती हैं।' (वागार्थ मई 2022, पृष्ट संख्या 79) कहल जाला जहां ले जीवन बा तहां ले किसानी बा। सामाजिक जीवन से जुड़ल कवनो प्रसंग प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप से किसानी के विषय हो सकेला।लोक आ जमीन से जुड़ल किसानी परिवेश से कइसे दूर रह सकेला हमनीं के समाज आ जदी दूर रही त पूर्ण कइसे हो सकेला? एह से किसान आ किसानी पर गंभीर बतकही आजु के जरूरत बा काहे कि देश के आत्मा गाँवें में बसेला।

किसान के जिनिगी दुख आ भूख के जिनिगी ह। तब त महेंद्र शास्त्री जी 'किसनवाँ' में कहनीं कि -

कवनो ना कवनो लागल बा लासा

सुख के नइखे कवनो आसा

रो रो के जिनगी बितावे किसनवाँ, ओकरा के भुखियो सतावे।

कबो खलिहान किसान खातिर खुशहाली के जगह होत रहे। आजु बाजारवाद के शोषण एकरा के रोवे आ आंसू बहावे के जगह बना देलस। साल भर मरे-खपे के बादो ऊ लोगिन के भरपेट खाना आ कपड़ा नइखे भेंटात। असन आ वसन दूनों के अभाव किसानन के जिनिगी आंसु से तर कर देता। गाँव के आ विशेषकर किसान के बदतर हालात जे दिखाई पड़ रहल बा ऊ ओकर ना बलुक व्यवस्था के देन ह। किसान अपना जमीन के कमाई से लगानो ना भर सके, परिवार के पेटो ना भर सके,ऊ अपना कमाई से परिवार के बेहतर भविष्य कइसे बना पाई? मौसम आश्रित खेती आजुवो बा। किसान के एह स्थितियन से उबारे के, निजात दिआवे के बात खूब होला बाकिर आजुले फलाफल किसान के जिनिगी में ना भेंटाइल। ओकरे प्रतिफल खेतिहर के पलायन रूप में सामने आइल। पलायन आ विस्थापन बड़ी दुखदाई होला, साधे केहू ना अपनावें।चाकरी आदमी के बंदी बना के छोड़ देला ई बात रोजी-रोटी के चक्कर में व्यक्तिगत अनुभव

www.bhojpurisahityangan.com

रहल वा। पेट के चक्कर में आ किसानी के दुर्दशा देखि वावा के कहल बात कहाँ इयाद रहल ना तऽ लइकाइयें से सुनत रहलीं कि -

साधो! जनि जइहऽ रंगून,
बात-बात पर बाबा बोलें, कृषि कार्य ह पुन
बेटा हवऽ किसान के बाबू, करजा घर के घुन
चाकरी कबो ना आन के, होला कबहूं नीक
बंधक जिनिगी पाप ह, बिनु सुराज सब सून।

बाबा के ई वात अनुभव के पूंजी रहे बाकिर खेत जब माथ के भार हो गइल, खेत जब धुआं उगले लागल, खेत जब उद्योग आ विकास के पेट में समा गइल त रंगून पलायन के छोड़ दूसर चारा कहाँ बांचल? सच्चाई त इहे बा कि किसान खेती में होखे वाला नुकसान से अपना के बचावे में सफल नइखे हो पावत। देखल जाई त किसान के खेती पर आवे वाली सब खर्च के जोड़ला पर ओकरा से होखे वाला आमदनी पर विचार कइला पर किसानी घाटा के सौदा होला अउर ई देख कहल जा सकेला कि वास्तव में ओकरा श्रम के मूल्यों ना मिल पावेला। आँखि खोल देखला पर त लउकबे करी, टोअवो करब त बुझाई श्रम आ कर्म के उचित मूल्य नइखे मिलत आजु के व्यवस्था में। किसान गाथा अनकहल नइखे रहल बाकिर अनसुनल रह गइल। सत्ता ओह ओरि कान ना देलस। किसान के जिनिगी में अगहनुआ भोर ना भेंटाइल आजुले इहे किसान जीवन के सांच ह। समय निरंतर बदलाव के चिह्नित करत चलेला, आपन करवट बदलेला। किसानी में समय के साथ बदलाव आइल बा। आधुनिक कृषि संयंत्र से सुविधा बढ़ल तबो किसान घरे बइठल दुख ना भागल। एगो किसान के हजार गो दुख होला आ ऊ दुख आजुवो किसान के साथ नइखे छोड़त। आजादी के आठ दशक बादो किसान के हालत बहुत नइखे बदलल। अंग्रेजी साम्राज्यवादी शासन किसान के अनाज के खलिहान से उठा ले जात रहे, आजु के शोषक नीतियन आ बाजार फसल पके से पहिले खाद-दवाई-बीज-मशीनरी के माधयम से पहिले लूट लेला। बांचल खुचल खरिहान से कर्जदाता उठा ले जाला।किसान के श्रम के शोषण ह ई, जेकरा कारण ओकर दयनीय हालत बा, ऊ ना त कामचोरी करेला नाही फिजूलखर्ची। हाल के किसान आन्दोलन किसान के क्षोभ आ आक्रोश के

www.bhojpurisahityangan.com

परिणाम रहे आ सरकार के जे आन्दोलन के प्रति रवैया सामने आइल ऊ संवेदनहीनता के परिकाष्ठा रहे। गांधी के सपना आ ग्राम स्वराज के सपना के हत्या रहे। किसान के जिनिगी अभिशप्त जिनिगी होला केकरो राजपाट होखे सभे चूसेला किसाने के। आजु आजादी के आठ दशक बादो सामंत आ सरकार के लाठी किसान के रीढ़ सोझ नइखे होखे देत कहले बा अवरा के मउगी सब के भउजी। किसान से अबर के भेंटाई। इहे देख महेंद्र शास्त्री जी के 'किसनवाँ' कविता में कहल बात इयाद आ जाला -

अबरा के मेहर सभकर भउजाई,
सब केहू अबरे के खोर-खोर खाई
अबरा से अबरो बिरावे किसनवाँ,
ओकरा के सब कलपावे।

आज इक्कीसवीं सदी में देश में विकास सरपट भाग रहल बा भारत विश्व गुरु के सपना देख रहल बा, हमनीं का चउथा आर्थिक शक्ति बने जा रहल बानीं जा, सशक्त भारत के कशीदाकारी नीमन तरे गढ़ रहल बानीं जा ओहिजे किसान के स्थिति दिल दहलावे वाली आजुवो बा जहां किसान आत्महत्या करे पर मजबूर बा। लोकल के भोकल, किसान के आमदनी दूगना करे के कागज पर बात होला बाकिर ऊ बात जमीन पर देखे में ना मिले। किसान आ किसान पूत खेती से बढ़िया ठेला लगावल आ रिक्शा चलावल समझत बा। ई सब नतीजा ह धान के कटोरा घिसला के। बाजार के मार आ भूख से पीड़ित किसान के पास खेत आ खेती से पलायन छोड़ दूसर रास्ता कहाँ लउकत बा। काल्हु के उत्तम कृषि आ अधम चाकरी के बात उल्टा हो गइल। कलम के आगे कृषि के कवनो इज्जत ना रह गइल। तब त महेंद्र शास्त्री जी 'भइयवा' में कहले -

कलमे चलवला से इज्जत रही तब
काहे केहू पकड़ी कुदार रे भइयवा।

हमनी का देश कृषि प्रधान देश ह विकास के बयार के ई कइसन असर ह कि किसान आर्थिक रूप से बिपन्न होखत जा रहल बा? समृद्धि सबका के जमीन से उठावेला, ओकर श्रम के हक अदा करेला, हक लूटे ना। आजु गांव आ शहर में, किसान आ बैपारी, आम जन आ खास जन में विशेष अंतर दिखाई पड़ता। गांव के जरूरत आजुवो मुँह बवले खाड़ बा

www.bhojpurisahityangan.com

आ शहर अपना धुन में विकास के बयार के आनंद लेत आगे बढ़ रहल बा। ई कइसन विकास ह कि गांव के किसान सब के आत्महत्या करे प मजबूर कर रहल बा? किसान के उपज के कम पइसा मिलल बाजारवाद में बुझात बा बाकिर अतना कम कि मनई आत्महत्या करे के सोचे समझ से परे बा। साम्राज्यवादी-पूंजीवादी शोषण के कारण आजु ले लाखों किसान आत्महत्या कर चुकल बाड़े। ई कवनो प्राकृतिक विपदा के कारण नइखे भइल, भइल बा पूंजीवादी व्यवस्था आ सरकारी नीतियन के कारण। वैश्वीकरण, उदारीकरण व निजीकरण के नीतियन के कारण किसान के हालत अउर अधिक खस्ता हो गइल बा। वैश्वीकरण के चलते समाज में असमानता के गहरी खाई बनल जा रहल बा, जेकर सबसे बेसी मार समाज के निम्न वर्ग आ किसान पर पड़ रहल बा। किसान पर करजा के बढ़त बोझ के कारण बड़ संख्या में किसान आत्महत्या कर रहल बाड़े। अनाज जे भाव में शहर में बिकात बा ओकर सही हिस्सा ओह अनुपात में किसान के नइखे मिल पावत। आखिर किसान के हक के लूट लेता? सरकार जे विकास के झुनझुना बजा रहल बा काहे चुप बा? किसान के उपजावल अन्न बेच के केहू करोड़ों में खेले आ किसान गले फंसरी त अइसन विकास कवना काम के जे समाज में असमानता बो रहल बा। बजार फरत फुलात नजर आवत बा आ गाँव खोंखड़, बैपारी करोड़ों के मालिक आ किसान के दू जून के रोटी मोहाल, विकास के राजनीति के ई कइसन झूठ ह?। बाजारीकरण के अलगे गणित होला ई सांच ह बाकी किसान मजदूर समाज के हिस्सा ह ई त बूझे के नू होई। विकास के बयार के झोंका ओकरो आँगन में नू पहुंचावे के होई ना त विकास ढिलमिला जाई। प्रेमचंद से शब्द उधार लेके तब नू कहले कनक जी कि -

सेवा के पहिला सीढ़ी, घर दुआर आ गांव।
ऊपर ऊ ना जा सकी, छोड़िब जे ई ठांव॥

घर, दुआर आ गांव में विकास कहां नज़र आवत बा। जमीनी विकास टिकाऊ होखेला। ऊपर का विकास कम सीमेंट,बालू, गिट्टी से बनल ब्रिज जस भहरा जाला। गाँव, घर के हाल देखे खातिर तनी गाँव में जाके किसान मजदूर के घरे झांके के पड़ी।

विज्ञान, अंतरिक्ष, तकनीक आ उद्योग में देश डंका बजा रहल

www.bhojpurisahityangan.com

बा। निजीकरण, उदारीकरण आ वैश्वीकरण के प्रक्रिया जोर पकड़ले बा। जे विकास दिखाई पड़ रहल बा बाजारवादी ह, लोकवादी ना। ई तब बुझाई जब विकास के तह में ताकल जाई। ओकरे नतीजा ह कि कृषि हाशिया पर चल गइल। बैपार पर एकाधिकार के वर्चस्व बढ़ रहल बा। सरकार के लक्ष्य लोक के विकास पर ना, बाजार आ पूंजी के विकास पर बा। देख के चीज बा कि एह विकास के बयार में कतना लोक हिस्सेदारी बा? ओकरे नतीजा बा कि मानव विकास सूचकांक में हमनी का एक सई एकानवे देश में एक सई बत्तीसवा पोजीशन बा।ई आंकड़ा सरकार के ह। जे विकास लउकत बा ऊ वैश्विक अर्थव्यवस्था के अनुरूप बा ना कि समता आ सामाजिक न्याय के अनुरूप। गांव में देखीं खेती-किसानी के का हाल बा? रोजगार, कारोबार आ आजीविका के का हाल बा? विकास बा त ई कल्याणी अनाज के वेवस्था केकर पेट भरे खातिर? गांव-जवार के मनई सूरत, मुंबई, दिल्ली देने काहे जात बाड़े? आलू आ बालू विकास के खेल में आम जन से दूर चल गइल।जल, जंगल आ जमीन पर कतना हक लोगिन के बा? धरती काहे धधकत बा? जबाब खोजबऽ त जवाब मिली- बेतरतीब विकास- आन्हर विकास। आजु के विकास के मनई, सभ्यता, संस्कृति, पर्यावरण आ जलवायु से कवनो मतलब नइखे रह गइल। सांच पूछ त ई विकास के राजनीति ह, खैरात के अर्थव्यवस्था के विकास ह, आधुनिकीकरण के विकास ह वैश्विक अर्थव्यवस्था के होड़ में अपना के चमकावे खातिर थूंक - पालिस, जेकरा समाज आ लोक के विकास से कवनो लेना-देना नइखे। ई देख इहे लागला कि भारत जब स्वतंत्र बा त वैश्विक अर्थव्यवस्था से नियंत्रण में ई दउड़ काहे? का ई अपरोक्ष गुलामी ना ह?

बाजारवाद के प्रभाव में शहरीकरण बढ़ल। गाँव-कस्बा शहर, शहर नगर, नगर महानगर बन गइल। सगरी मॉल-बाजार बढ़िया गइल बाकिर ना उद्योग, ना रोजगार, ना मजदूर। शहरीकरण खेत निगलत जा रहल बा। कृषि के खेला दम तोड़ रहल बा। इहे आजु के विकास ह। ममता दीदी कहेली कि खेला होबो। त देश में विकास के खेल चल रहल बा जोर शोर से। प्रकृति आ पर्यावरण के विध्वंस विकास के परिणाम के रूप में सामने बा। ई आन्हर विकास से कुछ हासिल ना भइल कइसे कहीं, भइल बा। अमीरन के अमीरी बेतहाशा बढ़ रहल बा। मध्य वर्ग आ निम्न वर्ग

www.bhojpurisahityangan.com

करज के बोझ तले छटपटा रहल बा आ तेजी से गरीबी रेखा के नीचे जा रहल बा। विकास के बयार के नतीजा ह कि देश के एक प्रतिशत अमीर देश के चालीस प्रतिशत दौलत के ढेर पर बइठल पगुरात बा। एह विकास के खेल में किसान के स्थिति देख हम त इहे बुझत बानीं जे राही मासूम रजा के इयाद में लउकत रहे हमरा उहे विकास में किसान के दशा देखि लउकत बा -

कहीं शबनम के शगूफे, कहीं अंगारों के फूल
आ के देखो मिरी यादों के जहाँ कैसे हैं।

आ विकास के ई हाल देख के चंद्रसेन विराट जी के कवित के शव्द उधार ले भोजपुरी में पूछव कि -

देस के गांव सब आजुवो बीमार बा कुछ त करीं
रउवा रहते किसान के दुर्दशा
रउवा कवन बात के सरकार बानीं
कुछ त करीं।

प्रो. बलभद्र एक जगह कहले बाड़े कि 'अथक मेहनत के बावजूद किसान के तन प ना साबुत बसतर बा, ना सालो भ खाए भ अनाज बा, ना अउर कवनो सहूलियत बा। एह सब के बोध बा किसान के। अपना दीन-हीन दसा प ओकरा भारी अफसोस बा। अपना काम के लेके सम्मान के बोध आ हालत के लेके अफसोस। गौर करे के बात बा कि सम्मान आ अफसोस के बोध में एगो संतुलन बा। सम्मान के बोध अहंकार आ आत्महीनता के विसर्जन के साथ बा आ अफसोस में सामाजिक, राजनीतिक स्थिति आ शोषण आ उपेक्षा के लेके आलोचना बा'। किसान के जमीन के प्रति मोह आपन अस्तित्व बचावल जइसन बा। भोजपुरी क्षेत्र के किसान वित्ता भर जमीन खातिर मरे-मारे पर उतारू होखे वाला ह, जे जमीन आज विकास के नाम जबरदस्ती अधिग्रहित होखत देख काठ मार गइल बा किसानन के। लेकिन वैश्वीकरण के दौर के लूट उन्हिन के पंगु, असहाय व लाचार बना देले बा। कागज के टुकड़ा के बदले किसान के जमीन छीनल जा रहल बा। ठीक बा एह जमीन से ओकरा परिवार के कवनो सुविधा नइखे भेंटात बाकिर किसान होखे के सुख त ओकरा मिलत बा एही जमीन के टुकड़ा से। ई जमीन के टुकड़े ओकरा के पहचान दे रहल

www.bhojpurisahityangan.com

बा आ समाज में ऊ ओकरे से सम्मान पा रहल बा। किसान खातिर खेत माटी के टुकड़ा ना ह ओकर अस्मिता के पहचान ह, माटी ओकर माई हिय, माटी ओकर सांस ह, ऊ ओकरा से दूर रह जिंदा ना रह सके। धान के कटोरा घिस रहल बा,ऊ करज में डूब रहल बा बाकिर ऊ किसाने बनल रहल चाहत बा, आपन पहचान, अस्मिता के बचा के रखल चाहत बा, आपन थाती अपना भविष्य के पीढ़ी खातिर संरक्षित रखल चाहत बा इहे माटी त ओकर बैंक बैलेंस ह अगिला पीढ़ी खातिर। ऊ झूठो के तगमा अन्नदाता आ भगवान के नइखे लेल चाहत। एही स्थिति देखि के कहे के पड़ल कि -

घिसल कटोरा धान के, करज में मुए किसान।
झूठो तगमा नाम के, धरती के भगवान॥

काका कहस किसान से, सुनलऽ हमरी बात।
पेट खेत से ना भरी, अकड़ भुलाई तात॥

खेत बेच कबले रही, इज्जत अब बबुआन।
चलीं बजारे बइठ के, खोले नया दुकान॥

माई माटी के करज, माथे बबुआ आज।
कबले तू सुतल रहबऽ, लूट जाइ सब राज॥

धरती के भगवान के, राजा से कहनाम।
माटी हमरी छोड़ि दऽ, कहाँ दूसर बा काम॥

समृद्धि आ विकास हर देश के जरूरत होला। आपनो देश के बा आ मनई ओह पर गर्व करेला। बाकिर ऊ समृद्धि आ विकास देश आ काल के अनुसार होखे के चाहीं। ओकरा पीछे छिपल विनाश के आकलन होखे के चाहीं ना त ओकर प्रतिफल गलत होखेला आ प्रभावित होला देश के सवा सई करोड़ आम जन जेकरा में किसान-मजदूर के बहुलता बा।देश के सकल घरेलू उत्पाद बढ़त बा बाकिर सही में केकर आमदनी कतना बढ़ल

www.bhojpurisahityangan.com

एह पर जटिलता बनल रहत वा आ जेकर आँखि सुराज के माने समझल चाहत वा ओकरा भले सही जानकारी ना होखे बाकिर ऊपर बइठल तबका के मालूम बा कि मेहनत भले दीन किसान करे घीव अमीरे खाई। ओकरे नतीजा ह कि कारपोरेट घराना के हैसियत में इजाफा आ किसान के हाथ में लकठो से बढ़िके बेलगरामी आ मोतीचूर। विकास के राहि आइल बढ़ोतरी पर नजर डालब त देश के कुल सम्पत्ति के चालीस प्रतिशत एक फीसदी के पास आ देश के पचास फीसदी आबादी के पास खाली तीन फीसदी।लूट के नायाब तरीका से सामाजिक विषमता के जवन रूप सामने आवत बा ऊ सफेद पोश, लाल फीता शाही आ धनाढ्य परिवारन के पूंजी के खेल ह जेकरा में जन सुराज दिन दुपहरिया लूटा रहल बा अपने हाथे। मुगल, अंग्रेज आ चंगेज जे खेल गुलाम भारत में करत रहन रूप बदल आजुवो सत्ता-सेठ लूट रहल बा आपन भारत के लोक के लोकतंत्र के आड़ में। भारत के आत्मा गांव में बसेला बाकिर एह लूट के असर गांव में बसल किसान-मजदूर पर सबसे बेसी बा। आजादी घरी सकल घरेलू उत्पाद में दोसर आ कृषि क्षेत्र के हिस्सा उनचास आ एकावन के रहे आज करीब चौरासी आ सोरह के रह गइल बा।अब बताईं खेती ना रही, किसान मुई आ गांव बिला जाई त भारत कबले बांची आ सुराज के का माने रह जाई? अइसन में किसान आ गाँव के बात त करहीं के पड़ी। कहे के माने विकास के फल समाज के निचला तबका ले पहुंचावे के प्रयासे जन सुराज के सही राहे ले जाई ई आजु सुराज के बात करे वाला लोगिन के लवेद कह रहल वा आ एह वात के समझे के होई सभके किसान आ गाँव के हित मे।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

यात्रा संस्मरण :

इयाद में बसल : पेंच व्याघ्र आरक्ष्य

– कनक किशोर

छोड़ जाला आपनि इयाद, बस जाला ऊ दिल में
जगह कवनो खास, कवनो मनई आ केकरो प्रेम।

ई एगो सच्चाई ह, एह से इंकार ना कइल जा सकेला। हमार कवनो विशेष शौक नइखे बाकिर प्रकृति, अध्यात्म आ गाँव से स्वाभाविक जुड़ाव रहल बा। प्रकृति आ गाँव के इहे जुड़ाव के कारण नौकरी में रहतो आ जिनिगी के आपाधापी के बीच हर साल एक महीना के ई.एल. लेके पंद्रह दिन देशाटन में आ पंद्रह दिन गाँव पर बीतत रहे।अइसे वन सेवा में रहला के कारण चालीस बरिस त वन आ वन प्राणियन जोरे कटल तवहूं जंगल से मन ना भरल।ई हमार सौभाग्य रहल कि आपन वन सेवा के शुरुआत विश्व प्रसिद्ध साल वन 'सारंडा' से कइनीं। जंगल से इहे नजदिकाव कारण ह जे घूमा फिरा के हमरा के साहित्यों में चाहे–अनचाहे ऊ गद्य होखे भा पद्य प्रकृति, परिवेश, पर्यावरण आ गाँव के बात करे खातिर मजबूर करेला। दरकत हिमालय, बिखरत गाँव, बिलात जंगल, सूखात नदी, लूटात बालू, बिगड़त परिवेश देखि आंखिन में लोर आ जाला, जे शब्द रूप में कविता, कहानी, आलेख के रूप में सामने आ जाला।हम वन पदाधिकारी के प्रशिक्षण राज्य वन सेवा महाविद्यालय, बर्निहाट (गौहाटी) से 1986-88 बैच में कइले रहीं। ओह प्रशिक्षण में हमरा साथे चालीस गो देश के विभिन्न राज्यन के प्रशिक्षणार्थी रहे लोग। दू साल एक साथ रहे आ एक सेवा में रहला के कारण एगो परिवार के माफिक हो गइल रहे सब लोग आपस में। आपस में सोशल मीडिया पर जुड़ाव रहे बकिर

www.bhojpurisahityangan.com

नौकरी के आपाधापी में कुछ लोग के छोड़ केकरो से मिले के संयोग ना जुटल रहे। सेवानिवृत्त हो गइला पर आपस में मिले खातिर रणथंभौर में बैचमेट्स मीट के प्रोग्राम तीन साल पहिले बनल त प्रतिभागिता निश्चित कइला के बावजूद कोरोना के तृतीय लहर के आशंका के कारण ना भाग ले पवनीं। एह साल पेंच व्याघ्र आरक्ष्य, मध्यप्रदेश में दिनांक 23/10/2024 से 25/10/2024 तक बैचमेट्स मीट के प्रोग्राम बनल त हमरो ओकर हिस्सा बने के मौका मिलल। एह बैचमेट्स मीट में इंतजार रहे छतीस साल बाद अपना बैचमेट्स से मिले के एक तरफ त दूसरा ओरि पेंच व्याघ्र आरक्ष्य के सुंदर प्रकृति, वन आ वन्यजीव से मुलाकात के। ऊ इंतजार समाप्त भइल दिनांक 23/10/2024 के बारह बजे दिन में पेंच व्याघ्र आरक्ष्य के तुरिया गेट स्थित किपलिंग कोर्ट रिसोर्ट पहुंचला पर।

राँची से चलके रेल से नागपुर दिनांक 23/10/2024 के सबरे पहुंचला पर हमनी के बैचमेट विहार के लल्लन झा नागपुर स्टेशने पर मिल गइले आ उहाँ से साथे एक गाड़ी से तुरिया कपिलिंग कोर्ट रिसोर्ट पहुंचनी जा जहाँ गुलदस्ता आ स्वागत पेय से वड़ी गर्मजोशी से रिसोर्ट प्रवंधन स्वागत कइलस। ई रिसोर्ट मध्यप्रदेश पर्यटन के रिसोर्ट ह जे प्रकृति के गोद में अवस्थित बा। पेड़ पौधन के बीच नदी के किनारे अवस्थित रिसोर्ट के कॉटेज पहिले नजर में मन मोह लेलस। हम आवंटित कॉटेज में जा नहान-धोआन कइके भोजन कक्ष में पहुंच भोजन करिके आराम करे के निर्णय लेनी। ओह दिन अपराह में कवनो विशेष कार्यक्रम निर्धारित ना रहे। साथी लोग धीरे-धीरे जुटत रहे। एक-दू आदमी छोड़ के सभे जुट गइल रहे। पेंच व्याघ्र आरक्ष्य दू भाग में प्रवंधन के हिसाब से बंटल बा कोर जोन (411 वर्ग किलोमीटर) आ बफर जोन (768 वर्ग किलोमीटर)। तुरिया खवासा बफर रेंज में अवस्थित बा।रात साढ़े सात बजे से कांफ्रेंस हॉल में मिले के रहे बैचमेट्स के परिवार मिलन सह परिचय कार्यक्रम में। कुल सत्रह गो साथी सपत्नीक आ कुछ लोग बेटा-बहू, बेटी के साथ पहुंचे रहे। पेंच व्याघ्र आरक्ष्य के पूर्व संयुक्त निदेशक किशोर कुमार गुरुवानी एह बैचमेट्स मीट के मुख्य आयोजन कर्ता रहन जेकर साथ मध्यप्रदेश के दूगो अउर बैचमेट्स वाहने जी आ वास्कले जी देत रहन। इंट्रोडक्टरी सेशन में सव बैचमेट के गेरुआ उत्तरीय आ तुलसी माला से स्वागत कइल गइल। ई

www.bhojpurisahityangan.com

बुझाता उमिर के अगिला पड़ाव के देखत कइल गइल रहे। ओही दिन विदा के समय देवे वाला उपहार के झोला दे देल गइल सभके जेकरा में अनेकन समान रहे। ई तनी अटपटा लागल बाकिर गुरुवानी जी स्पष्ट कइले कि ई एह से कइल गइल ह कि अगर कोई साइज आ कलर पसंद ना होखे त अपना मनमाफिक साइज आ कलर तुरिया गेट स्थित उपहार के दुकान, जहाँ से समान खरीदल गइल रहे, से आदमी बदल सके। स्वागत आ उपहार प्रदान के काम आपसे में एक-दूसरा के देके करावल गइल। कार्यक्रम के अंत में भारतीय वन सेवा के अधिकारियन के हाथे न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली से सद्य प्रकाशित हमार हिन्दी काव्य संग्रह 'भाप बन उठती जिंदगी की गंध' के लोकार्पण कइल गइल। एगो मधुर आ स्मरणीय एह आयोजन के बाद साथे खाना खाके आदमी राति विश्राम कइलस।

भारत में कुल पचपन व्याघ्र आरक्ष्य बा। व्याघ्र आरक्ष्य के स्थापना मुख्य रूप से बाघ संरक्षण आ बाघ के संख्या बढ़ावे के उदेस से कइल गइल बा। पिछला बाघ के गणना पेंच व्याघ्र आरक्ष्य में 2022 वर्ष में भइल रहे जेकरा में कुल बाघ के संख्या 77 पावल गइल रहे। बाघ के पर्यावास खातिर विशेष वन के जरूरत होला। पेंच व्याघ्र आरक्ष्य के वन बाघ पर्यावास खातिर एगो बढ़िया स्थल बा। आज के पेंच बाघ आरक्ष्य के क्षेत्र के आपन गौरवशाली इतिहास बा। ऐकर प्राकृतिक संपदा आ समृद्धि के वर्णन आइन-ए-अकबरी में मिलला। आर ए स्ट्रेंडेल के 'सिवनी-सतपुड़ा में कैंप लाइफ', फोर्सिथ की 'हाईलैंड्स ऑफ सेंट्रल इंडिया' और डनबर ब्रेंडर की 'वाइल्ड एनिमल्स ऑफ सेंट्रल इंडिया' जइसन कई गो प्राकृतिक इतिहास के किताबन में एह क्षेत्र में प्रकृति के प्रचुरता के विस्तृत चित्रण देखे के मिलेला। स्ट्रेंडेल की अर्ध-आत्मकथात्मक 'सिवनी' रुडयार्ड किपलिंग के 'जंगल बुक' के पीछे प्रेरणा रहल बा। पेंच टाइगर रिजर्व आ ऐकरा आस-पास के इलाका रुडयार्ड किपलिंग के सबसे मशहूर कृति 'द जंगल बुक' के मूल आधार ह। 'द जंगल बुक' सिवनी के जंगल पर आधारित बा, जेकरा के अब 'पेंच टाइगर रिजर्व' कहल जाला। एकरा के 'मोगली लैंड' आ 'गेटवे ऑफ टाइगर लैंड' के नामों से जानल जाला। सर रुडयार्ड किपलिंग पुरान मध्य प्रदेश के देवास रियासत में

www.bhojpurisahityangan.com

सेवारत रहन। ऊ सिवनी के जंगल के दौरा कइले रहन आ ओह क्षेत्र के जंगल आ वन्य जीवन के बारे में जानकारी हासिल कइले रहन। सर रुडयार्ड किपलिंग के नाम पर रिसोर्ट के नाम रखल गइल बा जेकरा में हमनीं के ठहरल रहीं जा।

दिनांक 24/10/2024 के सुबह सभे किपलिंग कोर्ट के आँगन में जुटल जहाँ नव गो खुला जिप्सी हमनी के सफारी भ्रमण आ टाइगर देखावे खातिर खड़ा रहे।हर जिप्सी पर पांच-पांच लोग सवार हो गइले,साथ में एगो गाइग आ चालक। एक साथ आदमी तुरिया गेट पहुंचल जहां पर पेंच व्याघ्र आरक्ष्य प्रबंधन के कर्मी हम सभनी के एगो टाइगर प्रोजेक्ट के कैप पहिरा के बाघ संरक्षण के एगो रक्षा सुत कलाई पर बन्हल स। तुरिया गेट के भीतर के जंगल कर्माझिरी कोर रेंज में पड़ेला। तुरिया गेट से एक साथ चलके थोरे देर के बाद अलग-अलग दिशा में जिप्सी चल देलन स। छव बजे से एगारह बजे तक जंगल भ्रमण आ जंगल में मंगल भइल। वन के सुंदरता के वर्णन शब्द में कइल कठिन बा। शुष्क पर्णपाती सागावान वन आ शुष्क पर्णपाती मिश्रित वन एह परिक्षेत्र के मुख्य वन के रूप में मिलल जेकरा में सागवान, आसन, केंद, धौरा, सलई, महुआ, जामुन आदि के साथ बांस बहुतायत में मिलल। सागवान जंगल के बीच-बीच में बढ़िया ग्रास लैंड उपलब्ध रहे। अइसन वन में घास-पात आ मांस खाए वाली दूनों तरह के वन जीव मिलेला। मुख्य रूप से एह वन में बाघ, तेंदुआ, जंगली भैंसा, सांभर चीतल, नीलगाय, बारहसिंगा आदि बा। अनेक दुर्लभ जीव अउर सुविधा वाला पेंच व्याघ्र आरक्ष्य पर्यटकन के तेजी से अपना ओरि आकर्षित कर रहल बा। खूबसूरत झील, नदी, ऊंच पेड़ के सघन झुरमुट, रंगबिरंगे पक्षियन के कलरव, शीतल हवा के झोंका, सोंधी-सोंधी महकत माटी, वन्य प्राणियन के अनूठा संसार सचहूं प्रकृति के समूचे तन-बदन पर हरीतिमा के अइसन अनंत सागर रोम-रोम में सिहरन भर देत रहे। पेंच जंगल में कोलाहल करत 200 से अधिक प्रजाति के पक्षियन, पलक झपकते दिखे अउर गायब हो जात चीतल, सांभर अउर नीलगाय, भृकुटी तनले खाड़ जंगली भैंस आ लगभग 80 बाघ से भरल पड़ल बा आरक्ष्य।

अल्पाहार जंगल के एगो निरीक्षण भवन में भइल। ओहिजे ग्रुप

www.bhojpurisahityangan.com

फोटोग्राफी भइल। अल्पाहार के बाद जंगल परिभ्रमण करत रिसोर्ट लौट गइनीं जा। नेहान-धोआन करिके भोजन के बाद थोड़ा आराम कके फिर जंगल परिभ्रमण में तीन बजे निकलल आदमी त सात बजे शाम के लौटल। जंगली भैंसा, चीतल, सांभर, लंगूर खूब मिलल देखे के बाकिर बाघ मामा ना मिलले जेकरा खातिर जंगल के खाक दिन भर छनलस। हँ बाघ के पग मार्क आ अगल-बगल बाघ के उपस्थिति दिखावत हिरण आ लंगूर के पुकार (कालिंग) सुने के मिलल।

शाम के किपलिंग रिसोर्ट के खुला प्रांगन में संगीत भरल सांझि के आयोजन रहे हमनी खातिर। मुख्य रूप से बांसुरी वादन के कार्यक्रम रहे।साथ में बीच-बीच में विभिन्न राज्य के साथी लोगिन आपन प्रस्तुति देलस। वोही क्रम में हमहूं आपन दूगो भोजपुरी कविता के पाठ कइनीं। संगीत के साथ सुरुचिपूर्ण भोजन आ पेय के बेवस्था रहे। समूह नृत्य आ भोजन के साथ आयोजन मध्य रात्रि तक चलल।

अगिला दिन 25/10/2024 के भोजन के बाद दू बजे जंगल सफारी खातिर खुला जिप्सी पर एक साथे आदमी निकलल। आज रुखड़ कोर आ अरी बफर रेंज में परिभ्रमण के कार्यक्रम रहे। रुखड़ आ अरी रेंज के जंगल में अनेकन वन जीव के दर्शन भइल। बीच में रुखड़ में 1920 के बनल वन विश्रामालय में तनी आराम कके नेल्योर नेचर कैंप में चाय-पकौड़ी के आनंद लेलस लोग। ओहिजा गाँव इको विकास समिति सुविधायुक्त आरामदायक टेंट हाउस के बेवस्था बीच जंगल में कइले बिया, जेकर रेट करीब 4500/ रुपया बा एक दिन के। रात के भोजन के इंतजाम अरी रेंज में 1903 के बनल सकाटा रेस्टहाउस में रहे। गोधुलि बेला में ओहिजा खातिर प्रस्थान कइलस आदमी त जंगल में सड़क पार करत बाघ मामा के बड़ी नजदीक से दर्शन भइल। बाघ मामा रोड पार करके रोड किनारे बांस जंगल में पसर के आराम करे लगले। सबके खूब बढ़िया से दर्शन भइल आ पेंच आवे के उदेस पूरा हो गइल। सकाटा रेस्टहाउस में भोजन करिके नव बजे रात चलके रिसोर्ट पहुंचल आदमी। 26/10/2024 के पांच बजे भोर में राँची खातिर पत्नी के साथे प्रस्थान कइनीं।

पेंच व्याघ्र आरक्ष्य प्रबंधन देखि वन्यजीव प्रबंधन के अनुकरणीय

www.bhojpurisahityangan.com

पाठ पढ़े के मिलल जे चालीस साल के वन सेवा में ना मिलल रहे। देश के एगो वेहतरीन व्याघ्र आरक्ष्य पेंच, ई कहीं त कवनो गलत ना होई।दू दिन के जंगल भ्रमण में एगो पेड़ के अवैध कटाई ना देखे के मिलल। जलस्रोत के भरमार आ घास के मैदान से सजल सघन जंगल बोलत नजर आवत रहे कि हम जंगली जीव के आपन घर हईं आ एकरे नतीजा आरक्ष्य में बढ़त बाघ के संख्या बा। वन कर्मी के अतिरिक्त चालक, गाइड आ जानवर ट्रैकर के रूप में हजारन स्थानीय निवासी के रोजगार त देइये रहल बा, साथे इको विकास समिति के माध्यम से ग्रामीण के मदद कर रहल बा आरक्ष्य प्रवंधन। उपहार सामग्री के निर्माणों से अनेकन लोग के रोजगार मिल रहल बा।देश के दूसरों बाघ आरक्ष्य के एह से सीख लेवे के चाहीं। अंत में किपलिंग कोर्ट रिसोर्ट के आथित्य के का कहल जाव, कुछ कहल कम होखी। जंगल के बीच पांच सितारा आवासीय आ भोजन प्रबंध जे मिलल ऊ अविस्मरणीय बा। पेंच टाइगर रिजर्व के बड़ पदाधिकारी से लेके छोट वन कर्मी तक के सेवा भाव आ समर्पण खातिर आभार आ साधुवाद कहल छोट शब्द होई। हम उहाँ सब के नमन करत एह गेट-टुगेदर के अविस्मरणीय बनावे खातिर आपन बैचमेट किशोर कुमार गुरुवानी के ग्रांड सैल्यूट देत आपन संस्मरण के विराम देत अगिला बैचमेट्स मीट के आस लेले विश्राम खातिर जाए के पहिले कहब कि-

फिर मिलब दोस्त बरिस दू हजार पच्चीस-छब्बीस में
आस बा मन में, उल्लास बा मन में, ओह दिन घरी के।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

गजबे सवाद नूं फुटेहरी के

अइसे त अब कवनों चीज के कवनों विशेष समय ना रहल।सभ चीज सालों भर बाजार में उपलब्ध रहत बा। पहिले मौसम के अनुसार मनई के खान-पान रहत रहे। मौसम के अनुसार फल-फूल, तरकारी, मिठाई के उपलब्धता रहे। आजु त देश में उपलब्ध नइखे होत त विदेस से बाजार में आ जात बा।देसो में कृत्रिम मौसम तइयार कर जरूरत के चीज पैदा कर लेत बा मनई। भोजपुरिया संस्कृति कृषि संस्कृति के पोषक ह। जेकर खान-पान खेत-बाड़ी में उपजल अन्न-तरकारी पर निर्भर करेला। बनावटी-देखावटी से दूर रहि, जमीन से जुड़ल मनई होला भोजपुरिया। स्वभाव से अखड़, फक्कड़ के जिनिगी जीए वाला होला भोजपुरिया। भोजपुरिया संस्कृति के खान-पान के एगो खास रिवाज रहल बा। ओहि खास खान-पान में एगो विशेष नाम आवेला फुटेहरी के। अइसे त भोजपुरिया समाज के फुटेहरी सालों भर भावेला बाकिर जाड़ा में आड़ा पर के फुटेहरी के सवाद के का कहे के बा।फुटेहरी के संगे घीव, आचार, चटनी, पियाज,हरियर मरचाई, आलू-बैंगन-टमाटर के चोखा के साथ राति के भोजन के थारी सामने आ जाय त भोजपुरिया के हिया जुड़ा जाला। ओकरा आगे कवनों व्यंजन भा पुआ-पकवान-मिष्ठान फेल। अतने ना नाहियो चहला पर दूगो बेसी टान लेला मनई।काल्हुये के बाति ह भतीज पतोहु आड़ा पर के बनल अपना हाथ के फुटेहरी भेज देली त दूगो रोटी खाए वाला आ परहेज से रहे वाला हम सब भुला के चार गो दाब देनी कि जाड़ के राति लमहर होला पच जाई। असहूं हमार सबसे पसंदीदा खान ह फुटेहरी त गुण गावल त जरूरी बा नूं।

कवनों चीज के इतिहास होला। फुटेहरी के इतिहास के बारे में कहेला लोग कि मगध साम्राज्य के बेरा सुरू भइल रहे। बाकिर बुझाला कि जब खाये में पिसान-सत्तू के चलन सामिल भइल होई तबे से फुटेहरी के

www.bhojpurisahityangan.com

चलन भइल होखी। खैर छोड़ीं सभे फुटेहरी के इतिहास जान के का करे के बा? मजा त फुटेहरी के सवाद में आ फुटेहरी से जुड़ल कहानियन में बा। बाबू कुंवर सिंह के सेना भोजपुरिया सेना रहे। छुपत-छापत रणनीति बनावत विद्रोह आ जंग के अंजाम देत रहे।अइसना में भात-रोटी, चूल्हा-चाकी, कलछुल-कड़ाही-तसला के जुगाड़ में ना पड़ि के पिसान-सत्तू के सहारे फुटेहरी के भरोसे जंग लड़त रहे। कहल जाला कि फुटेहरी बनावे में कवनों बर्तन के जरूरत ना पड़त रहे। गमछे पर आटा गूंथ के, सत्तू के मसाला बना, लकड़ी-गोंइठा के आड़ा (भउर) लगा के फुटेहरी मिलजुल के तइयार कर खात-पियत आगा बढ़त जात रहे कुंवर सेना। फुटेहरी कई दिन ले ख़राबो ना होला आ ना कवनों दूसर मेजन के जरूरत होला। आजुवो भोजपुरियन के जतरा के इयार फुटेहरी भा सत्तू भरल रोटिये होला। काल्हुवो बावा के कचहरी, तहसील, क्लक्टरीयट आ राजधानी के साथी फुटेहरी आ सत्तू रहत रहे।ई बात भोजपुरिया समाज आ फुटेहरी के पुख्ता संबंध के प्रमाणित करत बा। एगो कहानी इहो सुने में आवेला कि एगो मगहिया बाबू बनिहार के तीनों टाइम सत्तू खियावत रहन। घरुआरिन के रोटी-भात बनावे के झंझटें ना रहत रहे। बनिहार अजीज आके एक दिन कह देलस कि 'हम अब न रहब मालिक, हमरा से अब सत्तू न खायल जाएत। कहूं त हम अपने के ससुरारी चल जाएब। उहां हमरा मनो लगहे'। मालिक ओकरा के अपना ससुरारी भोजपुर जिला भेज देलन। बनिहार मन लगाके काम में लागल रहत रहे। घर में जे बने उहे खाये के मिलत रहे। जाड़ आइल त फुटेहरी बनल रहे। बनिहरवा के राति में उहे मिलल त ओकरा गरदन के भीतर जाते ना रहे। मालिक के सार पूछलें का भइल रे? चुप काहे बाड़े बइठल? बनिहरवा कहलस मालिक जवने कारण मगह तेजनी ऊ पीछा ना छोड़लस। उहां त मालिक देखा के सत्तू देत हलन रउवा लोगिन त लुका के देइत हिय। ई रोटिया में सत्तूये न हेय। जवना डरे छोड़नी भतार, ओहि से बढ़के निकलल इयार। हम न रहब इहां भोरे गांव चल जायब।ई सुनिके संउसे घर के हँसत-हँसत पेट फुल गइल। खान-पान के रुचि क्षेत्र विशेष के अनुसार बदलत रहेला। मगहिया पान आ भोजपुरिया फुटेहरी के सवाद गजबे नूं बा जेकर कायल देस-विदेस सभे बा।तब त फुटेहरी आजु लिट्टी-चोखा के रूप में फुटपाथ से लेके सात

www.bhojpurisahityangan.com

सितारा होटल तक उपलब्ध बा आ इंटरनेशनल रूप ले लेले बा। सादी-वियाह, जन्मदिन भा कवनों फंक्शन होखे घर के लिट्टी-चोखा के स्टाल पर सबसे बड़ लाइन खाए वाला के।बस स्टैंड, स्टेशन, हवाई अड्डा जहाँ खोजीं आज लिट्टी चोखा हाजिर बा सेवा में।

समय के साथ बदलाव प्रकृति के नियम ह। संस्कार, संस्कृति आ अध्यात्म में बदलाव दृष्टिगोचर बा त खान-पान कइसे अछूता रह जाइत। फुटेहरी भउरे आड़ा के चीज ह। बाकिर आजु भाप, ओवन, कड़ाही में छानल-पकावल जा रहल बा। बनाईं जइसे मन करे बाकिर भउर के पकला जस सौंधापन कहाँ से आई? ऊ सवाद कहाँ पाई? दूसर जवन नाम देदीं ओकरा के फुटेहरी ना कहाई? फुटेहरी के बदलल रूप लिट्टी, बाटी ह ओह में ऊ स्वाद नइखे नूं जे फुटेहरी में रहेला।तब नूं हम कहींना -

गजबे स्वाद फुटेहरी के, ह भोजपुरिया के जान
इयाद करीं पंचकोसी के, फुटेहरी के देखीं मान ।

एगो भोजपुरिया कहावत ह 'रामा गति डेहरी, साँझि के फुटेहरी'। खेत आ माटी से जुड़ल हिन्दी आ भोजपुरी के नामी साहित्यकार हवें सुरेश कांटक। उहां के एगो कहानी पढ़त खा आजु एह कहावत के पढ़नी त मन सोचे खातिर बाध्य हो गइल कि किसान समस्या कहानी के मूल बा त नाम कहानी के काहे 'फुटेहरी'। उहां के कहानियों से फुटेहरी आ माटी जस सौंध गमक उठेला। एकर कारण कुछ अउर ना एगो भोजपुरिया संस्कृति से जुड़ाव बा।उहां के हिन्दी के एगो प्रसिद्ध कहानी ह 'फुटेहरी'। ओह कहनियो में फुटेहरी के सवाद के वर्णन खूब मिलत बा। कहानी के नायक-नायिका से अधिका फुटेहरी बनावे के कहत बा कि राति के खाना से बांची त सबरे के पनपियाव में काम आई काहे कि फुटेहरी में गरमा-गरम भा बासिये में सवाद रहेला। कहानी के अंत में पति-पत्नी आ बेटा के आपसी मनमुटाव प्रेम में बदल जाता फुटेहरी बनावे-खाये के बहाने।फुटेहरी में बहुत गुण होला आ सवाद गजबे के। इहे देखत भगवती प्रसाद द्विवेदी जी फुटेहरी के सवाद के सरताज के संज्ञा देले बानीं। अतने ना ओकर गुण बखानत कहले बानीं कि 'फुटेहरी के गुन त गूंग के गूर नियर होला, जवना के सबद में बयान भा बखान ना कइल जा सके। जे एक बेरि फुटेहरी खा ली, ऊ एकरा के कबो ना भुलाई आ बेरि-बेरि खाइल चाही'। अतनो कहला पर द्विवेदी

www.bhojpurisahityangan.com

जी रूकत नइखीं आ कहत बानीं कि 'सांचो, फुटेहरी रे, तोर गुन गूथबि माला!'। मकई के गुण भले खूव गवाईल बा बाकिर हम कहब कि फुटेहरी के गुण गइले विना भोजपुरिया संस्कृति के बखान अधूरा रह जाई। फुटेहरी एगो अइसन व्यंजन ह जवन रउवा चम्मच से ना खा सकेनीं। हाथ से खाइके देखी के अंगुरी चाटत रह जाइब आ जे देखी ओकरो मुंह में पानी आ जाई। आजुओ फुटेहरी के प्रोग्राम घरे बा।घरनी आड़ा बोझि लिट्टी-चोखा के तइयारी में लागल बाड़ी। घीव घरे के बा। साथे आम के आचार, धनिया के चटनी, मुरई, हरियर मरचाई आ पियाज। रउवा सुनी के मुंह में पानी आ गइल नूं। मन जनि रोकीं। रउवो फुटेहरी के जुगाड़ में लागीं भाई जी। इयाद दिआवत इहे कहब -

फुटेहरी देखे में गोल-गोल, देसी घीव में चमकत,
सोन्ह सुगंध वाला ब्यंजन, देखि के मनवा ललचत
आचार, चटनी, पियाज, मरचाई संगे खूब भावेला
गजबे सवाद फुटेहरी के, दूर से सोन्ह बा गमकत।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य में देशज आधुनिकता

1. देशज आ देशज आधुनिकता :

भोजपुरी साहित्य में देशज आधुनिकता पर बतकही के पहिले देशज आधुनिकता के समझ लेल जरूरी बा। देशज शब्द स्थानीय भाषा के शब्द होला जे देश के विभिन्न बोलियन से लेल जाला, माने तत्सम् शब्द के छोड़ के देश के विभिन्न बोलियन से आइल शब्द देशज शब्द कहाला। आवश्यकता अनुसार एकर प्रयोग कइल जाला आ बाद में प्रचलन में आके हमनीं के भाषा के हिस्सा बन जाला।

आधुनिकता के प्रसंग में ही 'देशज आधुनिकता' के चर्चा कइल जाला। 'देशज आधुनिकता' के शाब्दिक अर्थ देश में उत्पन्न आधुनिकता। तब भारत के प्रसंग में ई प्रश्न कइसे हल होखी कि भारत में उत्पन्न आधुनिकता के पड़ताल कवन मानकन पर होखी? भारतीय आधुनिकता के कवन नया परिभाषा गढ़ल जा सकेला जेकरा आधार पर यूरोपीय आधुनिकता से अलग किस्म के आधुनिकता भारत में तलाश कइल जा सकेला? आधुनिक समय में वैयक्तिकता, स्वतंत्रता, समानता, न्याय और राजनीतिक चेतना के समानांतर भारतीय आधुनिकता कवन नया मूल्य मानवता के प्रदान कइले बा भा एह संबंध में कवन नया संकल्पना प्रस्तुत कइले बा, एकर आलोचनात्मक विश्लेषणो प्राप्त नइखे होत। अइसन अनेकन प्रश्न के उत्तर मिल सके, ओइसन कवनो उच्चस्तरीय अकादमिक कार्य जल्दी देखे के ना मिले। तब एह स्थिति में का ई कहल उचित होखी कि महान परंपरा के नाम लेल अउर बात बा आ ओकर वास्तविक समझ आ पड़ताल अउर बात।

इहां हम कहल चाहब कि देशज आधुनिकता कब आ कइसे सामने आइल भा औपनिवेशिक आधुनिकता के कवन बिन्दुयन से ओकर विरोध बा ई अबहीं तक स्पष्ट नइखे हो पावत। बाकिर अतना त स्पष्ट बा

www.bhojpurisahityangan.com

कि एकर अर्थ आ अभिप्राय ओह सामाजिक आ एतिहासिक परिस्थितियन से अलग बा जेह में प्रबोधन, औद्योगिकरण आ पुनर्जागरण के संगम से आधुनिकता के शुरुआत मानल जाला। तब प्रश्न उठत बा कि हर देश आ समाज में आधुनिकता के उद्भव आ विकास एके तरह से कइसे हो सकेला? भोजपुरी साहित्य में देशज आधुनिकता पर विचार भोजपुरिया लोक के आ भाषा के विकास के आलोक में करे के होई। डॉ रमेश कुंतल मेघ कहले बाड़ें कि 'सामान्यतः आधुनिकीकरण आर्थिक क्रांति से जुड़ता है। आधुनिक बोध दार्शनिक दृष्टि से तथा आधुनिकता सामाजिक-सांस्कृतिक समग्रता का पुंज हो जाती है। जिस मात्रा में तथा जिस गति और कोटि वाला आधुनिकीकरण होगा, बहुदा उसी अनुपात में आधुनिकता का भी अन्वयन होता है। व्यापक आधुनिकीकरण तथा समाजिकृत आधुनिकी की समस्या को एक ओर राष्ट्रीय संस्कृति के प्रश्न से जोड़ सकते हैं तो दूसरी ओर समाज के आधुनिकीकरण से। इसलिए आधुनिकता एक विचार-विधि, एक व्यवस्था की समग्र धारा, एक चिंतन पद्धति, एक वृति भा मूल्य चक्र में अभिहित होती है।' कहे के माने कि आधुनिकता एक साथे मूल्यबोधी आ कालबोधी दूनों होला। साहित्य के अविरल प्रवाह में आधुनिकता एगो जरूरी प्रकिया ह त देखे के होखी कि समाज आ देश में बदलाव के भोजपुरी साहित्य कतना आत्मसात कइले बा? उत्तर जे सामने आवे बाकिर ई कहे में कवनों संकोच ना होखी कि आधुनिकता हमनीं के विकास में बाधक बने वाली रूढ़ियन के नकारे में एगो मजबूत औजार के काम करेला। एकर प्रमाण भोजपुरी साहित्य के आदि कवि कबीर, रैदास, धरनी दास से लेके आजुवो सृजित हो रहल भोजपुरी साहित्य बा, अपवाद सगरी होला भोजपुरियो में मिली एह से इंकार ना कइल जा सकेला। आधुनिकता धरम-जाति के अस्वीकार करेला आ श्रम के महत्ता के स्थापित करेला। ई एगो कठिन काम ह बाकिर भोजपुरी साहित्य एही लक्ष्य लेके आगे बढ़ल बा आ बढ़ि रहल बा एकरा के स्वीकार करेके पड़ी। राजीव सक्सेना के कहल ह कि 'आधुनिकता कोई इम्पोर्टेड लबादा नहीं है, जिसे ओढ़ने मात्र से काम चल जायेगा।यह एक जीवन मूल्यों संबंधी अनिवार्यता है, जो सारे सामाजिक संबंधों को तोड़ रही है, स्वयं उसके अंदर से जन्म ले रही है।' ई एगो जटिल प्रक्रिया है बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

एह चुनौती के स्वीकार करे के पड़ी जे समाज आ साहित्य दूनों के हित में होखी। देशज आधुनिकता अस्मितावादी विमर्श से कहीं ना कहीं कवनों रूप में जुड़ल बा। स्थानीयता आ आंचलिकता संबंधी वहसों से ई अछूता नइखे। चार कोस पर वाणी बदलेला ई हमनीं के जाननीं जा आ आजुवो एकर प्रभाव भोजपुरी साहित्य के लालित्य बढ़ावे में कारगर बा भले मानकीकरण में एह से दिक्कत आ रहल बा। डॉ शुकदेव सिंह लिखले बाड़ें कि 'कवीर ने शास्त्रानुरागी साहित्य रूपों के व्यर्थता को समझते हुए ही लोक-काव्य विधाओं का प्रयोग किया था। उन्होंने शब्द, काव्यरुप, छंद सभी कृतित्योन से साहित्य को जन साहित्य बनाने का प्रयत्न किया था। इस तरह उन्होंने जनता के साथ होने की कोशिश की। सम्प्रेषण के लिए किया गया उनका सारा चयन उनकी प्रतिबद्धता के क्रम में है। यह कोई साधारण काम नहीं है।' देशज के बल पर कवीर संत-शक्ति के एगो नया अर्थ अउर नया महिमा प्रदान कइनीं। एकरा के आधुनिकता के भारतीय भा देशज दृष्टि के ताकत कहल जा सकेला। कहल जा सकेला कि हमनीं के उहे देशज आधुनिकता स्वीकार करे के होखी जे हमनीं मनई आ समाज व्यवस्था समझ सके, ओकरा के पोषण कर सके, भाषा के समृद्ध कर सके आ एहि परिपेक्ष्य में भोजपुरी साहित्य में देशज आधुनिकता पर विचार होखे चाहीं।

हमनीं के देश के विकास पछिम के विकास से हट के भइल बा, भले आजु हमनी के पछिम के विकास के पीछे आंखि मूंद के भाग रहल बानीं जा। हमनीं के समाज पछिम से भिन्न रहल बा। हमनी के जवन आधुनिकता से परिचित हो रहल बानीं जा ओकर जन्म स्वाधीनता आंदोलन आ नव जागरण के कोख से भइल बा जेकरा में राष्ट्र के अवधारणा आ राजनीतिक-सांस्कृतिक एकता शामिल बा। भोजपुरी साहित्य में रघुवीर नारायण सिंह के 'बटोहिया' आ प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद सिंह के 'फिरंगिया', महेंद्र शास्त्री के 'किसनवाँ' एकर उत्कृष्ट उदाहरण हमनीं के भोजपुरी साहित्य में बा। श्रम के महत्ता के अवस्थितियन, लोक से जुड़ल कृतियन भोजपुरी साहित्य में अन्तग्रर्थित बा। भोजपुरी साहित्य देशज आधुनिकता आ अनिवार्य समाजैतिहासिक परिपेक्ष्य के अपना में भरपूर समाहित कइले बा। देशजता आपन संस्कृति के संवहन आ रक्षण करेला। देशीकरण के प्रकिया कबो रूके ना भले गति कम-बेसी होला। विदेशी

www.bhojpurisahityangan.com

संस्कृति के देशी संस्कृति में विलय ओकरे अंग ह। हमनीं के आजु के समस्या कवीर-तुलसी के साहित्य में देख लीना जा त ई दृष्टि के आधुनिकता ह उहो खांटी देशज। भोजपुरी साहित्य के भंडार बहुत विस्तृत बा हमरा जस अल्पज्ञ के भोजपुरी साहित्य में देशज आधुनिकता के पूर्ण रूप से समेटल एहिजा संभवो नइखे।हम संक्षेप में कबीर के भोजपुरी रचनन में आधुनिकता पर आपन वात एहिजा रखे के एगो छोट प्रयास कइले बानीं।

2. कबीर के रचनन में आधुनिकता :

कवीर के रचनन के आधुनिकता के संवंध बाजार, व्यापार आ आत्मवोध से कम बाकिर वर्ण-भेद, सामाजिक समानता, धार्मिक कर्मकांड, सामाजिक अंधविश्वास आ साम्प्रदायिकता-विरोध से अधिका बा।जदी आधुनिकता धरम के अस्वीकार करेला त कहे के होई कि कबीर धरम के नया अर्थ देत बाड़ें। कवीर के आधुनिकता देशज बा ना कि पछिम के अनुकरण। कवीर के दृष्टि आधुनिकता के प्रक्षेपण करत गांव के निवासी किसान के दुख, सामंतन के कर्मी के ज़ुल्म के बयान करत कहत बा -

अब ना बसूँ इहि गाँव गुसाईं
तेरे नेवगी खरे सयाँने हो राम।
नगर एक तहाँ जीव धरम हता बसै जु पच किसानाँ।
जैनूँ निकट-श्रवनूँ रसनूँ इन्द्री कह्या ना मानै हो राम।
गाँइ कु ठाकुर खेत कु नेपै काइथ खरच न पारै।
जोरि जेवरी खेति पसारै सब मिलि मौकाँ मारै हो राम।
खाटी महतौ बिकट बलाही, सिर कसदम का पारै।
बुरौ दिवाँन दादि नहीं लागै, इक बांधै इक मारै हो राम।

एहिजा देखल जा सकेला कि 'औपनिवेशिक ज्ञानकांड' के प्रभाव से पहिले कवीर ओह ज्ञानकांड तक पहुंच चुकल बाड़ें। कबीर जब अपना समय के चित्र खींचले त लागत बा कि अंग्रेजी शासन के चित्र खींच रहल बाड़ें। कवीर के ई बात एह बात के प्रमाण बा कि कबीर समय के गति आ

www.bhojpurisahityangan.com

इतिहास के परिवर्तनशीलता दूनों से परिचित वाड़ें।

कवीर आम जन के जागरूक बनावे के प्रयास कइले बाड़ें आ कहत वाड़ें कि -

कहा नर गरबसि थोरी बात।
मन दस नाज टका दस गांठिया टेढ़ों टेढ़ौ जात।
कहां लै आयौ यहु धन कोई, कहां कोऊ ले जात।
दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूँ बनि हरियलपात।
राजा भयौ गांव सौ पावे, टका लाख दस बात।
रावन होत लंका को छत्रपति, पल में गई विहात।

साधारण अर्थ में ई पद सांसारिक सुख, धन, संपत्ति के अर्जन के प्रतिवाद करत बा बाकिर कवीर ओह समय के परिस्थिति में पूँजीवाद के मानसिकता आ सच्चाई दूनों के विरोध करत बाड़ें।

कवीर कहले बाड़ें कि -

संतो सो अनभै पद गहिये।
कल अतीत आदि निधि निरमउन ताकूँ सदा विचारत रहिये।
सो काजी जाकौ काल व्यापै, सो पंडित पद बूझै।
सो ब्रम्हा जो ब्रम्ह बिचारै, सो जोगी जग सूझै।
उदै न अस्त सूर न ससिहर, ताकौ भाय भजन कर लीजै।

कवीर एहिजा पंडित आ मौलवी के आलोचना के बहाने ओह घरी के समाज के चित्रण करत देशज आधुनिकता के तत्व के स्पष्ट करत बाड़ें।

विष्णुकांत शास्त्री लिखले बाड़ें कि 'कबीर की भूमिका ऋषि, जो प्रयोजन पड़ने पर प्राचीन को अस्वीकार कर नवीन विधान की क्षमता रखता है, पुरोहित की नहीं, जो प्रायः अपरिवर्तनवादी और प्राचीन विधानों का अंधानुयायी होता है। ऋषि परमतत्व का स्वयं साक्षात्कार करता है एवं अन्य को करने का प्रेरणा देता है। जबकि पुरोहित सामान्य जन और देवी-देवताओं के बीच मध्यस्थता बना रहना चाहता है और इस मध्यस्थता के द्वारा जीवन-यापन करता है। पुरोहित जैसा कोई निहित स्वार्थ न होने के कारण ऋषि अर्थहीन बारहाचारों के प्रति विद्रोह कर युगानुरूप विचार एवं आचार का प्रवर्तन करता है।' बाकिर गहन विचार कइला पर देखब की कबीर एगो ऋषि ना एगो श्रमिक रहन आ आध्यात्मिक पुरुष रहन। कबीर

www.bhojpurisahityangan.com

के साहित्य पर पछिम के भौतिकवाद हावी नइखे रहल बाकिर देशज आधुनिकता के दर्शन स्पष्ट परिलक्षित होला।

आधुनिकता अपने आप में कवनो एक मूल्य के संवाहक ना होखे एह से ओकरा के सार्वभौमिक ना कहल जा सकेला। कबीरो के संबंध में एकर विवेचना करत घरी विशेष सजगता के जरूरत बा।बारिक विवेचना कइला पर पाइब कि कबीर के आधुनिकता के संबंध देशजता से स्थापित कइल जा सकेला। सांच कहल जाए त अर्थव्यवस्था आ सामाजिक व्यवस्था से सामंजस्य स्थापित करिये के कवीर के आधुनिकता के समझल जा सकेला। कवीर के भाषा विशुद्ध देशी बा।ओह पर फारसी आ संस्कृत के प्रभाव दिखाई ना पड़े।एह भाषा सब के जवन शब्द कबीर साहित्य में आइल बा ऊ देशज बन गइल बा।

कवीर ईश्वर के संबंध में जे स्थापना देले बाड़े ओकरा में उनुकर आधुनिक दृष्टि बोध देखल जा सकेला –

मोको कहाँ ढूंढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना तीरथ में, ना मूरत में, ना एकांत निवास में।
ना मंदिर में, ना मस्जिद में, ना काबा कैलास में।
ना मैं जप में, ना मैं तप में, ना बरत उपवास में।
ना मैं क्रिया करम में रहता, नाही योग संन्यास में।
नहीं प्राण में, नहीं पिण्ड में, ना ब्रम्हांड अकास में।
ना मैं भृकुटी भंवर गुफा में, सब श्वासन के सांस में।
खोजी होय तुरत मिल जाऊं, एक पल के तलास में।
कहै कबीर सुनो साधो, मैं तो हूँ विश्वास में॥

कवीर के रचनन से गुजरला पर लोकभाषा के प्रति उहां के लगाव स्पष्ट देखे के मिलेला।ई लगाव देशज आधुनिकता के अवयव ना ह त का ह? ई देख कबीर साहित्य के देशज आधुनिकता से सम्पन्न साहित्य कहल जाई त का कवनो गलती होखी? कबीर के रचना में देशज आधुनिकता के सवाल के विवेचना अतना आसान नइखे जतना देखे में भा कहे में लागत बा। कबीर अपना समय के एगो उपदेशक से अधिका यथार्थ के अभिव्यंजक के रूप में सामने आइल बाड़ें।इहो रूप उहां के आधुनिक सिद्ध करेला। आगे बढ़ के ई कहल शत प्रतिशत सही होखी कि कबीर के

www.bhojpurisahityangan.com

रचना देशज आधुनिकता के आवरण में दार्शनिकता के अपना में समेट लेले बा।इहे कबीर के आधुनिक चेतना आ देशज आधुनिकता के अकाट्य प्रमाण बा। अंत में एकरे के देखत कहब कि -

देशज बोलियन में
रचल साहित्य / संवेदना स्तर पर
लोक से / मनई से
मानवता से / जुड़ल रहेला

प्रत्येक रचना में / कहीं ना कहीं
कवनो ना कवनो रूप में
आधुनिकता भेंटाई
देशज आधुनिकता भेंटाई

कबीर के रचना
धर्म-जाति-साम्प्रदायिकता
के सामाजिक कोढ़
के उपचार ह / ढाई आखर
प्रेम के पाठ
मानवता के विस्तार ह
ई कुल आधुनिकता ना त / का हऽ?
देशज आधुनिकता ना त / का हऽ?

देशज / शुद्ध घीव ह
रिफाइंड ऑयल
ना ह / रचीं आ बसीं
देशज के साथ
प्रतिफल
स्वस्थ आ सुंदर
समाज आ साहित्य।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

फुसलावे के खेल में सभे अझुराइल

– कनक किशोर

फुसलावे के खेल जिनिगी भर चलेला मनई के जीवन में।एकरा के भरम आ सांच के बीच बढ़ि रहल जीवन पथ के अध्यात्म के सांप-रसरी से तुलना कइल जाए त कवनो गलत ना कहाई। जन्म से मुए के दिन ले ओसहीं मनई जोरे फुसलावे के खेल चलेला जइसे सांस के साथ आस चलेला। आसे नू जीवन ह।आस टूटते जीवन बिखर जाला। ओहि बिखराव के संभाले खातिर फुसलावे के खेल शुरू होला जे कब्वो बिखरे से बचा लेला जीवन के त कब्वो अइसन तुड़ देला जे जोड़ले ना जुटे। फुसलावे के खेल के साकारात्मक आ नाकारात्मक दूनों पक्ष बा। फुसलावे के खेल भरम के जाल में विना दाना डलले फंसावें के मनोवैज्ञानिक खेल कहल जा सकेला जहाँ भरम शब्द जाल फैला, कुछ हाव-भाव से कबो प्यार से त कबो डरवा के पैदा कइल जाला। तसल्ली देल, दिलासा देल, टाल-मटोल कइल, धोखा देल, फ़रेब में बझा के रखल, बाति से खुश कइल भा बाति में बझा के रखल, मन के बहलावल, झूठ आस जगावल सब फुसलावहीं के अंग ह।

फुसलावे के खेल जन्म लेते शुरू हो जाला। लइका के चटनी चटा के फुसलावे के काम माई चारे-छव माह से शुरू कर देले। फुसलावे के कामो एगो कला ह जे सब के ना आवे। एकरो खातिर बुद्धि के जरूरत होला। कहीं पढ़ावल ना जाला फुसलावे के पढ़ाई। स्वतः स्फूर्ति होला फुसलावे के तरीका मन के भीतर। अइसे अव तक लोग फुसलावे के पढ़ाइयो शुरू कर देले बा 'प्रबंधन' के नाम से। विपणन के दुनिया में आजु एकर खूब महत्व हो गइल बा आ बाजार कहँवा नइखे घर-बाहर। बाजारवाद आ विज्ञापन के दुनिया त टिकले बा फुसलावे के सिद्धांत पर बाकिर अव त सत्ता में खुल के ई खेल हो रहल बा चुनाव से लेके गँठबंधन के जाल बुने तक। साहित्य जगत में प्रकाशक लेखक के फुसलावे में लागल बा त शिक्षा जगत में फुसला के अंधा थोपी, राजनीति में टोपी पहिरावे के त खेल पुरान ह। ई देखि बाबा कहत रहन कि फुसलावे के खेल से अलग कर

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी के ना देखल जा सकेला। अउर त अउर दोसरा के का कहल जाव मनई अपनो के फुसलावे से बाज ना आवे। ईश्वर रचलन माया के मनई के जग जंजाल में फंसावें खातिर फुसला के आ मन रच देलन खुद के आ जगत के फुसलावे खातिर।

एगो जगह ना मिली दुनिया में जहाँ फुसलावे के खेल नइखे चलत। तनी सा लइका सरेख होके अवहीं टुमकी के चलत ठीक से नइखे कि चान के मामा बता माई चानी के कटोरिया में दूध-भात मंगा खिआवे लागत बिया आ गिर गइला पर धरती माई के लतियावत बिया आपन लाल के फुसलावे खातिर। घर में अनाज के एगो दाना ना आ माई के दिलासा कि आजु खा ले जो मिलत बा, जे सामने बा काल्हु मालपुआ बना देब।नखरा कइला पर थप्पड़-मुक्का के डरो दिखावे में तनिका ना देर। प्रेम आ युद्ध जस फुसलावे के नीति में सब जायज़ होला। मलिकार आ बनिहार के बीच आपन-आपन काम निकाले खातिर कब्वो झूठ के वादा त कब्वो प्रलोभन के दिलासा के नीति त पुरान ह। किसान आपन धनिया के अगहन के करारे साड़ी आ गहना के भरोसा त पुरुब गइल परदेशिया होली-छठ में आवे के असरा के साथ सपना के गंठरी ले आवे के दिलासा देले रहेला।बाकिर किसान के जिनिगी में ना अगहनुआ भोर भेंटाला आ ना किसानीन के अगहनुआ आस पूरला। परदेशिया के कबो रेलिया वैरी त कबो छूट्टी ना मिले के बहाना अपना धनिया के फुसलावे के काम आवेला। फुसलावे के खेल में देर-सबेर सच्चाई सामने आ जाला। चतुर बनलका आ फुसलावल तब भारी पड़ जाला जब धनिया सेजिया पर अंगुरी ना अंगुठा दिखा देले आ बोलले कि भले हम अनपढ़ बानीं बाकिर हम छवमहीनवा ना हईं कि राउर फुसलवलका आ झूठ दिलासा ना समझीं।ई त भइल पति-पत्नी के बीच के स्थिति जे सब जानियो गइला पर सामंजस्य बइठा जिनिगी के गाड़ी पटरी पर ले जाए के हरसंभव कोशिश से बाज ना आवे।बाकिर हग डे, प्रपोज डे, रोज डे के राही लोगिन त एक दूसरा के फुसला-बहला के झूठे दिलासा के बल पर जिनिगी के राह पर बिना ब्रेक के गाड़ी अस बढ़त रहेला आ जब सच्चाई सामने आ जाला त आकाश के टूटल तारा अस एक झटका में एक दूसरा से अलग। गोड़ के नीचे ना धरती रहे ना माथ ऊपरे आसमान, त्रिशंकु स्थिति में इयाद रह जाला

www.bhojpurisahityangan.com

खाली एक दूसरा के ठगलका, फुसलवलका। प्रेम समर्पण के चीज ह, ठगी आ फुसलावे के कवनो जगह ना होखे ओह में। देह के प्रेम असहीं बदनाम नइखे नूं। प्रेम पूजा ह काम ना बाकिर देह के नेह में फंसल युगल जबले ई समझ पावे ओकरा पहिले प्रेम पथ से विमुख हो जाला। ठोकर सीख देला बाकिर आजु के संतति पछिम के प्रभाव में आपन संस्कृति आ संस्कार भुला फेर बढ़ि जाला प्रेम करे आ नया फरेबी प्रेमी के खोज में। कबीर के ढाई आखर आ मीरा के प्रेम के अर्थ बुझे के प्रयास ना करि देह के आकाश में प्रेम के जोन्ही जड़े के कोशिश में लागल रहेला। आभासी दुनिया आजु फुसलावे के तरीका तेजी से परोस रहल बा जेह में युवा वर्ग त छोड़ीं प्रौढ़ आ वृद्ध फंसि के जीवन में जहर घोल रहल बा सुख के चान उगल सूरज के रहते उगावे खातिर। अपने नइखे बुझात त अपना से बड़का के अनुभव के लाभ ना लेके गूगल बाबा आ एआई काका से सलाह लेता। हाल ई वा कि बावा के बाति पर पोता के बिसवास नइखे ऊ बाबा के गूगल ज्ञान के सहारे समझावे के प्रयास करत बा कि बाबा आप फुसलावे के प्रयास जनि करीं हम सत्य से अवगत बानीं।आप आपन अनुभव ताखा पर रख दीं आ समय के साथ चलीं गूगल के साथ, डिजिटल युग में जीहीं। ढेर फुसलवले बानीं हमरे के ना हमार बाबूयो जी के अब हमार बारी बा आपके समय गइल। इतिहास दुहरावेला अपना के समय साक्षी रहल बा। गूगल बाबा के ज्ञान के बदौलत हमहूं फुसलाइब आ ना मानब त फुसला के वृद्धा आश्रम पहुंचाइब।

समाज में फुसलावे के खेल आजु आम हो गइल बा। सासु पतोह के, पतोह सासु के, ससुर दमाद के, ननद भउजाई के, भउजाई ननद के, सरहज के बहनोई, साली बहनोई के, माई बाबू के, बाबू माई के, केकर केकर नांव गिनाई सभे एक-दूसरा के फुसलावे में लागल बा। नारी के पुरुष त फुसलाई के रखवे करेला अपना देह सुख खातिर आ जरूरत पड़ला पर नारी के फुसलावे के सामग्री के रूप में उपयोग करे में पीछे ना रहे। सामाजिक रिसता के मिठास बनल रहे फुसलावे के बहाने त का गलती बा एह में बाकिर फुसलावे के सामग्री के रूप में केकरो उपयोग त गलत कहइबे करी। बाकिर धरम के करम में फुसलावे के खेल होखी त बताईं सत्य कहाँ भेंटाई? गुरु चेला के फुसलावे में त चेला गुरु के गुड़ बना

www.bhojpurisahityangan.com

अपने चीनी वने में फुसलावे के जम के उपयोग कर रहल बा। एही खेल के नतीजा बा कि झूठ सांच पर भारी आ धरम के बाजार में मारा-मारी। नामो दान दिआत बा दाम के करारी आ सब खेल देखत बाड़े आंखि पसारि बनवारी।

आज धरम में धन के दुकनदारी, सेठ घरे सरकारी कर्मचारी संग नेता जी के सवारी नजर आवत बा त का अचरज रे भाई। सरकारी कर्मचारी, नेता आ बैपारी के जिम्मे त फुसलावे के मंत्रालय के प्रभारे बा एही करारे की लाभ में बरावर के हिस्सेदारी। राजनीति में फुसलावे के खेल में जाति, वर्ग, वर्ण, मजहब, पंथ, क्षेत्रीयता आदि पार्टी आ कुर्सी हित या स्वार्थ के सब से बड़ कुंजी हो गइल बा। जाति, वर्ग, वर्ण, मजहब, पंथ, क्षेत्रीयता आदि के संकीर्ण चेतना लोगिन के बहुत जल्दी उत्तेजित कर देला ई सही बा बाकिर ऊ लोकचेतना के खंडित कर देला जे लोकहित आ देशहित में ना होखे। सत्ता के फुसलावे के खेल में बंट रहल रावड़ी वोट खातिर जरूर कारगर बा बाकिर लोग के निकम्मा आ वेरोजगार बना रहल बा। देश के रीढ़ लोकमानस अउर लोकचेतना के विभक्त कर रहल बा। फुसलावे के खेल के सरोकार निजी लाभ से जुड़ल रहेला ओह में भय आ लालच होला एह से लोक चेतना के भाव ना होखे। सात्विकता के आभाव होखला से राजस आ तामस बढ़ जाला जे अहम के जन्म देला। आजु देश के राजनीति में पार्टी लाइन से हट के सबके मैनिफेस्टो में फुसलावे के मंत्र सबसे अधिका माने रखत बा आ एह खातिर तंत्र के उपयोग खूब हो रहल बा जनतंत्र से का लेना-देना। अन्न, धन, डिजिटल गैजेट खुलेआम देवे के वादा वोटर के फुसलावे खातिर, मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, कर्ज माफी के खेल खुलेआम चुनाव में चल रहल बा जेह पर चुनाव आयोग भा कवनो पार्टी के आपत्ति नइखे ना एकरा के गलत कहल जा रहल बा तब वोटर के चावल-मुर्गा-शराब-रुपया परोसल कइसे गलत कहाई। फुसलावे के खेल के कानूनी जामा पहना दियाइल बा जे पक्ष-विपक्ष के सर्वमान्य बा। सुननी ह कि संसद के शीतकालीन सत्र में फुसलावे-बहलावे के नीति निर्धारण खातिर बिल आ रहल बा आ ओकरा से कवनो पार्टी के विरोध नइखे आ ना पत्रकार लोगिन के। कुछ साहित्यकार लोगिन अपना रचना के माध्यम से विरोध कर रहल बा जेकर असर ना सरकार पर बा ना समाज पर।

www.bhojpurisahityangan.com

असहूं साहित्यकार लोग आजु हाशिया के सामग्री बन के रह गइल बा। बाकिर आजु के समय हाशिया के आवाज के अनदेखा ना करे के चाहीं। शोभा अक्षर के शब्द त फुसलावे वाला के अहंकारी के संज्ञा देले बाड़ी।ऊ कहत बाड़ी कि -

फुसलाने वाले -
सभी 'फुसलाने वाले'
अहंकारी होते हैं
वे एकजुट होकर काम करते हैं
एक-दूसरे को महान मानते हैं
'फुसलाने वाले' अहंकारी ना दिखने का
भ्रम पैदा करते हैं

लेकिन
सभी अहंकारी
'फुसलाने वाले' होते हैं

छोट कविता में गहिर बाति कइल गइल बा, बहुत कुछ छुपल बा, बहुत कुछ खुलल बा, फुसलावे वाला के बेनकाब कइल गइल बा कविता में। तवहूं कहब कि एह श्रेणी में अधिक लोग हो सकेला बाकिर सब फुसलावे वाला अंहकारी ना होखे, हँ भरम सब पैदा जरूर करेला। फुसलावे वाला में ममता, प्रेम आ अपनापन के पोषको होला आ ऊ भरमो पैदा करेला हित में आ प्रीत में। एह से जरूरी नइखे जे फुसलावे वाला होखे ऊ अहंकारी होखे।ई देखत कहे के पड़ी-

वजरिया के नीति में सांच ई कहाई /लोक नीति में ई सांच ना ह रे भाई/जग में एकरे नांव पर होता खूब ठगाई/ बाकिर जे ना खुद के फुसलाई ऊ नायक बन जाई।

फुसलावे के इतिहास मानव के इतिहास से जुड़ल बा। वेद-पुराण गवाह बा आ मनु के वंश जवले चली तवले फुसलावे के खेल चली। हमरा ना आवे फुसलावे ई सब लोग जानेला घर-बाहर। ई देख तिवारी जी काल्हु

www.bhojpurisahityangan.com

फोनिअइले कि अब त गाल बजावे के सीखीं महराज। गाल ना बजाइब त लोगिन के कइसे वहलाइब-फुसलाइब। तिवारी जी के ई भांति मति में नइखे घुसत। उजबुजाइल मन उदास हो गइल। चेहरा देखि आ बाति बूझ के मलकिनी कहली ससुरारी में साली-सरहज राउर इहे लक्षण देखि ना सटली सं, साहित्यो में किनारे फेंकाइल रहब तिवारी जी के बात छोड़ीं हमहूं कहब गाल बजाईं आ फुसलाईं तबे मंच पर रचब-बसब, देखत नइखीं कवि सम्मेलन में गाल बजावे वाला के पूछ बा, माला सम्मान सब ओकरे नांवें। ई सुनते बोल देनी कि फेर तोहरा हमरा में का फरक रह जाई। रनिवास त बा ना घरनी अपना शयनकक्ष में खिसिया के पड़ल वाड़ी, चूल्हा उपासे बा आ हमहूं। उनुका के फुसलावे के तरीका के खोज में अझुराइल बानीं बाकिर दिमाग काम नइखे करत। ई रउवा के बतवला से का फायदा रउवा त खुदे गुगल बाबा के चक्कर में पड़ल बानीं आपन घरनी के मनावे के तरीका के खोज में।

ई सब देखि अंत में कहब कि -

फुसलावे के खेल कवनो नया ना पुरान ह
जिनिगी के संगे-साथे चले वाला कुरान ह
भरम के जाल बुने शब्द आ हाव भाव से
मानीं, जनि मानीं, सचहूं ऊ कला महान ह।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

हम एह तरह रहीं कि हमरा रहलो के अर्थ रहे

रूसो के कहल ह 'you are born free but you are everywhere in chains.' ई कथन मानव जाति खातिर कहल गइल बा। एह कथन में गहराई आ विस्तार दूनों बा। अध्यात्मिक अर्थ में मानव जीवन के सच्चाई इहे ह। नारी जीवन के सांसारिक सत्य इहे ह ई कहल जा सकेला ओकरा पर थोपल सामाजिक बंधन देखि के त कुछ गलत ना होखी। एह से बढ़ि के महिला खातिर सच्चाई ई ह कि 'you are born as child but society make you female for their own purposes.' स्त्री विमर्श कुछ अउर ना पुरुष वर्ग के सामने स्त्रीयन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक आ लैंगिक समानता खातिर उठावल आवाज के नाम ह। परितोष बैनर्जी एह संवंध में कहले बाड़ें - 'नारीवाद एक विशिष्ट मतवाद है, जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि स्त्रियों को इस पुरुष शासित समाज में निम्न स्थान दिया गया है और पुरुषों के साथ समान अधिकार एवं प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। अन्य शब्दों में, नारीवाद उस प्रवृत्ति आ द्योतक है, जो लिंग पर आधारित पारंपरिक शक्ति- व्यवस्था का पुनर्विन्यास चाहती है।' समाज इक्कीसवीं सदी में आधी आबादी के एह समस्या से उबरल नइखे, ओकर आवाज के समाधान निकलल नइखे। उन्हिन के स्वैच्छिक, मनपसंद सहयोग आ सहभागिता नइखे मिलल आजु ले। आजुवो हमनी के समाज में शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, लोकतांत्रिक अधिकार, सुरक्षा आदि मामलन में ओहनी के हक जे चाहीं ऊ नइखे मिलल, जेकरा से अपना के ठगल महसूस करत बाड़ी सं। आधी आबादी एह असंतुलन, जोर-जवरदस्ती, पाखंड, उत्पीड़न, अन्याय आ हिंसा से त्रस्त बाड़ी सं। आपन पहचान आ सपना खातिर आजुवो ओकरा भीतर

www.bhojpurisahityangan.com

वेचैनी बा, छटपटाहट बा। ई समाज के लउकत बा बाकिर चुप्पी। एह सच्चाई के युवा स्त्री अब स्वीकार करे के तइयार नइखी सं। इहे स्थिति के, असंतोष के देखत युवा कवयित्री ज्योति रीता मनुष्यता के खेती समाज में कइल चाहत बाड़ी जहाँ सभका बरावरी के भागीदारी होखे आ आजु के एह असंतुलन के सामाजिक परिवेश के देखि एगो युवा स्त्री के मानसिकता सामने रखत कहत बाड़ी –

एक युवा स्त्री निगल लेना चाहती है
अपनी ग्रीवा में समस्त पुरुष सत्ता
ताकि जन्म दे सके समरूप सत्ता
बने नया इतिहास
लिखी जाए नई इबारत।

ओहि पहचान आ समता के खोज में नारी के जीवन संघर्ष बनि के रह जाला।सदियन से ई पहचान खातिर लड़ाई चल रहल बा बाकिर समाज नारी के देह में उलझि रह जाता,तेयाग अनदेखा रह जाता। नारी के देह के सुंदरता में भुलाइल पुरुष समाज ओकर जीवन संघर्ष अनदेखा कर देत बा। आपन देह के भूख ओकरा लउकत बा मेहररूयन के दुख ना। जेकर प्रतिफल बा कि समाज के अधूरापन दूर नइखे हो पावत।एक पक्ष ओकर सुंदरता में, भोग में भुलाइल रहत बा त दूसरका जीवन संघर्ष के रोना रोवत रहत बा तऽ स्वस्थ समाज के, पूर्ण समाज के परिकल्पना कइसे पूरा होखी? कवि नंद चतुर्वेदी मीरा के बारे में कहले बाड़ें 'प्रेम भी है और प्रज्ज्वलन भी' बाकिर ई कथन हर नारी के जीवन सत्य ह। मीरा के प्रेम अलौकिक ह जे नारी जाति खातिर दैहिक बन के रह जाला पुरुष के चलते आ ओकर तेयाग, संघर्ष, दुख, प्रज्ज्वलन के कारण बनि जाला जेकरा में जरत रहले उमिर भर, जिनिगी के अंत ले। नारी के अंदर के प्रज्ज्वलन कोइला के आंच अस धधके ना। ऊ बोरसी के आगि जस राख के अंदर गहराई में धीमे-धीमे सुलगत रहेला उहो बिना धुआं के। नारी के भीतर के प्रज्ज्वलन हमेशा बनल रहेला, कबो बुझाय ना। नारी पहचान खातिर ताउम्र रोशनी के तलाश में रहले बाकिर तम से बहरी ना निकल पावे।बेसी उचित ई होई कहल समाज ना निकले देवे। आजो देखे में आवेला कि ओकरा जीवन में रचल-बसल तम खातिर ओकर जातियो कम जिम्मेवार नइखे।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ अपना पहचान खातिर समता आ स्वतंत्रता के चाह रखलस, उहे ओकर लक्ष्य रहल बाकिर पुरुष वर्ग के ओकर बराबरी के बाति फुटलो आँखि ना सुहाला। वर्चस्व आजुवो मरद जाति के बा त मेहररूयन के खुला आकाश आ ओकरा हिस्सा के धूप कइसे मिली? ई देखि इहे बुझात बा कि आशा-निराशा के बीच फँसल नारी के जिनिगी के प्रज्ज्वलन के कारण समय, समाज आ पुरुष बेवस्था से उपजल क्लेश आ छल-कपट बा। सामाज के इहे सोच आ स्थिति देखि वैदेही आजुवो अपना जीवन मुक्ति के सपने ना देखि देह मुक्ति के सपना देखेली सं। देह मुक्ति के बिना जीवन मुक्ति संभवो नइखे।बदलत समय में ऊ सुतल नइखी सं। तम भरल जीवन में उजाला के रेखा खींचे के भरपूर कोशिश करत बाड़ी स, कहत बाड़ी स 'गा जिंदगी गा', आशा बलवती बा, देर-सवेर लड़ाई जीतऽब एकर विसवासो बा आँखिन में। बाकिर अपने जब हाथ छोड़ देला, उहे दुख के कारण हो जाला त आपसी रिसता के छद्म लोकतंत्र में अबला के सपना कइसे पूरा होखी। देश के संविधान त आधी आबादी के समता आ स्वतंत्रता के अधिकार देलेहीं बा बाकिर सहचर ओह समता आ स्वतंत्रता के लूटेरा बनल बा, भोग्या से, एगो वस्तु से ऊपर समझे के तइयार नइखे त नारी के स्थिति में इजाफा कइसे होखे? समाज आ धर्मगुरु के ई देखियो के चुप्पी के का कहल जाई, ई अब कहे के जरूरत नइखे बुझात हमरा काहे कि ऊ लोगिन चाहेला कि नारी का पहिने का ना पहिने, का करे का ना करे, कहाँ जाए कहाँ ना जाए, का बोले का ना बोले ऊ सब पर उन्हिन के अधिकार रहे। आज समय अइसन बा कि नारी स्वतंत्रता के बड़े-बड़े बात होता दिखावे खातिर बाकिर नारी के घर-बाहर स्वतंत्रता देवे के बात होता तब खानदान के इज्जत आड़े आ जात बा, खानदान के भविष्य के दारोमदार त मरदन के कान्हि बा। सांच त सांच होला। ओकरा के स्वीकार करे के चाहीं। दुनिया नारी शक्ति के बराबरी के बिना अधूरा बा।ई अधूरापन एह से बा कि हमनी के बनावल दुनिया ह। दुनिया बदले के होखी त बदलाव टाटा-विड़ला, अडानी-अंबानी, सरकार के चहला आ बदले से ना आई। बदलाव हमनी के बदलला से आई। नारी शक्ति के बुझात होई आपन निराशा दूर करे, आपन सपना पूरा करे खातिर आजु ले लड़नी बाकिर हाथे का आइल, शत्रु कहाँ हारल, कहाँ समझौता करे के तइयार बा ऊ,

www.bhojpurisahityangan.com

आजुवो लोग पूछत बा दुनिया कहाँ बदलल। वातो सही बा उन्हिन के बाकिर हथियार डालल कायरता होखी। बदलाव आइल बा, सपना जगा के रखऽ, आगे रोशनी भेंटाई विसवास रखऽ। आस जिनिगी ह। देखऽ लोगिन आगे फह फाटत, लाली निकलत नजर आवत बा।

आदमी उहे होला जेकरा देश आ समाज लउकेला। लिंग भेद ना लउके। संभावना लउकेला। सपना लउकेला। अम्लान रोशनी लउकेला। ओहि रोशनी में शोषण, झूठ आ भेदभाव देखिके मानवीयता के उगावे खातिर आगे बढ़ेला। जगावेला आ अपना हक हुकूक खातिर उर्जास्वित करेला लोगिन के। साहित्य आ कला के माध्यम से आधा आबादी के बाति रखि ओकरा पक्ष में खड़ा होखे के प्रयास करेला। मेहरारू के देह भीतर बइठल मेहरारू के आवाज कविता होला। स्त्री एगो मुकम्मल कविता होली सं। जेह में स्त्री-जीवन के लेखा-जोखा, दैनिक-सांस्कृतिक संघर्ष गाथा अउर द्वंद दार्शनिक मुद्रा में दर्ज होला। ओहिजा स्त्री के जन्म लेवे, बने, उठे-बइठे आ खत्म हो जाए के निज-जीवन के कहानी होला। उहे कविता के एगो जीवनी भा जीवनी-संस्मरण से परिचित करावेला। कविता के बुनावट अइसन कि एको वाक्य अधिका ना लउके ओह में। कसावट अइसन कि एगो 'हूँ', आ 'मैं' के रख देला से कविता के विगड़ जाए के डर लागेला। समय बदलल बाकिर आजुवो सामाजिक संरचना में स्त्री के आपन अस्तित्व के मुकम्मल पहचान नइखे मिलल तब त ओकरा भीतर से उठत आवाज कहत बा कि

विधाता देले
हमरा के
ई देह
तिरिया जनम

आ हम
जिनिगी भर
ढोवत रहनीं
अपने पीठ पर
आपन भार

www.bhojpurisahityangan.com

आ तू
लिखत रहलऽ
कविता, कहानी
हमरा के नायिका बना

कागज के जगह
हमरा के
जिनिगी में नायिका
बनइतऽ त
आज हम आपन पहचान
ना खोजतीं
तोहरा समाज में

हमरो जिनिगी में
धुंध - कोहरा
छंट जाइत

पहचान
हमरो मिल जाइत।

वागर्थ के संपादक शंभुनाथ के कहल ह कि 'जदी ई सिद्धांत बना लेल जाए के जेकरा ऊपर वितेला खाली उहे ओह पीड़ा के बढ़िया से व्यक्त कर सकेला त ई पीड़ा के नाकाबंदी कहल जाई। लोग दूसरा के दुख-विपत्ति में साझेदारी से किनारा कर ली। समाज में कुछु साझा ना बांचल रही।' केहू मरद होखे के पहिले 'मनुष्य' होला जे नजदीक से देखले अनुभव कइले रहेला आधी आवादी के दर्द के। मरद के साझा के दर्द ह नारी के दर्द एही से मनुष्य बनि के नारी के पक्ष में खड़ा होखे के पड़ी तवहीं मानवीय धर्म के पालन हो पाई। आधी आबादी के आवाज सुनहीं के ना होई साथ मिल के बुलंद करे के होई, पहचान देवे के होई, ओकरा हिस्सा के धूप आ आकाश ओकरा नांवे करे के होई ई हम ना समय कह

www.bhojpurisahityangan.com

रहल बा। समय के आवाज नाकारल ना जाए, मानल जाला, सुनल जाला। समय आ गइल बा कि आधी आवादी के तरफ से उठत आवाज 'हम एह तरह रहीं कि हमरा रहलो के अर्थ रहे' अव जनि उठे। ई तवे संभव बा जब उन्हिन के पहचान मिल जाई। उन्हिन के पहचान पुरुष समाज के पहचान के मजबूत करी, कमजोर ना।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

किसान के किस्मत में दुख आ भूख

समय गुलामी के होखे भा देस के आजादी के बाद के किसान के घरे से दुख आ भूख ना भागल। किसान के घरे बइठल दुख आ भूख के कारण किसान ना ह, कारण ह व्यवस्था आ सरकार के नीति। समय के साथ राज पाट बदलल बाकिर किसान के दिन ना बहुरल। अइसन काहे? ई विचारणीय विन्दु बा। एह पर खुलके बतकही के जरूरत बा। धान के कटोरा भोजपुरिये क्षेत्र के किसान के हाल बेहाल नइखे। आजु ई देसव्यापी समस्या बा।करज से दवके किसान आत्महत्या कर रहल बा। लोग अन्नदाता आ भगवान के तगमा किसान के देला बाकिर ओकरा आंगन में झांक के ना देखे जाय कि ऊ कइसे जी रहल बा? ओकर परिवार कइसे जी रहल बा? आत्महत्या खातिर ऊ काहे मजबूर हो जात बा? जबरदस्ती ओकर जीविका के साधन खेत के अधिग्रहित कइला के, ओकरा के आपन जमीन से बेदखल कर विस्थापित कर देला के का असर ओकरा आ ओकरा परिवार पर पड़ रहल बा? जमीन जेकर पहचान, अस्मिता रहे ऊ आजु ठेला आ रिक्शा खींचे के बाध्य बा काहे? एह तरह के सवालन के अंबार बा किसान जीवन में।अइसने जिनिगी जीये के अभिशप्त बा किसान। अइसन ना कि किसान के कुंडली विद् पंडित से नइखे देखावे के प्रयास कइल गइल बाकिर तंत्र के आगे कवनो मंत्र काम नइखे करत। आज आदमी चांद आ मंगल पर जमीन आ मनई के खोजे में लागल बा बाकिर आपन धरती आ धरती पूत पर नजर नइखे। लोकतंत्र में लोक अनदेखा, लोक के मुख्य अंग अनदेखा, सिक्स लेन आ बुलेट ट्रेन के जमाना में किसान भूखा,मार बढ़नी रे अइसन विकास के। 'आन्हर नगरी चौपट राजा, मुए किसान आ सेठ बजावे बाजा' ई देश हित आ लोक हित में नइखे, कुर्सी हित में हो सकेला। जतना बाति आजु मंदिर आ विकास के होता ओतने किसान विकास, सिंचाई विकास, गांव विकास के होखी तब भारत के माटी के भाग जागी ई समझे के होई बबुअवो। पंचतत्व माटी

www.bhojpurisahityangan.com

अपना में समेटले रहले आ ओही से ई देहिया बा, ई देशवा बा, भाई माटी के बचावे के होखी आ माटी तबे बांची जब किसान बांची। किसान देश के रीढ़ ह आ रीढ़ विहीन देश के का हाल होला ओकर समय साक्षी बा।एह बाति हमरा- रउवा से बेसी सरकार, तंत्र आ व्यवस्था के समझे के होई। कवनो सत्ता आ व्यवस्था खातिर आर्थिक आधार के जरूरत होला।आज के परिवेश में ओकर महत्ता अउर बढ़ गइल बा। बाकिर ओह अर्थ के व्यवस्था खातिर गरीब मजदूर आ किसान के बली देल कसहूं उचित ना कहाई। भारत के भाग के बदले खातिर कृषि उन्मुख आर्थिक आधार के मजबूत करे के पड़ी आ उहे देश हित में होई। ना त-

शासन बदली , भाषण बदली , दशा ना बदली किसान के
सत्ता में भले केहू बइठी , ना गाई गीत किसान के ।

आजु मुलुक के प्राथमिकता रोजगार, शिक्षा, अस्पताल, विकास आ धर्मस्थल बा। ई जरूरी बा। एकरा के ना नाकारल जा सके। इक्कीसवीं सदी में समय के साथ एकरा बिना कदमताल ना कइल जा सके, वैश्वीकरण, उदारीकरण आ बाजारवाद में ना टिक सकेला देश। बाकिर आम जन, परिश्रमी के अदम्य जिजीविषा के साथ जिनिगी के खे रहल माटी पूत किसान के छोड़ के ना। ना त कहे के पड़ी कि 'छोड़लऽ त सब विकास हवा हवाई।' धर्माचार्य लोग कहेला कि 'दुनिया के सब हलचल के पीछे एगो परम सत्ता बा'। अगर ऊ ईश्वर मेहनतकश किसान के शोषण के बुनियाद तय करत बा, आपन लेखनी से ओकर भाग नइखे बदलत, अन्न पैदा करेवाला के मुंह से निवाला दूर कर देता, व्यवस्था के चुप्पी नइखे तूड़त त ओकरो एह करनी के धर्म सम्मत ना कह के अमानवीय के संज्ञा देल उचित होई। ओह जबरो के अबरा किसान के हितकारक ना कहल जा सके। भाग में जे होखे के रहे ऊ हो गइल किसान कह जाला बाकिर कर्म के पुजारी किसान समझला कि जिम्मेवार सत्तावन ओकर तंत्र बा। कुर्सी पर बइठल लोग के सामने ई सवाल छुपल नइखे बाकिर सत्ता के सारथी के चुप्पी सब करा रहल बा, बाजारवाद आ पूंजीवाद नचा रहल बा।सबही नचावे राम गोसाईं अलोत खड़ा हो सबही नचावत सेठ गोसाईं के खेल देख

www.bhojpurisahityangan.com

रहल वाड़े। राम गोसाईं के चुप्पी निरंकुश सत्ता के जन्म देता जेकरा में किसान पिसा रहल बा। आजु किसान के चुप्पी घातक बा। ओकरो अपना आप से पूछे के होई, समझे के होई का सही बा? का गलत बा? काहे भूखे वानीं? अगहनुआ भोर काहे नइखे भेंटात? हमरे बले सत्तावन हमरा के काहे भुला जाति बा? आ अपना अंदर के खुद्दारी के जगा ओकर कीमत खातिर लड़ाई छेड़े के जरूरत बा।जय किसान, जय भारत के आशा के किरण ओहि लड़ाई से फूटी।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

खेत, खेती, खेतिहर आ खेतिहर परिवेश के कवितई

किसानी आ कवितई पर भाई प्रकाश उदय के कहल ह कि 'किसानी से कविताई के रिश्ता, पता ना, जब से किसानी वा तव से वा कि जब से कविताई बा तब से। तरह-तरह से, तरह-तरह के काम-काज के अटूट एगो सिलसिला ह किसानी, आ एही नाते, तरह-तरह के, तरह-तरह से संभव कविताई के साथे बहुरंगी ओकर रिश्ता, बहुढंगी।' बातों सही बा। कवितई के स्वरूप समय के साथ बदलल बा बाकिर बुझाला कि किसानी से कवितई के रिसता तबे से होई जब से किसानी वा। किसानी लोक के हिस्सा ह।

खेत, खेती आ खेतिहर के ठांव ह गांव। गांव के आपन खूबसूरती होला, जे आजुवो कुछ ना कुछ बांचल बा। गांव के ई खूबसूरती खेत, खेती आ खेतिहर के चलते रहे। भोजपुरी संस्कृति कृषक संस्कृति के पोषक ह। दूनों के हिंगरा के ना देखल जा सके। किसान गंवई संस्कृति के प्राण ह।ओकरे से जुड़ल पारंपरिक जीवन शैली में संस्कृति के रास-रंग, राग-सुहाग, लय-ताल बसेला, ओहि से गंवई गंध गमकेला। किसान श्रम के प्रयाय ह, देश के प्रयाय ह, माटी के प्रयाय ह, लोक के प्रयाय ह, प्रेम के प्रयाय ह। किसान कवितई में खाली श्रम गीत ना कजरी, झूमर, जंतसार, सोहर, खिलौना, प्रेम आ विरह गीत के साथे समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विद्रुपता के चित्रन भरपूर देखे के मिलेला। माटी के पूत किसान के जदी भोजपुरिया संस्कृति से निकाल दिआई त कुछुवो ना बांची ओह में। भोजपुरी कविता के पाट बहुते चौड़ा बा अउर लोक आ जमीन से जुड़ल बा। धनंजय चोपड़ा के लिखल ह कि 'खेती किसानी लोकजीवन का मूल आधार है। दरअसल पूरा लोक जीवन उस धरती से जुड़ा हुआ है जो जीवन के पर्याय है। सीधे-सीधे कहा जाए तो लोक-जीवन

www.bhojpurisahityangan.com

में खेती के विना लोकजीवन अधूरा है। सामाजिक नैतिकताएं, सामाजिक संगठन शक्ति, सामाजिक नातेदारी, सामाजिक साहचार्यता और सामाजिक मूल्य पाठशालाएं खेती-किसानी के रास्ते लोक जीवन का हिस्सा बनती हैं।' (वागार्थ मई 2022, पृष्ठ संख्या 79) कहल जाला जहां ले जीवन बा तहां ले किसानी बा। सामाजिक जीवन से जुड़ल कवनो प्रसंग प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप से किसानी के विषय हो सकेला।लोक आ जमीन से जुड़ल काव्य साहित्य किसान से कइसे दूर रह सकेला आ जदी दूर रही त पूर्ण कइसे हो सकेला?। भोजपुरिया कवि एह कृषक संस्कृति के छोट-बड बाति, किसान के जिनिगी, किसान के समस्या, किसान के दरद, खेती से पलायन आदि पर खूब गहिराह कलम चलवलें बाड़ें। भोजपुरिया किसान के सांच इहे ह जे चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कविता 'कैलाश' में दिखत बा -

फाटल कुरता कबले सिअबऽ
बोलऽ ना कैलाश
ढो रहल बाड़ऽ कवना लोभे
आपन तू लाश।

आजुवो स्थिति में परिवर्तन नइखे दिखाई देत। एकर अनेक कारण बा। बाकिर मूल कारण बाजारे बा। महंगाई आ बाजार त सभके मारत बा बाकिर किसान के रीढ़ तुड़के कवहूं खड़ा नइखे होखे देले। ऋणग्रस्तता काल्हुओ रहे आजुवो बा, सुराज के ओकरा खातिर कवनो माने नइखे रह गइल एह सब पर भोजपुरी कविता बात कइले बा आ आजुवो करत बा। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कविता 'चारचित्र' आ विरहा के देखल जा सकत बा।

चारचित्र -

बैलन के पाछा-पाछा नधली दँवरिया प
जड़वा के दिन देला काट
देहिया के देहिया ना बुझेला किसनवा त
बलिया से निकले अनाज
धनवा के ढेरियां बखरियो ना पहुंचले
लेई जाला सेठ बेइमान।

www.bhojpurisahityangan.com

बिरहा -

सइयो के नोटिया त छोटिगो बुझात बाटे
दूई पाव के मिलेला आनाज
आधा रे गतरिया उधार बाटे अबहूं
तनिको ना भावेला सुराज।

किसानी कवितन में कल्पनाशीलता के रंगीन उड़ान के जगह ना होखे बाकिर जमीनी सच्चाई के कहानी होला। एह से भोजपुरी किसान कवितन के ठोस धरातल पर खड़ा होके किसानी आ स्थानीय परिदृश्य के गहन अनुभूति कइल जा सकेला। भोजपुरी कवियन के रचित किसान कवितन अपना में कथ्य, अभिव्यक्ति, विषय, बिम्ब आ भाषा के दृष्टि से विशिष्ट बाड़ी स।। भोजपुरी किसान कवितई में अलग-अलग कवि के कवितन के प्रस्तुति, शैली आ शिल्प अलग मिलेला बाकिर भाव, चित्रण, विषय आदि में समानता दिखाई पड़ला। कुछ लोग एकरा पुनरावृत्ति (रिपिटीशन) कह ओह तरह के कविता के तृतीय श्रेणी के कविता के दृष्टिकोण से देखेला। बाकिर ई दृष्टिकोण ठीक ना कहाई। कहल जा सकेला कि कविता में कुछ विशिष्ट खोजे वाला के जरूर ई रिपीटेशन उदास करे बाकिर लोक स्वीकृति ओकरा मिलेला। वरिष्ठ रचनाकारों एह से बांचल नइखन। किसान कवितई में, लोक से जुड़ल विषय पर कविता में, साखी में, उपदेश में एकरा से ना बांचल जा सके आ ई गलतो ना कहाई। किसान के जिनिगी दुख आ भूख के जिनिगी ह। मौसम आश्रित खेती आजुवो बा। किसान के एह स्थितियन से उबारे के, निजात दिआवे के बात खूब होला बाकिर आजुले फलाफल किसान के जिनिगी में ना भेंटाइल। ओकरे प्रतिफल खेतिहर के पलायन रूप में सामने आइल। सच्चाई त इहे बा कि किसान खेती में होखे वाला नुकसान से अपना के बचावे में सफल नइखे हो पावत।देखल जाई त किसान के खेती पर आवे वाली सब खर्च के जोड़ला पर ओकरा से होखे वाला आमदनी पर विचार कइला पर किसानी घाटा के सौदा होला अउर ई देख कहल जा सकेला कि वास्तव में ओकरा श्रम के मूल्यों ना मिल पावेला।एह बात के चिंता भोजपुरी किसान कविता में भरपूर मिलेला। भोजपुरी कवि लोगिन आपन गहन संवेदना से किसान

www.bhojpurisahityangan.com

जीवन के त्रासदी के अपना रचनन में बड़ी बेबाकी से जीवंत दस्तावेज के रूप में रखले बाड़न जेकरा के देखि लागला कि कुछ कहे के बाकी ना छोड़ल लोग। किसान गाथा अनकहल ना रहल बाकिर अनसुनल रह गइल। सत्ता ओह ओरि कान ना देलस। लाली हम भोर के के अगहनुआ भोर ना भेंटाइल आजुले इहे किसान जीवन के सांच ह। समय निरंतर बदलाव को चिह्नित करत चलेला, आपन करवट बदलेला। किसान कवितई समय के साथ आपन करवट बदलत चलल बिया। एगो किसान के हजार को दुख होला आ ऊ दुख भोजपुरी कवितई में बड़ी मार्मिक ढंग से उभर के आइल बा।हाल के किसान आन्दोलन किसान के क्षोभ आ आक्रोश के परिणाम रहे आ सरकार के जे आन्दोलन के प्रति रवैया सामने आइल, भोजपुरी कवि ऊ देख चुप ना रहले आ अपना कविता में ओकरो के स्थान देले बाड़न। किसान के जिनिगी अभिशप्त जिनिगी होला केकरो राजपाट होखे सभे चूसेला किसाने के। आजु आजादी के आठ दशक बादो सामंत आ सरकार के लाठी किसान के रीढ़ सोझ नइखे होखे देत कहले बा अबरा के मउगी सब के भउजी। किसान से अबर के भेंटाई। इहे देख महेंद्र शास्त्री जी के 'किसनवाँ' कविता में कहल बात इयाद आ जाला –

अबरा के मेहर सभकर भउजाई,
सब केहू अबरे के खोर-खोर खाई
अबरा से अबरो बिरावे किसनवाँ,
ओकरा के सब कलपावे।

आज इक्कीसवीं सदी में देश में विकास सरपट भाग रहल बा भारत विश्व गुरु के सपना देख रहल बा, हमनीं का चउथा आर्थिक शक्ति बने जा रहल बानीं जा, सशक्त भारत के कशीदाकारी नीमन तरे गढ़ रहल बानीं जा ओहिजे किसान के स्थिति दिल दहलावे वाली आजुवो बा जहां किसान आत्महत्या करे पर मजबूर बा। लोकल के भोकल, किसान के आमदनी दूगना करे के कागज पर बात होला बाकिर ऊ बात जमीन पर देखे में ना मिले। किसान आ किसान पूत खेती से बढ़िया ठेला लगावल आ रिक्शा चलावल समझत बा। ई सब नतीजा ह धान के कटोरा घिसला के। बाजार के मार आ भूख से पीड़ित किसान के पास खेत आ खेती से पलायन छोड़ रास्ता कहाँ लउकत बा। काल्हु के उत्तम कृषि आ अधम

www.bhojpurisahityangan.com

चाकरी के बात उल्टा हो गइल। कलम के आगे कृषि के कवनो इज्जत ना रह गइल।तब त महेंद्र शास्त्री जी 'भइयवा' में कहले -

कलमे चलवला से इज्जत रही तब
काहे केहू पकड़ी कुदार रे भइयवा।

किसान आ माटी पर कविता लिखल खुद अपना बारे में, अपना परिवेश के बारे में लिखल ह, अपना के महसूस कइल ह। भोजपुरी किसान कवितई में हमनीं के आस-पास आ अपना परिवेश के किसान के जटिल जीवन के सच्चाई से रूबरू होखे के मिलेला। किसानी के प्रकृति आ परिवेश से अलग करके बात ना कइल जा सकेला। एही से माटी, मौसम, प्रेम, बिछोह, श्रम के बड़ी सजीव चित्रण अपना में समेटले रहेला किसान कविता। किसान कविता अपना में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विसंगतियन के भरपूर समेटले रहेला। ई सब बात 'बटोहिया', 'फिरंगिया' भा 'भइयवा' से लेके आज लिखा रहल छंदवद्ध आ छंदमुक्त भोजपुरी कवितन से गुजरला पर महसूस होला। एक तरह से किसानी कवितई किसान जीवन के बहूरंगी बेयान होला। किसान जीवन में भरल अंधकार में जिनिगी जीए खातिर अगहनुआ भोर के लालीमा सामने रखेला।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी के छंद में आनंद भरि आइल रामा, चइत महीनवा

अइसे साल के बारहो महीना के आपन महत्व होला बाकिर साल के अंतिम महीना फागुन आ पहिला महीना चइत के रंग-राग आ महातम अनोखा बा। इहे देखि कहल जाला कि साल में से ई दूगो महीना फागुन आ चइत के निकाल देल जाय त साल में कुछ बचबे ना करी। फागुन आ चइत ना रहित त लोक जीवन में रस रहबे ना करित। फागुन के होली, फगुआ आ चौताल आ चइत के चइता, चैती आ घाटों के गूंज से भक्ति आ भौतिक दूनों रस के संचार लोक में होला।

रस की अनुभूति के लोक जीवन में महता पर साहित्य दर्पण 3.2.3 में उद्धरित तथ्य विचार जोग बा।

सत्त्वोद्रेकादखंड-स्वप्रकाशानंद-चिन्मय:
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदर:।
लोकोत्तरचमत्कारप्राण: कैश्चित्प्रमातृभि:
स्वाकारवदभिन्नत्वे नायमास्वाद्यते रस:।

(साहित्य दर्पण 3.2.3)

** कहे के माने रस के आविर्भाव सत्त्व गुण के उत्पन होखे के स्थिति में होला। सांसारिक राग-द्वेष से मुक्त चित्त की विशुद्धता, निर्बन्धता के स्थिति होला। ई आस्वाद इन्द्रिय उत्तेजना से भिन्न परिष्कृत-चित्त ग्रहण करेला। रजोगुण आ तमोगुण के संस्पर्शो होला त रसानुभूति ना होला, काहे कि रस हृदय के मुक्तावस्था ह। दूसर बात रस आत्मतत्त्व के आस्वाद ह। तीसर बात रस पूर्ण आ अखण्ड ह। रस तन्मयी-भाव के स्थिति ह। रस स्वप्रकाशानन्द ह, चिन्मय ह, आनन्दमयी-चेतना ह। विषयानन्द से विलक्षण ह। अनिर्वचनीय आ अलौकिक ह। अलौकिक एह अर्थ में कि ऊ नित्य आ शाश्वत ह।

www.bhojpurisahityangan.com

रस ऊ आनंद के स्रोत है लोक जीवन में कि रस ना रही त मुक्ति ना मिली। मुक्ति खातिर भोजपुरिया लोक भक्ति आ कर्म के पथ जानेला। ज्ञान के बात ना बुझाय जल्दी से ओकरा। पेट भरल रहेला तब जाके कवनो चीज में रस आवेला। पेट भरे खातिर कर्म कइल जरूरी होला। भोजपुरिया समाज कर्म के महातम जानेला आ कर्म के पूजा समझेला। शिव आ राम एह समाज के इष्ट देव ह लोग। साल के अंत में अगजा के साथे दुख दरिदर के जारि अमीर-गरीव सभे फगुआ खेलि आपन खुशी के इजहार करत आधे राति खा नया बरिस के स्वागत करत चइता उठा सब इष्ट देव आ देवी लोग के गोहरावत आपन अनुनय-विनय सुना देला। अइसन लोक संस्कृति के उदेस लोक जीवन में रसे घोरल नू ह। भोजपुरिया समाज माटी के लाल ह आ चइत में रबी फसल खरिहाने आ जाला जे किसानी जीवन के कर्म फल ह। आपन कर्म फल के देखि केकरो मन में खुशी होला आ लोक में खुशी के इजहार नाचि आ गाइये के कइल जाला।

** 'जइसे स्वरलहरी में राग ह ओसहीं नृत्य देहराग ह। अंग-प्रत्यंग आनन्द के लहर भर जाला। नृत्य आनन्द के देहगत छलकन ह। प्रेम के अतिशय राग। नृत्य आनन्द ह, ओकरा कवनो व्याख्या के जरूरत नइखे। सामान्य नर-नारी जीवन के अलभ्यलाभ नृत्य में पा जाले'। चइत के झकोर संगे हवा, पानी, प्रकृति नाच उठले त बताईमनई कइसे रोके अपना के नाचे-गावे से। चइत उम्मीद के महीना ह लोक में। अगहन के करार ना पूरा होखेला त चइते के आसरा रहेला किसान आ किसानीन दूनों के, किसान के माथे करजा के त किसानीन के आपन झुलनी-लुगा-गहना के। फागुन में रंग बरसला त चूनर वाली भींजेली बाकिर चइत में रस के फुहार बरिसेला, आम के मंजर महकेला आ महुआ से मदन रस टपकेला तो मादकता अइसन छा जाला कि मय नर-नारी नाचे-गावे लागेला। आनंद छलकि बोलेला कि-

रस रसे रसे बरिसे चइतवा में
आम मंजर रस, महुआ मदन रस
हउवो में एगो रस, पनियो में एगो रस
राम रस, देवी रस, भक्ति भरलरस
नाचे मोर मनवा चइतवा में।

www.bhojpurisahityangan.com

मइया झुलेली झुलनवा नीमिया गछिया ना

भोजपुरिया समाज में नवमी के पुजाई के बड़ा महातम बा। अइसे साल में चार गो नवरात्र बाकिर हमनी किहां चैत्र नवरात्र के पुजाई बड़ी धूमधाम से मनावल जाला। लोक मान्यता बा कि नवमी के माई अपना भक्तन के घरे जाली। चइत नवमी से भगवान रामो के खास संवंध बा। चइत शुक्ल पख के नवमी के भगवान राम जन्म लेले रहन। तबे से ई पर्व रामनवमी के नाम से जानल जाला। माने माई आ भगवान राम के पूजा चइते में होला। राम भक्त हनुमानो के महबीरी झंडा ओहि नवमी के दिन आँगन में बदलल जाला।

भगवान राम के जन्म चइत में भइल रहे त एह से कहल जाला कि चइता गायन के शुरआत त्रेतायुग में भइल रहे आ चइता में 'हो रामा' भा 'ए रामा' के टेक लगा के गावल जाला। राम जन्म, राम सीता के होली आ उन्हिन लोगिन के बिआह से संबन्धित चइता खूब गावल जाला। अइसे चइता के विषय-वस्तु काफी व्यापक बा। चइता में भक्ति, सिंगार, प्रकृति, गृहस्थ जीवन के हर रंग देखे के मिलेला आ ई उत्तरप्रदेश आ विहार के प्रचलित लोक गायन ह।

राम जन्म से संवंधित एगो चइता -

जाग गइले कौशल्या के भाग हो रामा।
अवध नगरिया॥
माता कौशल्या लेत बलइया
धन राजा दशरथ के भाग हो रामा।
अवध नगरिया॥
घर-घर बाजत लला के बधइया।
शोभा वरन ना जाए हो रामा
चैत राम नवमिया॥

www.bhojpurisahityangan.com

राम – सिया बिआह संबंधित एगो चइता –

विराजत राम सिय साथे हो रामा
अवध नगरिया।
माता कौशल्या तिलक लगावे
सुमित्र के हाथ सोहे पनवा हो रामा
अवध नगरिया।।
चलऽ सखी चलऽ दरसन करि आवे
मिले आनंद अपार हो रामा
राजा दशरथ दुअरिया।।

शक्तिरूपा देवी माई संबंधित चइता –

रामऽ बाजेला बाजनवाँ, दू गोला मैदनवां ए रामा।
सिंह चढ़ी, माई आके देदऽ दरसनवां ए रामा।।
माई आके!

बनारस के संगीत घराना चइता/ चैती के एगो उपशास्त्रीय गायन के रूप में विकसित कर के ओकरा के नया रूप देले बा। उपशास्त्रीय गायन के ठुमरी आ चैती में भावाभिव्यक्ति के मामला में काफी समानता पावल जाला।

पिया पिया रटतऽ पियर भइले देहिया हो रामा

सिंगार के भावना मनुष्य में स्वाभाविक रूप से पावल जाला एही से सिंगार गायन के चलन रहल बा समाज में। बसंत में काम चरमोत्कर्ष पर रहेला। प्रकृति खुद दुल्हन जस सज जाले आ ओह प पुरवइया बयार के मादकता आगि में घीव के काम करेला। चइत में वियोग ना सहन होखे, प्रेम में मदमस्त मन पिया के इयाद में अइसन डूबल रहेला कि प्रिय भा प्रियतमा के वियोग में देह के पियरी धर लेला तब नू चइत के उत्पाती महीना के संज्ञा देल गइल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

एगो सिंगारिक चइता देखीं
एहि ठइयां नथिया हेरा गइल रामा कहवाँ हम ढूंढ़ी।
अंगना में ढूंढनी अटरियां पे ढूंढनी
ढूंढत-ढूंढत बउराय गइलीं रामा कहवाँ हम ढूंढी।
तिरछी नजरिया से सइया जी से पुछनी
सेजिया पे नथिया हम पाइ गइली रामा, अब नाही ढूंढूं।

एगो दूसर सिंगारिक चइता -
झुलनी में लागल नजरिया हो रामा
अब ना पहिरबऽ।
झुलनी पहिर हम गइनी बज़रिआ
लोगवा नजरिआ लगावे हो रामा
अब ना पहिरबऽ॥

चइत काहे उत्पाती ए रामा
चइत मासे कुहुंके बगिया कोइलिया ए रामा

कोइली के बोली सुनि उठेला दरदिया
पिया परदेसिया बुझे ना मरमिया ए रामा
चइत मासे ...।

भोरे भोर कोइलर, सांझि खा ननदी गाभी
रतिया में पुरवा बयार रे
अंगे अंग डहकत बिरह के आगि सखी
सेजिया पर लोटीं जइसे नागिन ए रामा
चइत मासे ...।

www.bhojpurisahityangan.com

काठ के करेजा करी फागुन बितवनीं
चइत के धाह ना सहाय
पियवा अनाड़ी नोकरिये के सब बुझे
चइत के चढ़ल बा खुमारी ए रामा
चइत मासे ...।

नाही अइले पियवा ना भेजले सनेसवा
झर झर बहेला आँखि के कजरवा
तन नाही बस में आ मनवा बा मातल
चइत बड़ा उत्पतिया ए रामा
चइत मासे ...।

टेसू के चम्पई, सेमल अउर गुलमोहर के ललाई, अमलतास के पियरई, महुआ के मादकता, आम मंजर से टपकत मदन रस, सरई के फूल के सुंदरता अउर सरई बन के हरियरी से सजल चइत अपना रूप पर इतरा उत्पाती हो जाला त एह में ओकर का दोष? आ प्रौढ़ बसंत के रंग-बिरंगी चइत के देखि मनई के मन उत्पाती हो जाला त चइत के दोष ना नू दिआई। चइत के उत्पातो मनई आ प्रकृति दूनों के एही से खूब भावेला डॉ. सुनील कुमार पाठक कहले कि 'लोकगीतन के जेतना ले विभेद बा ओ में चौता ले जादा मधुरता, सरसता, कोमलता आ भावप्रणवता कवनो दोसर शैली में ना मिली'। चइत के गंध परिवेश से आवेला। हमरा त स्मृतियन में बसल बा। स्मृतियन में गूंजे लागेला चइता के बोल। चइत मास बोले ले कोयलिया हो रामा पिया के अंगनवा। चइत के ई उल्लास गूंजत रहेला भीतरे। गूंजेला त मन कह उठेला -

ग़ज़ल कहलस कि फागुन ह, लगा द रंग माथे पर
आइल चइत, गावऽ चइता, अभी मधुमास बाकी बा।

कोइलि बाग में कुहुंके, बधारि सोना जस चमके
मदन रस आम से टपके, अभी मधुमास बाकी बा।

www.bhojpurisahityangan.com

मादक गंध महुआ के, बिखरल आज बा चहुंओर
मनवा मीत खोजत बा, अभी मधुमास बाकी बा।

चइता रोज गूंजता, दुआरे पर, शिवाला पर
ननदी प्रेम गीत गावे, अभी मधुमास बाकी बा।

कहीं सेमल फुलाइल बा, कहीं पलाश बा महकत
चुरा लीं मन करे लाली, अभी मधुमास बाकी बा।

चढ़ल पीपर नया पतई, सखुआ खूब फुलाइल बा
जंगल बोल रहल बाटे, अभी मधुमास बाकी बा।

किशोर कह रहल अनुभव, बसंत के रंग बाकी बा
गोरी राह निरखत यार, अभी मधुमास बाकी बा।

चइता, चैती और घाटों के गायन चहुंओर हवा में घुल-मिल के गूंजेला चइत में। चइत मासे, चिद्-चेतना में गति आइल हो रामा, चइत मासे-चइता के बोल भक्ति में डूबल लोक मानस के हाल बतावत बा। चइत में भक्ति आ सिंगार में डूबल लोक के देखि, चइत के भक्ति आ सिंगार के समरसता के बहत बयार के देखि कहल जा सकेला कि रस आ आनंद में डूबल मनई के मन के अध्यात्मिक आ भौतिक उड़ान के कवनो सीमा में बान्हल ना जा सके चइत मास में। इहे देखि केहू कहले होई कि 'जिंदगी के छंद में आनंद भरि आइल रामा, चइत महीनवा'।। मेहर के आंचर के छोर, आँखिन के लोर आ चइत के झकोर देखि पिया के देर-सबेर जागिये जइहें, चलीं जा हमनी के राम लल्ला आ देवी माई के गोहराई के मनाईं जा।

** (श्री राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी के फेसबुक वाल के आलेख से।)

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

कवना अँटका में अँटकल बसंत

- कनक किशोर

मौसम के सिरमौर ह बसंत। अइसे सब मौसम के आपन महत्व आ विशेषता होला। बाकिर बसंत के एगो अलगे राग आ रंग होला। बसंत आवते मन रंगीन हो जाला। का बूढ़ा का जवान, का खेत का बधार, का हवा का बयार सब में मादकता भर जाला। सब जीव जंतु में एगो उल्लास भर जाला शीत ऋतु भाग खड़ा होला। चहुंओर हरियर बधार रंग-बिरंग के फूल से भर जाला। बधार देख लागेला कवनो तरूणी हरियर समीज पर गोटेदार दुपट्टा लहरवले आकाश अपना मुट्ठी में करे खातिर उड़ रहल बिया भा सज-धज के अपना प्रेमी से मिले बदहवास भाग रहल बिया, एने-ओने तिकवत। जइसे मनई के जिनिगी में यौवन आवेला ओसहीं बसंत प्रकृति के यौवन ह। 'बसंत पंचमी' बसंत के आगमन के त्योहार ह। भागत सर्दी, बड़ होत दिन, गुनगुनी धूप शीत से दुबकल मनई के देह में गर्मी आ मन में उज्जास भर देला। कवि बसंत के अपना कविता में समेट लेल चाहेला। प्राकृतिक चित्रण बिना कविता के दुनिया अधूरा रह जाला। कवियन के प्रिय ऋतु ह बसंत। पतझर के मारल नंगा गाछि-बिरिछ-धरती हरियरी के आगोश में समाई अइसन इतराले जइसे बिरह में जरत कनिया एकाएक बिना कवनो पूर्व संदेश के अपना प्रियतमा के आगमन पर इतराले।आम पर मंजर के माधुकता, सेमर वन लाल फूल से लदल, टेसू के बन के एगो अलगे लालित्य, कचनार अपना जवानी पर, महुआ से टपकत मदन रस, बाग-बगइचा-फूलवारी फूल आ फल से लदल आ ओह पर फगुनहटा बयार मन आ मनई के कहाँ रहे देला अपना आप में। ढोल, मंजीरा, झाल संग फगुआ के ताल, चइता के बोल पर डोलत गोल सुतलो बिरह के जगा देला। प्रेम के ताकत बसंते ऋतु में देखत बनेला। भाई केशव मोहन पांडे भले कहत होखस जिनिगी रोटी ना हऽ बाकिर ओहू बदहाल

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी में प्रेम के ताकत के अनुभव करत कहले बाड़ें- 'नेह से/ रसगर होके/वज्जर रहिलो/ अँखुवाये लागेला'। कोयल के कुक मीठ होला बाकिर विरहिन के ना भावे। प्रेम के गीत एक देने सुनाला त दूसर देने विरह अग्नि के ज्वाला धधकत रहेला। ओहू धधकत ज्वाला के बीच प्रेम अंखुआ प्रेमी मन हिरण जस कुलांच मारेला अपना प्रेम से मीले खातिर। बसंत आ गइल पूछे के ना परे केकरो से, ऊ खुद बता देला कि हम आ गइनीं। माटी के आपन एगो सुगंध रहेला बाकिर बसंत आ ओह पर आ वातावरण में प्राकृतिक इत्र के छिड़काव कर देला। तब त सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कहले बाड़ें-

लता-मुकुल-हार-गंध भार भर,
वही पवन बंद मंद मंदतर,
जामी नयनों में वन-
यौवन की माया।

वसंत के मनोहर छंटा निराला जी के नजर में -
रँग गई पगड़- पग धन्य धरा
हुई जग जगमग मनोहरा।

भारत त उत्सव के देश ह।हर माह में कवनो ना कवनो परब उत्सव आवेला। बाकिर बसंत ऋतु त पूरा महीनवे उत्सव आ उल्लास के ह।एही से एह राग रंग के उत्सव के नाम बसंतोत्सव पड़ल। भोजपुरिया संस्कृति में बसंत के सांस्कृतिक आ सामाजिक दूनों महत्व बा। फगुआ आ चइता समष्टि के समरसता के त्योहार ह। सरसों आ गेहूं के खेत मन के लुभावे लागेला। रवी फसल घरे आवेला। किसान गदगद हो जाला।शादी बिआह के बाजा बाजेला। होली के रंग से कपड़े ना मनो रंगा जाला। होली के राग रंग में बुढ़वन अपना के ठुमके के से ना रोक पावे। संबन्धों के बन्धन टूट जाला, मनई के मस्ती के आलम ई रहेला। तब त कहल गइल बा 'भर फागुन बुढ़वा देवर लागे'। अतनो भर रहित त ठीक रहे मनसोख बुढ़वा पूछ बइठेला बुढ़िया से 'कवना घर में सुतले पतोहिया'। निराला जी होली के इहे रंग देखि कहले होइहन-

www.bhojpurisahityangan.com

होली मची ठौर-ठौर
सभी बन्धक छूटे हैं।

एह छूट आ बंधन टूट में अश्लीलता नइखे, प्रेम के झलक आ नोंक-झोंक बा। बाकिर एही छूट के कुछ लोग नजायज फायदा उठा के रंग के बदरंग कर देला। पारंपरिक होली आ चइता में खूब सिंगार रस मिलेला, जे कहीं से अश्लील ना होखे। बाकिर आजु ओहि छूट के लाभ लेत अश्लीलता एह ढंग से परोसा रहल बा कि अश्लील देख के लजा जाता। कुछ लोग सलिलो के नाम पर का परोस रहल बा ओह खातिर अश्लील के डिक्शनरी देखे के पड़ेला।

राग रंग आ उत्सव के ऋतु बसंत मनो के बउरा देला। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी एकरा के मस्त महीना के संज्ञा देत आपन 'बसंत' कविता में कहले बानीं कि -

आइल मस्त महीना सजनी, धरती पर मुस्कान रे॥
झुकल आम के डाढ़ि बौर से, भीतर कोइली बोलल
साँझ समीरन बहल मस्त हो, बिरहिनि के मन डोलल
महुआ के डाढ़ी पर उतरल, हारिल लेइ जमात रे॥

पौराणिक कथा के अनुसार बसंत के कामदेव के पुत्र कहल गइल बा। कवि देव बसंत ऋतु के वर्णन करत कहले बाड़े कि रूप आ सौंदर्य के देवता कामदेव के घर पुत्रोत्पत्ति के समाचार मिलते प्रकृति झूम उठल, पेड़ नव पल्लव के पालना डाल देलस, फूल वस्त्र पहिरवलस आ पवन झूला झुलावे लागल आ कोयल गीत सुनाके बहलावे लागल। भगवान कृष्ण गीता में कहले बाड़ें कि ऋतुयन में हम बसंत हईं। बसंत प्रेम के पर्याय ह, काम आ सिंगार के सहाय्य ह। अमीर खुसरो के शब्दन में बसंत के निखार देखत बनेला -

सकल बन फूर रही सरसों
अम्बवा फूटे, टेसू-फूले,
कोयल बोले डार-डार,
और गोरी करत सिंगार।

बाकिर सभकर बसंत एक जस कहाँ होखेला। सुभद्रा कुमारी चौहान इहे बिचारत कहले बाड़ी 'वधु वसूधा पुलकित अंग-अंग/ है वीर

www.bhojpurisahityangan.com

देश में किन्तु कंत/ वीरों का कैसा हो बसंत।' ओइसहीं रोटी आ पेट खातिर पलायन के दंश झेल रहल युगल के मन में बसंत फुटे-फरे -फुलाये के पहिले मुरझा जाला। पेट के भूख के आग बसंत के झुलसा देला। फगुओ के रंग काटे दउड़ेला। हरियर पियर बधार नीक ना लागे। ओकरा इयाद आवेला भारतेन्दु के 'टूट टाट टपकत घर खटियो टूट, प्रिय की बांह उसिसवा लूट'।

साल में बारह महीना होला बाकी फागुन आ चइत हटा देल जाय त जिनिगी में कतना रंग-रास बाची, गंवई संस्कृति के सुगंध कतना बाची ई केकरो से छुपल नइखे। 'बाकी चइत के झकोर जनि माँगऽ' में लेखक बलभद्र फागुन आ चइत के विविधता आ उल्लास से त परिचय करावते बाड़न साथ हीं फगुआ, चइता के लय-ताल, धुन, गाँव के रीति-नीति, खेत-बधार के हाल, गँवई जिनिगी के चाल, आपस के बात-विचार, किसान आ मजूर के मनोभाव, किसान के दरद पर बड़ा खुल के आ बेवाकी से आपन बात रखले बाड़े जे गँवई माटी के साँच है। तनि लेखक के शब्द में किसान के पीर देखीं।

'जे देश-दुनिया के अन्न देला-आपन रंग में रंग देवे के कूबत राखेला-जे मौसम के मतलब बूझेला-एह सोगहग समाज के हालत आज ठीक नइखे। एह समाज के साथे क्रूर मजाक कइल जा रहल बा। ई बेवस्था एह समाज के हित के अनदेखा कर रहल बिया। आपन उपेक्षा कबले सही! ई हिस्सा खड़ा हो रहल बा। आपन हक अधिकार खातिर आवाज उठा रहल बा। फागुन के रंग आ चइत के झकोर बेकार ना जाई। धूर से गुलाब तक के हउवे ई सफर। गावे से ललकार तक के।'

प्रेम आ बिरह जस सुख आ दुख साथे चलेला आगे पीछे बाकी गाँव के माटी में रचल बसल मनई के याराना पीर से अधिका बा तवनो पर हार माने वाला जीव ना ह फागुन के रंग आ चइत के झकोर से जिनिगी के रंगे रचे के कोसिस से बाज ना आवे। एह में कवनो शक के गुंजाइश नइखे।

वसंत के कहानी कहला से ना ओरिआई त सार बाति कहत अतने कहब -

पीत सरसों, हरियर गेहूं, आहट बसंत के आ गइल
आमे मोजर, सेमर फूल, देखि धरती बउरा गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

पतझड़ भागल, कोंपल फुटल, जंगल गावे गीत
रंग गुलाल भरल बगिया, देखि मन अगरा गइल।

मंद पवन मन आग लगावे, चहुंओर मंगल गीत
कहीं फाग मृदंग संग बाजे, सुनी मन रंगा गइल।

बसंत दुआरी पर दस्तक दे रहल बा। मन ओकर आगाज़ नइखे महसूसत। मौसम के मिजाज गरमा गइल बा। बाग- बगइचा कटा गइल। जंगल- पहाड़ उधिया गइल। नदी- ताल- तलैया सूखा गइल। हिमालय दरकत बा। ग्लेशियर पिघलत बा। परिवेश विकास रथ के धूल-धुआं से भर गइल बा। प्रकृति से दूर जा रहल मनई कृत्रिमता के जाल में फँस गइल बा। लोक परंपरा से दूर जात मनई के करनी आज बसंत के राग रंग बदरंग कर देले बा। रूसल बसंत के मनावे के आई ? सांच बतावत ओकर गुण गावे के होई स्थिति के भयावहता के समझे खातिर। ना मानी मनई त कागजी आ आभासी बसंत निर्मित कर मन के बहलावे के होई। एही भाव के एगो रचना -

बसंत उदास आज, बदलत आपन रूप देख
उजड़त बाग बगीचा देखि, बसंतो खउरा गइल।

रोज ओला, रोज बारिश, मादक गंध धोआ गइल
राग-रंग अब ऊ ना रहल, मधुमास के खा गइल।

रूप लावण्य बसंत के, नइखे लउकत आज कहीं
रोमांस के रोमांच ना रहल, सेज के आस सेरा गइल।

किशोर के कुटिया बिरान, बसंत राह भूला गइल
सेज सजावे के ख्याल, मौसम देखि ओरा गइल।

ई देख बुझात नइखे, सांचहूं राग रंग से भरल बसंत राह भूला गइल

www.bhojpurisahityangan.com

बा।वुझाता कवनो वरियार अँटका में अँटक गइल बा बसंत। 'अँटका में परल बसन्त' के लेखक बलभद्र गाँव-घर, खेती-बारी, रीति-नीति के बदलत चाल संगे भागत बसन्त के रूप देखि, डिजिटल बसन्त के गाँवन में घुसत देख चिंतित नजर आ रहल बाड़ें। ऊ कहत बाडें कि आदमी के बदलत जीवन शैली में रूहचूह बसन्त कहीं भेंटाइयो जाता त मन उदास रहता। प्रकृति में बसन्त कम वेसी हेर फेर में लउक जाता बाकी आदमी के बसन्त त भागल जा रहल बा अँटका में। कारण बा बेरोजगारी, महँगाई, भ्रष्टाचार, तिकड़मवाजी के जवरदस्त मार। ई हम ना बलभद्र कह रहल बाड़ें जे देख रहल बाड़ें आदमी के माथ पर रखल समस्या के बोझा के। माथ भारी रहेला त कुछुवो नीक ना लागे आ रोकलो प माथे हाथ चलिए जाला। वाहरी खाद विया वले वधार हरियर पियर लउकतो बा त चिरई चुरंग, मधुमाखी, कउवा, कोइलर नदारद। ई साफ बता रहल बा कि प्राकृतिक वसन्त अँटका में परल जा रहल बा, बढ़ल जा रहल बा। बलभद्र के चिंता वाजिब बा तव त कह रहल बाड़े कि मॉल कल्चर पसर रहल बा। ई कल्चर हमनी के जीवन आ समाज में अन्हार बो रहल बा। मस्ती के नांव पर आत्महीनता, खोखलापन, बजारू बसन्त। आशावादी लेखक मन तबो साफ कह रहल बा कि बसन्त ठस्स ना होखे। मुई ना भले रूप बदले। चलल चल आवत बसन्त के बूझ के बचावे के संदेश देत एगो नया बसन्त के कामना करत बाड़े। असहूं कहल गइल बा धीरज धर रे मन 'कबहूं त अइहें बसंत ऋतु'। बाकिर धीरज हाथ प हाथ रख के ना धरे के होखी। कुछ करे के होखी प्राकृतिक परिवेश के बचावे खातिर। पर्यावरण आ जैवविविधता बांची त अँटकल बसंत के रास्ता मिली आ राग

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

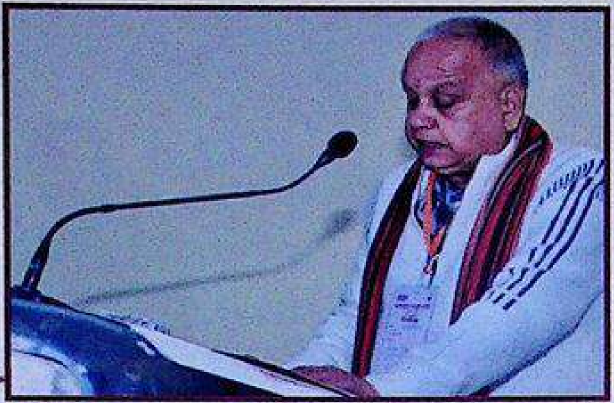

कनक किशोर

वन सेवा से सेवानिवृत्त हो राँची (झारखंड) में रह स्वतंत्र लेखन। भोजपुरी एवं हिन्दी में समान रूप से लेखन परन्तु भोजपुरी के प्रति विशेष झुकाव। साहित्य के विभिन्न विधाओं में लेखन के साथ 'जोहार भोजपुरिया माटी' का संपादन। भोजपुरी के विभिन्न विधाओं में करीब एक दर्जन और हिन्दी में चार काव्य संग्रह आ चुका है। साथ ही भोजपुरी में आलोचना, आत्म कथा, गद्य संकलन का समय-समय पर संपादन। इनके प्रबंध संपादन में चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' रचनावली, संस्मरण विशेषांक, शोध प्रबंध के साथ अनेकों काव्य संग्रह आ चुका है। आप अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के प्रवर समिति सदस्य हैं। भारत-नेपाल के विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित। हिन्दी/भोजपुरी के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित।

पत्राचार पता - बी/9, नेताजी नगर, रोड नंबर- 2, काँटा टोली, राँची - 834001 (झारखंड)

चलभाष - 9279200401

ईमेल - kkishorejfs@gmail.com

श्री नर्मदा प्रकाशन

साहित्य सेवा में समर्पित

ISBN 978-93-342-8254-2

Rs. 250.00

E-mail : shrinarmadaprakashan@gmail.com